बापूके पत्र — ४

मणिबहन पटेलके नाम

[१२–२–'२१ से १३–१–'४८]

संपादिका
मणिबहन पटेल
अनुवादक
रामनारायण चौधरी

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद–१४

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-१४

© नवजीवन ट्रस्ट, १९६०

पहली आवृत्ति ३०००

RANA BHUPAL
LIBRARY
31630

रु० १.५०

जुलाई, १९६०

प्रकाशकका निवेदन

राष्ट्रपिता गांधीजीने अपने संपर्कमें आनेवाले असंख्य लोगोंको असंख्य पत्र विविध विषयों पर लिखे हैं। व्यक्ति, समाज और राष्ट्रके निर्माणमें अुनका बहुत बड़ा महत्त्व है। अिस महत्त्वको ध्यानमें रखकर ही नवजीवन ट्रस्टने गांधीजीके पत्रोंके प्रकाशनका काम हाथमें लिया है। अभी तक हम 'बापूके पत्र – १ : आश्रमकी बहनोंको', 'बापूके पत्र – २ : सरदार वल्लभभाअीके नाम', 'बापूके पत्र – ३ : कुसुमबहन देसाअीके नाम' तथा 'बापूके पत्र मीराके नाम' — शीर्षकसे गांधीजीके चार पत्र-संग्रह प्रकाशित कर चुके हैं। प्रस्तुत पुस्तक अुनके पत्र-संग्रहकी पांचवी पुस्तक है। भविष्यमें हम जल्दी ही 'बापूके पत्र – ५ : कु० प्रेमाबहन कंटकके नाम' पुस्तक प्रकाशित करेंगे। अुसका गांधीजीके पत्र-संग्रहमें अपना अेक विशिष्ट स्थान है।

श्री मणिबहनके नाम लिखे गये अिन पत्रोंमें हम आदिसे अन्त तक अेक वात्सल्यपूर्ण पिताका हृदय धड़कता हुआ अनुभव कर सकते हैं। श्री मणिबहनने छोटी अुमरमें माताका आश्रय खो दिया था। और कुछ सामाजिक रूढ़ियों और पारिवारिक मर्यादाओंके कारण बहुत बड़ी अुमर तक वे पिताके प्रेमका भी अनुभव नहीं कर सकी थीं, अिन परिस्थितियोंमें पली हुअी श्री मणिबहनको गांधीजीने अपनी गोदमें लेकर पिता और माता दोनोंका स्थान संभाला और अुस कमीको पूरा किया तथा अुनके जीवन-निर्माणका काम अपने हाथमें लेकर खूब सावधानीसे अिस तरह अुन्हें तैयार किया कि अुनकी सारी शक्तियां राष्ट्रसेवाके कार्यमें प्रयुक्त हो सकें। यह निर्माण अुन्होंने किस प्रकार किया, अिसकी झांकी अिन पत्रोंमें बहुत अच्छी तरह देखनेको मिलती है। गांधीजीके जीवनका यह पहलू कितना

अधिक गुप्त रहा होगा। क्योंकि अिस पहलूका यथार्थ दर्शन तो अैसे निजी पत्रोंमें ही होता है। अिस दृष्टिसे यह पत्र-संग्रह अेक कीमती दस्तावेज है।

जिनके पास गांधीजीके पत्र हों अैसे दूसरे भाअी-बहनोंको भी यदि अिससे अपने पासके पत्र हमारे पास भेजनेकी प्रेरणा मिले, तो यह माला अधिक समृद्ध होगी। मूल पत्र सुरक्षित रूपमें वापस भेज दिये जायंगे।

आशा है अिस पत्र-संग्रहका भी अिससे पहलेकी पुस्तकोंकी तरह ही स्वागत किया जायगा।

१५–७–'६०

अिन पत्रोंके सम्बन्धमें

पू० बापूजीका अवसान होने पर नवजीवन ट्रस्टने सोचा कि अुनका साहित्य, अुनके लिखे हुअे पत्र आदि प्रकाशित करके लोगोंमें अुनके विचारोंका भरसक प्रचार किया जाय और लोगोंमें अिसके लिअे जो भूख है अुसका समाधान किया जाय। अिस विचारके अनुसार नवजीवन ट्रस्टने पू० बापूजीके पत्रोंकी मालामें तीन संग्रह प्रकाशित किये हैं। यह चौथा संग्रह है। बापूजी पत्रों द्वारा मनुष्यको किस प्रकार बनाते थे और अुससे जो काम लेना तय किया हो अुस कामके लिअे अुसे कैसे तैयार करते थे, यह संग्रह अुसका अेक नमूना है। ये पत्र जैसे मेरे जीवनके निर्माणमें मेरे लिअे अुपयोगी सिद्ध हुअे वैसे ही पाठकोंके लिअे भी होंगे, यह समझकर अिन्हें प्रकाशित करनेकी मुझे प्रेरणा हुअी है। अिनसे अनेक विषयोंके सम्बन्धमें पाठकोंको पू० बापूजीके विचार जाननेको मिलेंगे और कुछ न कुछ सीखनेको भी मिलेगा अैसा मेरा खयाल है।

सन् १९२० में मैं मैट्रिककी कक्षामें अध्ययन कर रही थी। परीक्षामें छह मास बाकी रहे थे। अितनेमें पू० बापूजीने विद्यार्थियोंसे स्कूल-कॉलेजोंका बहिष्कार करनेकी पुकार की। अिस पुकारके अनुसार सितम्बर १९२० में मैंने सरकारी स्कूल छोड़ दिया। सन् १९२१ के आरम्भसे अिस पत्र-संग्रहकी शुरुआत होती है। मेरे शाला-जीवनके अन्तके साथ ही शुरू हुआ यह पत्र-व्यवहार ठेठ बापूजीके जीवनका अेका-अेक अन्त हुआ अुसके थोड़े दिन पहले तक चला। जनवरी १९३० से सितम्बर १९४६ में जब पू० बापू दिल्ली रहने गये तब तक हमारा कोअी स्थायी घर नहीं था। फिर भी ये सब पत्र सुरक्षित रहे, यह अीश्वरकी कृपा ही कही जायगी।

मुझे बनानेमें पू० बापूजीने कितना परिश्रम किया है! मुझ पर उन्होंने कितना प्रेम बरसाया है! आज मुझमें जो भी अच्छे गुण या आदतें हैं वे सब मेरे जीवनके दो निर्माताओं—पू० बापूजी और पू० बापू—द्वारा मेरे लिअे किये गये परिश्रमके कारण है। उनके वात्सल्य-भरे परिश्रमके बावजूद मुझमें कोअी कमियां अथवा दोष रहे हों तो वे मेरी अशक्तिके कारण है। मेरा यह दुर्भाग्य है कि दो दो महापुरुषोंके प्रयत्नोंके बावजूद मैं अपनी कमजोरीके कारण अपने दोष दूर न कर सकी।

सितम्बर १९४९ में डॉक्टर लोग पू० बापूको अिलाजके लिअे आग्रह करके बम्बअी ले गये थे। पू० बापू वहा बिड़ला-भवनमें ठहरे थे। नरहरिभाअी वहा अुनकी कुशल पूछने आये थे। अुस समय अिन पत्रोंकी नकलोंका संग्रह मैंने अुनके हाथमें रखा। अुन्होंने अिन सब पत्रोंको पढ़ लिया और सुझाया कि पत्रोंमें जहा जरूरी हो वहा नीचे टिप्पणिया जोड दी जाय। मेरे लिअे यह नया ही काम था और मुझे शंका थी कि मैं अुसे कर सकूगी या नहीं। परन्तु अुन्होंने कहा कि अेकसाथ नहीं तो समय मिलने पर थोडा थोडा लिखते रहना। अुसके बाद अन्तमें मैं अेक बार देख लूगा।

१९४८ मे मैंने अिन सब पत्रोंको जमा करके नकल कराना शुरू किया। अुसके बाद श्री नरहरिभाअीके अुपरोक्त सुझावके अनुसार १९४९ में मैंने सम्पादनका काम शुरू किया। वह पूरा होने पर श्री नरहरिभाअीने अुन्हे देख लिया था। परन्तु अुन्हें अंतिम रूप देनेका काम किसी न किसी कारणसे टलता रहा। अन्तमें आज अुसे पूरा करके जनताके सामने रख सकी हू, और सिरका अेक बडा बोझा अुतर जानेकी निश्चितता अनुभव करती हू। अैसा मालूम होता है मानों आज जनताके अृणसे कुछ हद तक मैं मुक्त हुअी हू।

मेरी सतत आग्रहभरी मांग स्वीकार करके अपनी तन्दुरुस्ती ठीक न होने हुअे भी पू० बापूके जीवन-चरित्रके दो भाग—अगस्त

१९४२ तक लिखने और पू० वापूके नाम लिखे गये पू० वापूजीके पत्रोंका संग्रह तथा मेरे नाम लिखे गये पत्रोंका यह संग्रह देख लेनेके लिअे मैं श्री नरहरिभाअीकी अृणी हूं। अुनके आग्रह और प्रोत्साहनके कारण ही मैं अिन दो संग्रहोंके लिअे परिश्रम करनेका साहस कर सकी हूं।

भाअी मूलशंकर भट्टने अवकाश निकालकर भक्तिपूर्वक सभी पत्रोंकी सावधानीसे नकलें कर दीं, अिसके लिअे मैं अुनकी भी आभारी हूं।

मेरे भाअी चि० डाह्याभाअी तथा अुनके पुत्रके नाम लिखे गये पत्रोंका समावेश भी अिस संग्रहमें ही कर लिया गया है।

अन्तमें पाठकोंको समझनेमें परेशानी न हो, अिसके लिअे अेक स्पष्टता कर दूं। हम महात्माजीको वापूजी और अपने पिताको वापू कहते थे। अिसलिअे अिस संग्रहमें जहां 'वापूजी' हो वहां महात्माजी और जहां 'वापू' हो वहां हमारे पिताजीका अुल्लेख है, अैसा समझा जाय।*

नअी दिल्ली
२०–११–'५७

मणिबहन पटेल

* गुजराती संस्करणकी प्रस्तावना।

बापूके पत्र — ४

मणिबहन पटेलके नाम

[१२–२–'२१ से १३–१–'४८]

१

दिल्ली,
१२–२–'२१

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मुझे मिला। मैं बहुत प्रसन्न हुआ। तुम भाअी-बहन आध घंटा रोज कातो तो अिससे स्वराज्य नहीं मिलेगा। तुममें अुत्साह हो तो तुम जरूर चार घंटे रोज कातो। महावरेसे अच्छा कातना आ जायगा।

अभी श्री दास[1] वहां नहीं आ सकते। मुझे पत्र लिखा करो। आजकल क्या पढ़ती हो, यह बताना।

बापूके आशीर्वाद

पुनश्च: अभी तो मुझे बहुत भटकना पड़ता है। आज दिल्लीमें हूं। अभी पंजाब जाना है, बादमें लखनअू, वहांसे बेजवाड़ा। अिसलिअे पता नहीं अहमदाबाद कब आना होगा। बापूसे कहना कि कांग्रेसकी तैयारी[2] करें।

चि० मणिबहन,
ठि० भाअी वल्लभभाअी पटेल बैरिस्टर,
भद्र, अहमदाबाद

---

१. स्व० देशबन्धु दास।

२. अहमदाबादमें होनेवाले कांग्रेसके ३६ वें अधिवेशनकी।

२

बेजवाडा,
सोमवार
(४-४-'२१)

चि० मणि,

अभी समय सुबहके पाच बजे है। मछलीपट्टम ले जानेवाली मोटरका इतजार कर रहा हू।

रातको अेक बजे मैं अेलोरसे यहा आया। ये तीनो जगहें नक्शेमें देख लेना।

आते ही तुम्हारा पत्र मिला और मैंने पढा।

डॉक्टर कानूगाने[1] अच्छा काम किया है। डाह्याभाअी[2] पिकेटिंग करने जाता है, यह अच्छा है। अुसे मेरी बधाअी पहुचा देना।

चार घटे कातनेका नियम रखा, यह ठीक है। सूत मजबूत और अेकसा निकालनेका प्रयत्न करना। यह भी देखना कि रोज कितना निकलता है।

मेरा तो विश्वास दिन-दिन बढता जा रहा है कि स्वराज्य सूत पर निर्भर है।

मैं काममें व्यस्त रहा और भटकता रहा, अिसलिअे मैंने पेंसिलसे लिखा। परन्तु तुम्हे तो स्याही और देशी कलमसे ही लिखनेका अभ्यास रखना चाहिये।

---

१ स्व० बलवन्तराय कानूगा। अहमदाबादके प्रसिद्ध डॉक्टर। पू० बापूने १९३० में अपना अहमदाबादवाला मकान छोड दिया अुसके बाद जब भी वे अहमदाबाद आते तब डॉ० कानूगाके यहा ठहरते थे। खास-बाजारके शराबखाने पर पिकेटिंग करते हुअे पत्थर लगनेसे डॉ० कानूगाकी आखमें चोट पहुची थी।

२ मेरे भाअी।

बापूकी सेवा करना और तुम भाभी-बहनके बारेमें अुनकी चिन्ताको कम करना।

गुजराती दिन-प्रतिदिन सुधारना। ध्यानपूर्वक 'नवजीवन' पढ़नेवाले अपनी गुजराती अच्छी कर सकते हैं।

मैं मंगलवार १२ तारीखको अहमदाबाद पहुंचूंगा। बापूको खबर देना और कहना कि मुझे आशा है कि अिस बीच अुन्होंने खूब रुपया[1] जमाकर लिया होगा।

मोहनदासके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० बैरिस्टर वल्लभभाअी,
भद्र, अहमदाबाद

३

वम्बअी,
गुरुवार
(१६-६-'२१)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। मैंने काका (विट्ठलभाअी[2])को अुससे पहले ही कह दिया है कि हमें मिलना है। वे पूना जा रहे हैं। हम जरूर ही मिलेंगे। मिलनेके बाद जो होगा वह लिखूंगा। बम्बअीकी क्या गंदगी[3] तुमने मानी है, वह मुझे बताना। तुम निश्चिन्त रहना। मैं काकासे पूरी बातें करनेवाला हूं।

---

१. तिलक स्वराज्य कोषका।

२. स्व० माननीय विट्ठलभाअी पटेल। पू० बापूके बड़े भाअी।

३. अुस समय बम्बअीमें विदेशी कपड़ेकी बहुत बड़ी होली पू० बापूजीके हाथों की गअी थी। अुस सम्बन्धमें यह अफवाह सुनी गअी थी कि कपड़ेका ढेर बहुत बड़ा बतानेके लिअे नीचे देवदारके खोखे रख दिये गये थे।

तुम दोनों भाभी-बहन देशकार्यमें पूरी तरह लग जाना। और तुम्हारे पूरी तरह लग जानेका अर्थ यह है कि कातने और पीजनेका काम यहां तक जान लो कि अुसमें तुम्हें कोअी मात न दे सके। और सब काम क्षणिक हैं। यह काम हमेशाका है, अैसा मानना। हमारा सारा बल अिसीमें से आयेगा।

भाअी महादेव[1] कल बम्बअी आ गये हैं। कहा जायगा कि अुन्होंने चंदा खा लिया।

यहां बरसात अच्छी हो रही है।

कल लगभग ५५,००० रुपये घाटकोपरमें मिले हैं।

मैं पत्र लिखूं या न लिखूं, परन्तु तुम तो लिखती ही रहना।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन,
ठि० श्री वल्लभभाअी पटेल,
भद्र, अहमदाबाद

४

सोमवार
(११-७-'२१)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया। कपडे जलानेका हेतु तो यह है कि विदेशी कपडोंकी तरफ वैराग्यवृत्ति अधिक पैदा की जाय। ये कपडे गरीबोंको दिये जायं, अिस विचारमें भी मोह है। लाख-दो लाखके कपडे गरीबोंको गये तो क्या और न गये तो क्या? अितने दिन तक ये कपडे मगवाकर हमने हिन्दुस्तानको बडा नुकसान पहुंचाया है। मैं मानता हूं कि अब ये कपडे गरीबोंको देनेसे भी लाभ नहीं होगा। ये कपडे विदेश भेज देनेमें कुछ रहस्य है। फिर भी मैं सबकी राय लेता रहता हूं। अुसमें से जो सबको ठीक लगेगी वह मान लेंगे। अब भी शंका रहती हो तो पूछना।

१ स्व० महादेवभाअी हरिभाअी देसाअी, बापूजीके मंत्री। १५ अगस्त १९४२ को आगाखां महलके कारावासमें हृदयकी गति बन्द होनेसे अेकाअेक अुनका अवसान हुआ।

डाह्याभाओकी वानर-सेना अच्छा काम कर रही दीखती है। अेक वात वह याद रखे। लोगोंसे विनयपूर्वक अपनी वात कहे। जरा भी मजाक या ग्लानि (हंसी?) का भाव न रखे। शराव पीनेवाले पर दया रखी जाय।

काकासाहव[1] वढ़िया शिक्षक हैं, अिसमें तो शक ही नहीं। तुम सवको वे पसन्द आये, अिससे मैं खुश हुआ हूं।

काका (विट्ठलभाओ)से मुलाकात हुअी है; काफी वातचीत हुअी। अुन्होंने अपने जिला वोर्डमें ठीक प्रस्ताव पास करवाया है। मेरे पास आने-जानेवाले लोग कहते हैं कि काकाकी अभी चरखे पर श्रद्धा नहीं है। अितना ही नहीं, मंडलियोंमें चरखेके प्रति अरुचि प्रकट करते रहते हैं। फिर भी अुनसे मिलूंगा तव फिर वात करूंगा। मुझ पर पिछली मुलाकातका यह असर पड़ा था कि अुनके मनका वहुत कुछ समाधान हो गया है।

मोहनदासके आशीर्वाद

मणिवहन,
ठि० श्री वल्लभभाओ झवेरभाओ पटेल,
भद्र, अहमदावाद

५

वम्वअी,
शुक्रवार
(१५-७-'२१)

चि० मणि,

तुम्हारे पत्रका लम्वा अुत्तर देनेको जी करता है। परन्तु अुतना समय नहीं। अव रातके ११ वजेंगे। परन्तु सवालका जवाव दे दूं। जो कपड़ा व्यापारके लिअे रखा गया हो अुसे जलाने या दे देनेका सवाल ही नहीं है।

---

१. श्री दत्तात्रेय वालकृष्ण कालेलकर, आश्रमवासी। आजकल राज्यसभाके मनोनीत सदस्य।

पत्रिकाअें तो मैं अभी पढ़ भी नहीं सका। शराबवालोंकी मार हम जैसे जैसे सहन करेंगे वैसे वैसे हमारा काम बढ़ेगा।

बापूके आशीर्वाद

बहन मणि,
ठि० श्री वल्लभभाअी झवेरभाअी पटेल,
भद्र, अहमदाबाद

६

डिब्रूगढ़,
आसाम,
(२५–८–'२१)

चि० मणि,

तुम्हारा पिछला पत्र मैं अपने साथ लिये घूमता रहा हूं। काका (विट्ठलभाअी) को समझाना बड़ा मुश्किल काम मानता हूं। अुनकी अुम्रमें और अेक प्रकारकी लडाअीमें[2] फतह पानेकी मान्यता बन जानेके बाद अब अुन्हें नये प्रकारको ग्रहण करना कठिन मालूम होता है। हम धीरज रखकर अुनका मतभेद सहन करके अपने रास्ते चलते रहें, अिसके सिवा और कोअी अुपाय मुझे दिखाअी नहीं पड़ता।

वहां बहिष्कारका और अुत्पत्ति[3]का काम जोरसे हो रहा होगा।

आसाम अेक नया ही देश लगता है। यात्राका जानने लायक भाग 'नवजीवन' में दे चुका हूं। अिसलिअे यहां नहीं लिख रहा हूं। भाअी अिन्दुलाल[4] के साथ मैंने बात कर ली है। कुमुदबहन[5] के साथ मैं जो बर-

---

१ शराबबन्दी आन्दोलन सम्बन्धी पत्रिकाअें।

२ विधान-सभामें। अुस समय श्री विट्ठलभाअी बम्बअी विधान-सभाके सदस्य थे।

३ खादी-अुत्पत्ति।

४ श्री अिन्दुलाल याज्ञिक। गुजरात प्रान्तीय परिषदकी स्थापना हुअी अुस समय अुसके मंत्री थे। बादमें कांग्रेससे अलग हो गये।

५. स्व० कुमुदबहन, श्री अिन्दुलाल याज्ञिककी पत्नी।

कर बातें करना चाहता हूं और अुन्हें शान्ति देनेका प्रयत्न करना चाहता हूं। अिसका आधार अुनकी अिच्छा और मेरी फुरसत पर रहेगा। मैं अुधर अक्तूबर मासके पहले आ सकूंगा, अैसा नहीं लगता। तुम दोनों भाअी-बहन बापूकी खूब मदद करते होगे। अुन पर बहुत बोझा आ पड़ा है। परन्तु प्रभुकी अिच्छा होगी तो वे अुसे अुठा लेंगे।

बापूके आशीर्वाद

मेरे प्रवासका कार्यक्रम: ३१ से ३ तक चटगांव और बारीसाल; ४ से १२ तक कलकत्ता।

बहन मणिगौरी,
ठि० श्री वल्लभभाअी झवेरभाअी पटेल,
बैरिस्टर साहब,
भद्र, अहमदाबाद

७

मौनवार
कलकत्ता,
(८-९-'२१)

चि० मणि,

अभी अभी तुम्हारा पत्र मिला। मेरी मांग तो पहननेके ही कपड़े जलानेकी है। किसीके घर विलायती जाजमें वगैरा रखी हैं, कोचों पर विदेशी कपड़े चढ़े हैं। ये सब अधिकांश लोग नहीं देंगे। अिसलिअे वह मांग नहीं की। अैसी कोअी नअी चीज वे न लें तो अुतना काफी है। हमें पहननेके कपड़ोंकी ही मांग करनी है। मैं 'नवजीवन'में लिखूंगा।

पर्युषणमें अुपासरे जाना तय किया, यह अच्छा है। अिन बहनोंमें से कोअी अपने कपड़े देती हैं?

१२ तारीख तक तो कलकत्तेमें रहना है। बादमें क्या करना है यह सोचूंगा।

बेजवाडाकी साड़ियोंमें अब धोखा जरूर घुसा होगा[1]। अच्छा यही है कि तुम्हें हाथ ही न लगाया जाय।

कुमुदबहनको पत्र भेजा सो अच्छा किया। पत्र लिखते रहनेसे तुम्हें आश्वासन मिलेगा।

क्या बहुत करके महादेव आकर मुझसे मिल जायगे।

यहां भी तुम्हारी ही अम्रकी केवल खादी ही पहननेवाली खूब उत्साह रखनेवाली दो बहनें हैं। वे अभी देशबंधु दासकी बहनको उनके नारी-मंदिरमें मदद दे रही हैं।

मोहनदासके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० भाई वल्लभभाई पटेल बैरिस्टर,
भद्र, अहमदाबाद

८

रेलमें,
२५-१-'२१

चि० मणि,

तुम्हारे दो पत्र मेरे पास रखे हैं। तुम्हारी प्रवृत्ति ठीक चल रही है। अब तो थोड़े दिनमें वहां मिलेंगे, इसलिये अभी उसके बारेमें कुछ नहीं लिखता।

कुमुदबहनका हाल पढ़कर मुझे दुःख होता है। उनसे मैं जरूर मिलना चाहता हूं। ६ तारीखको मैं अहमदाबाद आ ही जाऊंगा। वहां कितने समय रहना होगा, यह तो नहीं जानता। परन्तु मैं वहां रहूं उस बीचमें कुमुदबहन आश्रममें आयें, तो मैं उनके साथ बातचीत कर सकूंगा। मैं उनकी सेवा करना और उन्हें शान्ति देना चाहता हूं। तुम उन्हें यह पत्र ही भेज दो तो काम चल सकता है।

१ बेजवाडाकी साड़ियोंमें मिलका सूत काममें लेनेकी जो शिकायत थी उसका उल्लेख है।

२ तारीखको मैं वम्बई पहुंचनेकी आशा रखता हूं। ४ तारीख तक तो वहां रहना ही है।

काका (विट्ठलभाई) का रास्ता अलग ही है। हमें उनकी चिन्ता नहीं करनी है। उन्हें जो ठीक लगे वह भले ही वे करें और कहें।

मोहनदासके आशीर्वाद

श्री मणिबहन,
ठि० वल्लभभाई बैरिस्टर,
भद्र, अहमदाबाद
(पू० बापूजीके हाथका पता)

९

नेपानी,
(अक्तूबर, १९२१)

चि० मणि,

तुम्हारा काम और देशके प्रति तुम्हारा प्रेम देखकर मुझे तो आश्चर्य हुआ है। दिवालीके दिनोंमें खूब चंदा अिकट्ठा करना।

बापूकी सेवा तो तुम करती ही होगी, यह मैं मान लेता हूं। तुम्हारे जवाबकी आशा मैं अिस बार तो नहीं रखता।

मोहनदासके आशीर्वाद

(पीछे)

अहमदाबादकी बहनोंका नाम लेकर मैंने पूनाकी बहनोंसे भिक्षा मांगी। अुन्होंने तो मुझ पर सोनेकी चूड़ियों, अंगूठियों, लौंगों और सोनेकी जंजीरोंकी भारी वर्षा कर दी। अहमदाबादकी बहनोंको मात कर दिया।

मोहनदास

श्री मणिबहन,
ठि० वल्लभभाई बैरिस्टर,
भद्र, अहमदाबाद

१०

सोमवार
(अप्रैल, १९२४)

चि० मणि,

भाभी मणिलाल[1]ने आज खबर दी कि तुम्हारा बुखार तो चला गया, मगर अशक्ति है और तुम डॉक्टर कानूगाके यहा चली गयी हो। मैं चाहता हू कि बापू और डॉक्टर अिजाजत दें तो यहा[2] आ जाओ। आराम और शान्ति दोनों मिलेंगे। तुममें तो शक्ति तुरन्त आ ही जायगी। अिसलिअे मैं तुमसे सेवा भी लूगा। मुझ पर तुम्हारे भार पडनेका भय तुम्हें या बापूको हरगिज नहीं होना चाहिये। बोझा पडेगा तो जमीन पर, और जमीन काफी मजबूत है। तुम्हारे जैसी सौ बालिकाओंका बोझा तो वह आसानीसे उठा सकेगी। दूसरा बोझा रमोअिया पर होगा। रेवाशंकरभाअी[3]ने रमोअिया भी यहाकी जमीनके जैसा ही मजबूत दिया है। तुम्हारे आनेसे मेरी चिन्ता दूर होगी, क्योंकि जो भी देशसेवक और देशसेविकाअें दूर बैठे बीमार पडते है वे मेरी चिन्तामें वृद्धि करते हैं। मेरी नजरके सामने वे सब हों तो अुस हद तक मेरी चिंता दूर हो जाय।

डाह्याभाअी तुम्हारे बदले चरखा अधिक समय चलाने ही होंगे।

बापूके आशीर्वाद

---

१ स्व० मणिलाल कोठारी। बहुत वर्ष तक गुजरात प्रान्तीय समितिके मन्त्री थे।

२ जुहू। यरवडा जेलसे फरवरी १९२४ में छूटनेके बाद कुछ मास आरामके लिअे पू० बापूजी जुहूमें रहे थे।

३ स्व० रेवाशंकर जगजीवन झवेरी। बम्बअीमें पू० बापूजी अुनके यहा मणिभवनमें अुतरते थे।

११

[यह पत्र मैं जुहूमें पू० बापूजीके पास थी वहां पू० बाने भेजा था। जुहूमें कुछ बीमारोंको अिकट्ठा करके पू० बापूजीने अपना छोटासा 'अस्पताल' बना लिया था।]

(सत्याग्रह आश्रम, साबरमती)
बुधवार
(अप्रैल, १९२४)

चि० मणि,

अब तुम्हारी तबीयत अच्छी होती जा रही है, अिससे आनन्द होता है। अिसी तरह राधा[1]की भी अच्छी होगी। अ० सौ० कीकीबहन[2]की भी अच्छी होगी। अब नहानेकी अिजाजत मिल गअी होगी। खुराक तुम सब क्या लेती हो सो बताना। राधाको अिंजेक्शन दिये जा रहे हैं? प्रभु[3] क्या खुराक खाता है?

कृष्णदास[4] मजेमें होगा। बापूजीको नियमपूर्वक तुम खुराक देती होगी। वे क्या खाते हैं? गं० स्व० जमनाबहन[5] वहां हमेशा आती होंगी। अुन्हें मेरे प्रणाम कहना। अिसी तरह जसवंतप्रसाद[6]को भी कहना। आज सुबह भाअी डाह्याभाअी आये थे। वे मजेमें हैं। ...को मैंने अेक पत्र लिखा है। अुसका अुत्तर नहीं आया। अुनकी तबीयत अच्छी होगी। देवदास[7] तो क्यों लिखने लगा?

---

१. बापूजीके भतीजे स्व० मगनलाल गांधीकी पुत्री।

२. आचार्य कृपालानीकी बहन।

३. बापूजीके भतीजे छगनलाल गांधीके पुत्र। दक्षिण अफ्रीकामें फिनिक्ससे पू० बापूजीके साथ थे।

४. श्री कृष्णदास गांधी। बापूजीके भतीजे छगनलाल गांधीके पुत्र।

५. दादाभाअी नवरोजीकी पौत्री श्री गोशीबहन कैप्टन और श्री पेरीनबहन कैप्टनके साथी कार्यकर्ता।

६. पू० बापूजीके सबसे छोटे पुत्र।

मुझे तुम सब बहुत याद आते रहते हो। परन्तु भाग्यमें साथ रहना नहीं लिखा होगा। मुझे पत्र लिखना। नहीं तो लिखवाना। पूज्य रेवाशंकर भाअी (झवेरी) की तबीयत अच्छी होगी।

यहा सब प्रसन्न है। वहाका हाल लिखना। अभी भाअी मगनलाल[1] दिल्ली गये है। अुनके घर पर भाअी छगनलाल[2] और चि० काशी[3] रहते हैं। चि० मनोज[4]को मेरा आशीर्वाद। वहा सबको यथायोग्य।

बापूके आशीर्वाद

१२

(जुहू,)
सोमवार
(५-५-'२४)

चि० बहन मणि,

तुम्हारे पत्रकी बाट कल अुसी तरह देखी, जैसे पपीहा बरसातकी देखता है। आज सुबह प्रार्थनाके बाद पहला पत्र तुम्हारा देखा। देवदासने कहा कि कल शामको मणिबहनका पत्र मिला।

भाअी लिखते हैं कि थकावट रहने पर भी वहा[5] तबीयत यहासे अधिक अच्छी है। अिसी तरह चलता रहे तो हम सब वहा आ जायगे। दुर्गाबहन[6]की तबीयत भी वहा ठिकाने आ जाय तो कितना अच्छा हो! अुनसे कहना कि मुझे पत्र लिखें। महादेवभाअीको मद्रास नहीं भेजा। वे वापस साबरमती पहुच गये हैं।

---

१ २ बापूजीके भतीजे।

३ श्री छगनलाल गाधीकी पत्नी।

४ स्व० मगनलाल गाधीकी पत्नी।

५ मैं बीमार थी अिसलिअे पहले मुझे अपने पास रखनेको जुहू बुलवाया। वहा फर्क न पडा तो हजीरा भेजा।

६ स्व० दुर्गाबहन, स्व० महादेवभाअीकी पत्नी।

यहांसे जो कुछ चाहिये वह मंगवा लेना। मांगे विना मां भी नहीं परोसती। सच तो यह है कि मां ही नहीं परोसती। दूसरोंको शिष्टता दिखानी पड़ती है। मांको शिष्टता दिखानेकी फुरसत ही नहीं होती। मां विवेककी मूर्ति है। तुम्हें मालूम है कि मैं अैसी 'मां' वननेकी शक्तिभर कोशिश कर रहा हूं।

राधा और कीकीवहन ठीक हैं, अैसा कहा जा सकता है। दोनोंका तापमान ९९° से अधिक नहीं चढ़ता।

शौकतअली[1] दो दिन रहकर गये।

वापूके आशीर्वाद

मणिवहन वल्लभभाअी पटेल,
खीमजी आंसर वीरजी सेनेटोरियम,
हजीरा, सूरत होकर

१३

(जुहू,)
(७-५-'२४)

चि० वहन मणि,

तुम्हारी डाक नियमपूर्वक आने लगी है। अिससे मुझे शान्ति रहती है। धीरज और आत्म-विश्वास रखना — दवासे भी विश्वास ज्यादा फायदा करेगा। प्रभुदासका पंचगनी जाना स्थगित कर दिया है। चि० राधा ठीक है। प्रार्थनामें शामको आती है। कीकीवहन जैसी थी वैसी ही हैं। चि० गिरधारी[2] कल अहमदावाद गया।

वापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन वल्लभभाअी पटेल,
हजीरा, सूरत होकर

---

१. मौलाना शौकतअली। अली भाअियोंमें वड़े।
२. आचार्य कृपालानीका भतीजा।

१४

(जुहू)
(११-५-'२४)
रविवार

चि० बहन मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। यह मेरा चौथा पत्र है। अेक पत्र और दो कार्ड मैं लिख चुका हूं। तुमने अेक ही कार्डकी पहुंच भेजी है।

आत्म-विश्वास सच्चा तब कहा जायगा जब वह निराशाके समय भी अचल रहे। सत्य और अहिंसामें मेरा विश्वास हो, तो मैं नाजुक समयमें भी अुनका पालन करूंगा। भले ही बुखार आये तो भी आशा हरगिज न छोड़ी जाय। हम गाफिल न रहें, परन्तु चिन्ता न करें। 'त्यागभूमि'[1]के बारेमें तुम्हारी आलोचना देखनेको मैं आतुर हो रहा हूं। मुझे पत्र लिखना हरगिज न भूलना। तुम्हारे वहां और कोअी आकर रह सके अैसी गुजाअिश है क्या? वहां वसुमतिबहन[2]को भेजनेका जी होता है।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन वल्लभभाअी पटेल,
हजीरा, सूरत होकर

१५

(जुहू,
१४-५-'२४)
बुधवार

चि० बहन मणि,

कल तुम्हारे दो पत्र साथ मिले। पता नहीं चलता कि मेरे पत्र तुम्हें मिलते हैं या नहीं। सप्ताहमें अेक लिखनेके बजाय मैंने लगभग हर तीसरे दिन लिखे हैं। बुखार जरूर जायगा। खाया जाता है और

१. स्त्रियोंके प्रश्नोंके बारेमें बापूजीके लेखोंका संग्रह। (प्रकाशक: नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४)
२. अेक आश्रमवासी।

दस्त ठीक आता है, अिसलिअे मैं मानता हूं कि न जानेका सवाल ही नहीं रहता। बीमारी पुरानी है, अिसलिअे देर हो रही है। 'त्यागमूर्ति' के बारेमें आलोचना लिखना।

बापूके आशीर्वाद

चि० बहन मणि बल्लभभाअी पटेल,
सेठ आसरका सेनिटोरियम,
हजीरा, सूरत होकर

१६

(जुहू,
१५–५–'२४)
वै० सु० १२

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम २० तारीख तक चली जाओ, यह तो बिलकुल ठीक नहीं होगा। वहां यह मास तो पूरा करना ही चाहिये। मेरा वहां आना तो हो ही कैसे सकता है? २९ तारीखको मुझे साबरमती जरूर पहुंचना है। वसुमतीबहन आना चाहेगी तो बताअूंगा। आशा कम है।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
सेठ आसरका आरोग्य-भवन,
हजीरा, सूरत होकर

१७

(जुहू,
१७–५–'२४)

चि० मणि,

अहमदाबाद पहुंचनेके बाद देखेंगे कि दवा ली जाय या नहीं। बिलकुल अच्छी हुअे बिना वहांसे हरगिज नहीं निकलना है। वसुमती-बहन कदाचित् सोमवारको चलकर वहां आयेंगी। भाअी . . . अुनका

सूरतका घर जानते हैं। वहा जाकर देखें। यदि वे आ गअी हों तो अुन्हें ले जाय। क्या वहा कोअी अलग मकान मिलते हैं? जहा तक हो सकेगा तार दिला दूगा। अभी वसुमतीबहन अिजेक्शन ले रही हैं। दुर्गाबहनका क्या हाल है? क्या वे पत्र लिखेंगी ही नही? मेरा हाथ कापता जरूर है।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन वल्लभभाअी पटेल,
आम्र सेठका आरोग्य-भवन,
हजीरा, सूरत होकर

१८

(जुहू,
२०–५–'२४)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र और कार्ड मिले। 'त्यागमूर्ति' के बारेमें पत्र पढ़कर मुझे तो बहुत ही हर्ष हुआ। यह निर्मलता और सयम-वृत्ति सग्रहणीय है। अिसकी चर्चा तो हम मिलेंगे तब करेंगे। अब तो बुखारको भी निकालकर चगी हो जाओ तो अीश्वरकी कृपा हो। वसुमतीबहन देवलाली जायेंगी, अिसलिअे वहा नही आयेंगी। वहासे तुरन्त जानेका विचार ही न किया जाय।

बापूके आशीर्वाद

चि० दुर्गा,

तुमने तो मुझे पत्र ही नही लिखा। वहा तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा रहता है?

बापू

चि० मणिबहन वल्लभभाअी पटेल,
हजीरा, सूरत होकर

१९

(जुहू,
ता० २६ मअी, १९२४)
सोमवार

चि० मणि,

तुम तो जल्दी ही पहुंच गअी[1]। मेरी तीव्र अिच्छा है कि तुम भाअी-वहन आश्रममें अलग कोठरी- लेकर रहो। छात्रालयमें खाओ, हाथसे बनाओ या वाके साथ अनुकूल पड़े तो वहां खाओ। जैसा तुम दोनोंको अनुकूल हो वैसा करो। वहांसे कॉलेजमें जा सकते हैं।

वापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,
वल्लभभाअी बैरिस्टर,
अहमदावाद

२०

(अहमदावाद,
२६–९–'२४)

चि० मणि,

वाह, कल तुम सब आये और चले गये[2]। अब सन्देश भेजती हो! बीमारको जितनी वार चक्कर लगाना हो लगा सकता है। अुसे वचन नहीं बांधता। अिसलिअे न आनेके लिअे माफी है। और आनेका विचार हो तब छूट भी है। मुझे तो अेक ही काम है। किसी तरह अच्छी हो जाओ।

वापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,
खमासा चौकी,
अहमदावाद

---

१. मैं पू० वापूजीसे पहले अहमदावाद आ गअी थी।

२. पू० वापूजीसे मिलने साबरमती आश्रममें गये थे परन्तु वे सो गये थे, अिसलिअे मिले बिना वापस चले आये थे।

२१

(दिल्ली,
२६-९-'२४)

चि० मणि,

मेरे अुपवाससे[1] बिलकुल घबरानेकी जरूरत नहीं। शक्ति अभी खूब है। २१ दिन निर्विघ्न पार हो जायगे, अैसा मैं मानता हू। डॉक्टरोंकी भी यही राय है। अपनी तबीयत खूब सभालना। घूमनेका महावरा खूब रखना। मुझे पत्र लिखना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० वल्लभभाअी बैरिस्टर,
अहमदाबाद

२२

दिल्ली,
२४-१०-'२४

चि० मणिबहन तथा डाह्याभाअी,

अिस साल तुम्हें अपने शुभाशीष[2] देने वहा मौजूद नहीं रहूगी, परन्तु अिस पत्र द्वारा और अपने मनसे तो तुम्हें अपने शुभाशीष दे ही रही हू। तुम्हारे लिअे भी यही चाहती हू कि तुम्हारी सकल शुभ-कामनाअें सफल हो। जैसे हो अुससे अधिक तदुरुस्त रहो और पढाअी पूरी करके देशके सच्चे सेवक बनो। बापूजीकी तबीयत दिन-दिन सुधरती जा रही है। यह पत्र मिलेगा अुस दिन तो तुम दोनो भलेचगे

१ पू० बापूजीने हिन्दू-मुसलमानोंकी अेकताके सिलसिलेमें ता० १७-९-'२४ से ८-१०-'२४ तक २१ दिनके अुपवास किये थे।

२ नये वर्षके लिअे।

और स्वस्थ होगे ही, अैसी आशा रखती हूं। वापूजी भी तुम्हें याद करते हैं और तुम दोनोंके लिअे अुनके शुभाशीप हैं ही।

शुभेच्छु वाके शुभाशीप

चि० मणिवहन,
ठि० वल्लभभाअी वैरिस्टर,
खमासा चौकी,
अहमदावाद

२३

(दिल्ली,)
का० सु० २
(१०–११–'२४)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। अधिक वार लिखो तो वहुत अच्छा। वापूको आज लिखा है। चिन्ता छोड़ देनेको कहा है।

तुम फिर हजीरा जानेका विचार नहीं करोगी? पास[1] होनेके लिअे वधाअी चाहिये क्या? चाहिये तो समझ लेना। डाह्याभाअी अेक विपयमें फेल हो गये। कोअी वात नहीं। फेल होनेका अर्थ है अुस विपयमें अधिक प्रवीण होना। फेल होनेवाले विद्यार्थी अकसर निराश हो जाते हैं। यह भूल है। जो आलसी हों या जिनकी नजर नौकरी पर हो वही निराश हो सकते हैं। अभ्यासीके लिअे तो असफलता अधिक प्रयत्नका सुअवसर होती है।

वापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,
ठि० वल्लभभाअी पटेल,
खमासा चौकी,
अहमदावाद

---

१. गुजरात विद्यापीठकी स्नातक-परीक्षा।

२४

(कलकत्ता,)
वै० वदी ६,
गुरुवार
(१४-५-'२५)

चि० मणि,

तुम्हारा लम्बा पत्र मिला। मैं खुश हुआ। औरतोंमें काम करना बहुत मुश्किल जरूर है। फिर भी धीरजसे जो हो सके वह कार्य किया जाय। डाह्याभाजी आबू अथवा नवी बन्दर गये ही होंगे। चूडिया[1] मेरे ध्यानमें अवश्य है। मैं भूलूगा नही। वे ढाकामें मिलती है। और वहा मुझे तीन दिनमें पहुचना है। बापू कही हवाखोरीके लिजे जानेवाले है?

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० वल्लभभाओी पटेल बैरिस्टर,
अहमदाबाद

२५

(शान्ति निकेतन,
३१-५-'२५)
जे० सु० ८

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। लम्बा पत्र लिखनेका लोभ करने जाऊ तो शायद पत्र लिखा ही न जाय, अिसलिअे जितना ही लिखकर सतोष कर लेता हू। तुम्हे चूडिया तो कभीकी मिल गअी होगी। वे तो कलकत्तेसे ही भेजी है। दूसरी मैंने ढाकेमें खरीदी है वे अभी मेरे साथ है। वे तो जब मैं आअूगा तभी तुम देखोगी। चि० डाह्या-

१ शखकी चूडिया, जो बगालकी विशेषता मानी जाती है, मैंने बापूजीसे मगवाओी थी।

भाओके बारेमें लम्बा जवाब महादेवने लिखा होगा। अुन्हें कमाना हो तो भले ही कमायें। अुनकी तबीयत अच्छी हो गअी है, यह जानकर खुशी हुअी। चि० यशोदा[1] से मुझे पत्र लिखनेको कहना। बापूकी खूब सेवा करना और अुन पर जो बोझ है अुसमें जितना भाग बटाया जा सके अुतना तुम तीनों बटाना। मुझे बंगालमें अेक मास तो बिताना ही होगा।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० वल्लभभाओ पटेल बैरिस्टर,
खमासा चौकी,
अहमदाबाद

२६

जेठ वदी ६,
शुक्रवार
(१२-६-'२५)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया है। आज तो मैं जहाजमें हूं। चूड़ियां कलकत्तेमें हैं। वहां १८ तारीखको पहुंचना है। वहां पहुंचकर थैलीमें बंद करके पार्सलसे भेज दूंगा। परन्तु देवदास आश्रममें न आया हो तो भी जांच की जाय। अुसके नामकी थैली जरूर होगी। अुस पर कब्जा कर लिया जाय।

डाह्याभाओने खेतीका काम पसन्द किया था। अुस परसे मैंने यह सलाह दी। परन्तु अुनका मन विदेश जानेका ही हो तो मैं रोकना नहीं चाहूंगा। विदेश जानेमें मुझे बड़ी आपत्ति यह है कि किसीसे रुपया मांगना पड़ सकता है। भले ही कोओ अुत्साहसे रुपया दे तो भी जहां तक हो सके हम न लें। यह आदर्श है। अुस पर टिके रहनेकी

१. स्व० यशोदा। डाह्याभाओकी पत्नी।

हमारी शक्ति न हो तो किसीसे मदद लेकर भी जानेमें बाधा नहीं है। मुझे वहां आनेमें समय लगेगा। अभी १६ जुलाई तक बंगालमें हूं। डाह्याभाईको यहां आना हो तो आकर बात कर जाय अथवा आश्रममें आजू तब करनी हो तो उस समय कर ले। उन्हें किसी भी तरह दुःखी न किया जाय। मैं उनकी इच्छाके अनुकूल होना चाहता हूं। मैं तो धीरे धीरे मार्गदर्शन करना चाहता हूं। तीन रास्ते हैं:

१ खानगी नौकरी कर ली जाय।

२ खेती की जाय।

३ अमरीका जाकर अधिक सीखा जाय।

इनमें से जो उनकी इच्छा हो सो करें। उसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं। चौथा रास्ता राष्ट्रकी सेवाका है। रुपया लेकर राष्ट्रकी सेवा करना उन्हें पसन्द नहीं, इसलिये मैंने उस रास्तेको नहीं गिनाया। उन्हें वैद्यक सीखनेका शौक है? हो तो यहां राष्ट्रीय कॉलेज है, और दिल्लीमें भी है। डाह्याभाई यह न जानते हों तो कह देना। यहां (कलकत्ते) का कॉलेज अच्छा माना जाता है। उसमें अध्ययन करना हो तो कर सकते हैं।

मेरी तबीयत अच्छी रहती है। बीचमें जरा सरदी हो गई थी। और तो कुछ भी नहीं था। हर जगह लोग काफी आराम देते हैं।

. . . को नियमपूर्वक पत्र लिखती रहना। इससे उसे संतोष रहता है। प्रेमका भूखा है।

बापूकी सेवा खूब करना। जब मा मर जाती है और बाहरकी बहुत झंझटें होती हैं तब यदि बच्चे सेवावृत्तिवाले हों तो वे बापको उसका सब दुःख भुला देते हैं। यह मैं अपने पिताके आज्ञाकारी पुत्रके नाते अपना अनुभव तुम भाई-बहनको बता रहा हूं। जिससे बच्चोंका कितना कल्याण होता है, उसका साक्षी भी मैं हूं। मा-बापको परमेश्वरकी तरह पूजनेका फल मैं प्रतिक्षण भोग रहा हूं। यह सब तुम दोनोंको लिख रहा हूं, क्योंकि मैं जानता हूं कि बापू पर बड़ी जिम्मेदारी है। मैं तो उसमें कोई भाग नहीं ले सकता। पत्र लिखने तकका समय भी नहीं निकालता। इसलिये अपनी जिम्मेदारी भी तुम पर डाल रहा हूं।

स्वास्थ्यको खूब संभालना। अभ्यास पूर्ण करनेमें समय जाय तो अुसकी चिन्ता न रखना। महादेव कहते थे कि तुम दोनों भाअी-बहनके अंग्रेजी शब्दोंके हिज्जे बहुत कच्चे हैं। यह सुधार कर लेना। जो भी सीखें वह ठीक ही सीखें। जहां भी शंका हो, शब्दकोष खोलें। और कुछ करनेकी जरूरत नहीं रहती।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० वल्लभभाअी बैरिस्टर,
खमासा चौकी,
अहमदाबाद

२७

(कालीघाट,
कलकत्ता,
२९–६–'२५)
सोमवार

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। पिताकी सेवा करनेके अनेक प्रसंग ढूंढ़ना। वे ढूंढ़ने पड़ते ही नहीं। फिर भी तुम लिखती हो सो समझ लिया। डाह्याभाअी 'नवजीवन' में जाते ही हैं तो चित्त लगाकर काम करें। स्वामी[1] की आज्ञा माननेमें बहुत लाभ है। वह सुन्दर तालीम है। भले मजदूरीका ही काम सौंपें तो अुसे भी दिल लगाकर करें। मैं कभी न कभी थोड़े वक्तके लिअे आ जाअूंगा, परन्तु समय तो अीश्वर

---

१. स्वामी आनंद। पू० बापूजीके निकटके साथी, 'नवजीवन' के आरंभमें अुन्होंने अुसमें खूब काम किया था। अुसके विकासमें अुनका बड़ा हाथ रहा है।

ही जाने। बापूकी तबीयतके समाचार मुझे देती रहो। बापूने अंग्रेजी हिज्जे कच्चे होनेसे तुम्हारे भी वैसे ही रहने चाहिये, जैसा कोओी नियम है क्या? बापके गुणोंका अनुकरण होना है, दोषोंका हरगिज नहीं।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
डॉ० वल्लभभाओी पटेल बैरिस्टर,
खमासा चौकी,
अहमदाबाद

२८

(कालीघाट,
कलकत्ता,
१६–७–'२५)
गुरुवार

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हें दूसरी चूड़ियोंकी अभी जरूरत हो तो मुझे लिखना। डाकसे भेज दूंगा। डाह्याभाओी कलकत्तेके राष्ट्रीय मेडिकल कॉलेजमें पढ़ेंगे? वह अच्छा चल रहा दीखता है। अथवा डाह्याभाओीकी हार्दिक अिच्छा क्या है? मैं अितना काममें फंसा हूं कि लम्बे पत्र लिखे ही नहीं जा सकते।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० वल्लभभाओी बैरिस्टर,
खमासा चौकी,
अहमदाबाद

२९

(मुर्शिदावाद जिला,
६-८-'२५)
श्रावण वदी २

चि० मणि,

तुम्हारा और डाह्याभाअीका पत्र मुझे मिल गया था। डाह्याभाअीके पत्रका अुत्तर तुरंत ही दे देनेको मैंने महादेवसे कह दिया था। वह मिल गया होगा। डाह्याभाअीको जो सवाल पूछा था अुसका अुत्तर ही अुन्होंने नहीं दिया। डाह्याभाअीको सर्जरी सीखनी हो तो यहां तथा कलकत्तामें, दोनों जगह पूरे साधन हैं। अुन कॉलेजोंका सरकारके साथ कोअी सम्बन्ध नही है।

तुम्हें मणिलाल (कोठारी) ने १२ चूड़ियां भेजी हैं, अिसलिअे अभी तो तुम्हें अधिककी जरूरत नहीं रहेगी। परन्तु यदि ये चूड़ियां बहुत टूटें तो महंगी पड़ेंगी, यह समझ लेना। अिससे तो चांदीकी अथवा सूतकी गूंथी हुअी सस्ती पड़ेंगी। वे अैसी गूंथी जा सकती हैं कि मोटी होती हैं, मजबूत होती हैं और हमेशा धोअी जा सकती हैं। परन्तु यह विचार हम मिलेंगे तब करेंगे। तब तकके लिअे तो यह संग्रह काफी है।

मेरा वहां आना तो जब होगा तब होगा। शायद अेक दो दिनके लिअे अबतूबरमें आ जाअूं।

बाअिसिकल ली है तो अब अुस पर कसरत भी करना।

आज हम मुर्शिदाबाद जिलेमें है। मणिलाल (कोठारी) यहीं हैं।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० वल्लभभाअी झवेरभाअी पटेल बैरिस्टर,
खमासा चौकी,
अहमदाबाद

३०

श्रावण बदी अमावस,
बुधवार
१९–८–'२५

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं नहीं चाहता कि तुम चूड़ियोंके बिना रहो। मेरी सलाह तो चांदीकी चूड़ियां पहननेकी है। केवल सोनामखी तो ठीक नहीं लगती। परन्तु सबको पहननेमें कोअी हर्ज नहीं है। मैंने तो देख लिया कि यह सस्ती चीज नहीं है। डाह्याभाअीके बारेमें जवाब लिख चुका हूं। कुल मिलाकर मेरी नजर तिब्बिया कॉलेज[1] पर टिकती है। परन्तु अब तो मैं वहां ५ सितम्बरको पहुंचनेकी आशा रखता हूं। अिसलिअे हम मिलकर निश्चय करेंगे।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० वल्लभभाअी बैरिस्टर,
‑‑‑ना चौकी,
अहमदाबाद

---

१. हकीम अजमलखां साहब द्वारा दिल्लीमें स्थापित यूनानी पद्धतिका कॉलेज।

३१

(वांकीपुर,
२६–९–'२५)
शनिवार

चि० मणि,

यह रहा देवधरका तार[1]। मेरा खयाल है कि अिस वीच प्रतीक्षा की जाय। परन्तु अिस वीच यदि वम्बअीके सेवासदनमें रहना हो तो प्रबंध कर दूं। अथवा वर्धामें जो कन्या पाठशाला है, अुसमें काम करनेकी अिच्छा हो तो वह करो। जमनालालजी कलकत्तेकी पाठशालाको जानते हैं। अुसके लिअे वे अिनकार करते हैं। परन्तु वर्धाकी कन्या पाठशालामें अितजाम कर देनेको कहते हैं। वर्धामें मराठी ही है। और वहां तो घर जैसा है, अिसलिअे पहला अनुभव वहां लिया जाय तो ठीक ही है।

अब जो अिच्छा हो मुझे बताओ।

मुझे अुत्तर पटनाके पते पर लिखना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० वल्लभभाअी बैरिस्टर,
खमासा चौकी,
अहमदाबाद

---

१. मुझे अनुभव लेने और काम करनेके लिअे कहां रहना चाहिये अिसकी अिस पत्रमें चर्चा है। श्री देवधरका तार था कि वे अपनी देख-रेखमें चलनेवाले पूनाके सेवासदनमें मुझे दिसम्बरमें भरती कर सकेंगे।

३२

(कोटडा,
कच्छ,
२५-१०-'२५)
सोमवार

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे जल्द जानेकी बात भी सुनी। अब तो थोड़े ही दिनोंमें वहां आना है, गिलेंगे मिलेंगे सब बातें करेंगे। हाथ बिल्कुल अच्छा हो गया होगा। डाह्याभाओके[1] साथ अेक बार लंबी बातचीत हुआी है। फिर आजकलमें करूंगा। वहां (अहमदाबाद) पहुंचनेसे पहले समझ लूंगा। तुम्हारे लिये मैंने तो निश्चय कर ही लिया है।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० वल्लभभाओ बैरिस्टर,
खमासा चौकी,
अहमदाबाद

३३

(सत्याग्रहाश्रम, साबरमती,
७-१२-'२५)
सोमवार

चि० मणि,

तुम्हारे पत्र मिले हैं। तुम्हारा सारा कार्यक्रम आ गया है। वहां सेवासदनमें सब कुछ नया लगता है, यह तो मैं जानता ही था। फिर भी वहांका नियम, वहांकी पद्धति, वहांका अुत्साह, वहांकी प्रामाणिकता वगैरा आकर्षित करनेवाली है। फिर, जिसके बराबर अन्य कोओ जीवित संस्था शायद ही कहीं होगी। हमें अुसकी पद्धति वगैराको हमारी अपनी पसन्दके कार्यमें दाखिल करना है। हमें तो गुणग्राही

---

१ डाह्याभाओ पू० बापूजीके साथ कच्छके दौरेमें थे।

वनना है। हमें जितना पसन्द हो अुतना ले लें। विरोधी मतवाले समाजमें भी हमें सहिष्णुतापूर्वक रहना तो आना ही चाहिये न?

तुम्हारी तवीयत अच्छी रहती होगी। मेरी चिन्ता न करना। मुझमें शक्ति आती जा रही है। आज वम्बअी जा रहा हूं। वम्बअी अेक दिन रहकर वहांसे वर्धा जाअूंगा। वर्धा नियमित रूपमें पत्र लिखना। वहांके अनुभवोंकी डायरी रखो तो अच्छा हो।

डाह्याभाअी अभी तो विट्ठलभाअीके आग्रहसे अुनके पास[1] जायंगे। दो चार दिनमें वहां जायंगे। फिर अुनके साथ महासभा (कांग्रेसमें) में आयेंगे।

तुम्हारे लिअे तो जब तक चाहो वहीं रहना अच्छा है। मनमें अुठनेवाली सभी तरंगें बताना।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन पटेल,
ठि० नेवासदन,
पूना सिटी

३४

वर्धा,
शुक्रवार
(१२-१२-'२५)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। वहांका काम पूरा करनेके बाद वम्बअी रहना हो तो भले ही रहो, नहीं तो तुरन्त यहां आ जाओ। ज्यादातर तो यहां लम्बी छुट्टियां नहीं होतीं। अिसलिअे कन्या पाठशालामें तुरंत काम मिल जायगा। साथ ही जमनालालजी[2] की लड़की कमला और मदालसाको भी तुम्हीं पढ़ाओ, यह निश्चय किया है। अभी तो जानकी-बहनके साथ ही रहनेका निश्चय रखना। तुम आओगी तबसे तुम्हारा

---

१. विट्ठलभाअी अुस समय केन्द्रीय विधान-सभाके अध्यक्ष थे। अुन्होंने डाह्याभाअीको अपने पास रहनेको दिल्ली बुलाया था।

२. स्व० जमनालालजी बजाज। मध्यप्रदेशके गांधीजीके मुख्य साथी, चरखा-संघके अध्यक्ष, कांग्रेसके खजानची १९२१-४२।

वेतन ५० रुपये प्रति माह लिखा जायगा। अगलिजे जब आना हो आ जाओ। कांग्रेसमें जानेकी अिच्छा हो जाय तो यहांसे मेरे साथ अथवा बाला बालाको कानपुर चली जाना। मुझे २३ तारीखको कानपुर पहुंचना है। पहली जनवरीको तुम्हें यहां पहुंच जाना चाहिये।

मेरा वजन[1] घट गया था। वह ९ पौण्ड वापस बढ़ गया है। अब ६ बाकी रहा।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन वल्लभभाअी पटेल,
सेवासदन, सदाशिव पेठ,
पूना सिटी

३५

वर्धा,
माघ वदी अमावस,
(१६-१२-'२५)

चि० मणि,

मेरे पत्र मिले होंगे। यदि अहमदाबाद जानेकी जरूरत ही लगे तो चली जाना। सिर्फ अितना याद रखना कि यहां पहली जनवरीको तो काम[2] पर लग ही जाना चाहिये। अब मिलनेका मोह कम रखा जाय, अिसीमें समझदारी मालूम होती है।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन वल्लभभाअी पटेल,
सेवासदन,
सदाशिव पेठ,
पूना सिटी

---

१ साबरमती आश्रममें बालकोंके व्यवहारमें मलिनता पाअी गअी। अिसके लिअे प्रायश्चित्त-स्वरूप पू० बापूजीने २४-११-'२५ से १-१२-'२५ तक सात दिनके अुपवास किये थे। अुनसे घटा हुआ वजन।

२ वर्धाकी कन्या पाठशालामें।

३६

(सत्याग्रहाश्रम, साबरमती,
जनवरी, १९२६)

चि० मणि,

तुम्हारे वहां (वर्धा) पहुंच जानेका समाचार जमनालालजीने लिखा है। मुझे नियमपूर्वक पत्र लिखना। कमला[1] और मदालसा[2]को खूब संभालना। वैसे कक्षाका तो कहना ही क्या? देवधरको कृतज्ञताका पत्र लिखा था क्या? न लिखा हो तो लिखना, मराठीमें।

बापूके आशीर्वाद

...यहां आया है। मैं आया अुसी दिन। नन्दूबहन[3]के पास गया था। अुन्होंने खूब धीरज[4] दिखाया है।

श्रीमती मणिबहन,
ठि० सेठ जमनालालजी,
वर्धा (सी० पी०)

---

१. स्व० जमनालालजी बजाजकी लड़कियां।

२. स्व० विजयागौरी कानूगा। अहमदाबादके प्रसिद्ध स्व० डॉ० कानूगाकी पत्नी।

३. श्री नंदूबहन कानूगाका छोटा बारह वर्षका पुत्र अेकाअेक गुजर गया, जिसका अुन्हें बड़ा आघात लगा था।

३७

आश्रम,
(साबरमती)
बुधवार
(६-१-'२६)

चि० मणि,

अेक पत्र मैंने विनोबा[1] के पत्रमें तुम्हें भेजा था। वह तो काहेको मिला होगा? क्योंकि विनोबा तो यहां है। तुम्हारा पत्र कल मिला। चि० कमलाको जो पसन्द हो वह शिक्षा दी जाय। अेक दो हिन्दी पुस्तकें ली जाय और अुन्हें पढ़वाया जाय। कमलाका अंकगणित बहुत कच्चा है, वह सिखाया जाय। वह गुजराती समझ लेती है। और भी जो विषय अुसे पसन्द हों वे सिखाये जाय। रामायणमें से थोड़ा भाग साथ पढ़ो तो भी ठीक है। मुख्य बात तो कमलामें अध्ययनका रस पैदा करनेकी है। मराठी लिखना-पढ़ना जरा ज्यादा जान लेना। नित्य घूमने जाना और सब कुछ नियमपूर्वक करना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० सेठ जमनालालजी,
वर्धा (सी० पी०)

---

१ आचार्य विनोबा भावे। आश्रमवासी। १९४०में हमारे राष्ट्रकी सम्मतिके बिना हिन्दुस्तानको विश्वयुद्धमें शामिल कर देनेके विरुद्ध व्यक्तिगत सविनय कानून भंग शुरू किया गया, तब बापूजीने अुन्हें प्रथम सत्याग्रही चुनकर सम्मानित किया था। बापूजीके गुजरनेके बाद भूदान-आन्दोलनके प्रणेता।

(सत्याग्रहाश्रम, साबरमती,
११-१-'२६)
सोमवार

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मुझे सब समाचार देता है। भाओ देवधरके नामका पत्र अच्छा है। अुन्हें अच्छा लगेगा।

वहां सब नया है, अिसलिअे जरा घबराहट होती है। परन्तु अिस तरह कायर नहीं बनना चाहिये। कमला जितनी बढ़ सकती है अुतना अुसे बढ़ाया जाय। धीरे धीरे ठिकाने आयेगी। अुसे बातोंमें लगाया जाय। घूमने निकले तो घूमने ले जाओ। अुसे प्रेमसे जीता जाय।

मराठी लिखने और पढ़ानेकी आदत तुम्हें नहीं है। दोनों अभ्याससे आयेंगी। वहां मराठी है, यह तो हम जानते ही थे। हिन्दी घर पर पढ़कर सीख लो। वहां किसीकी मददकी जरूरत हो तो लेना।

खादीकी बात दूसरोंको धीरेसे समझाओ जाय और वे जितना मानें अुतनेको गनीमत समझा जाय।

अर्थात् प्रत्येक वस्तु निष्काम वृत्तिसे की जाय। हम प्रयत्नके मालिक हैं, फलके नहीं। मेहनत करके संपूर्ण सन्तोष मानें। अुसमें कभी न हारें। अन्तमें तो यहां काम करनेका समय आयेगा ही।

मैं यहां रहूं अुसी समय तुम्हें दूर रहना है, अिसका खेद न मानना। पत्र द्वारा तो मिलेंगे ही।

अपना स्वास्थ्य संभालना। और संभालनेके लिअे मनको बिलकुल प्रफुल्लित रखना।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन,
ठि० सेठ जमनालालजी,
वर्धा (सी० पी०)

३९

(सत्याग्रहाश्रम,
साबरमती,
३–२–'२६)
बुधवार

चि० मणि,

देवदास तो यहा नही है। वह अभी तक देवलालीमें ही है। मेरी तबीयत अब अच्छी है। कमजोरी है, वह मिट जायगी। अब वहा जी लग गया होगा। कमला जितनी आगे चले उतनी चलाना। चिन्ता बिलकुल न करना। स्वास्थ्य अच्छा रहता होगा। घूमने हमेशा जाना। गगूबाअी[1] जो आश्रम (वर्धा) में है शायद चली जायगी। कमला (बजाज) के विवाहके समय यदि सभव हो तो यहा आना। मुझे नियमित पत्र लिखना।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन,
ठि० सेठ जमनालालजी,
वर्धा (बी० अेन० रेलवे)

४०

(सत्याग्रहाश्रम,
साबरमती,
१५–२–'२६)
सोमवार

चि० मणि,

कार्ड मिला। डाकका वक्त है। यदि तुम दोनों[2] किसी निश्चय पर पहुचे होओ तो उसके अनुसार करना। यदि न पहुचे होओ तो हम सब मिलकर निर्णय करेंगे। मैं यहा बैठकर नहीं कर सकता। अभी

१ उस समय वर्धा आश्रममें रहनेवाली अेक बहन।
२ श्री जमनालालजी तथा मैं।

आओ या जमनालालजीके साथ, अिसका निर्णय तो वहांके कर्तव्यका विचार करके तुम्हींको करना है।

वापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
ठि० सेठ जमनालालजी,
वर्धा (सी० पी०)

४१

देवलाली,
(१५-५-'२६)

चि० मणि

वाको राजी कर लिया[1]। परन्तु मंगलवारसे पहले आनेसे अिनकार कर दिया, अिसलिअे अब तो वहां बुधवारको आयेंगी। सूरजबहन[2]को कहना। शिष्य और शिष्या[3] संतोष दे रहे होंगे। सबमें ओत-प्रोत हो जाना सीखो। नंदूबहन (कानूगा)को मनाया जा सके तो मनाकर ले आओ[4]। कार्यक्रम बदल गया है यह कृष्णदास (गांधी) ने बताया होगा।

वापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,
सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

---

१. श्री देवदासभाअीका बम्बअीमें अेपेंडिसाअिटिसका ऑपरेशन कराया गया था। अुस समय वा आश्रमसे बम्बअी गअी थीं। पू० वापूजीने अुन्हें आश्रम लौटकर वहांकी जिम्मेदारी संभालनेको राजी किया था, हालांकि वे अधिक समय देवदासभाअीके पास रहना चाहती थीं।

२. अेक आश्रमवासी बहन।

३. श्री देवदासभाअीके ऑपरेशनके समय वा बम्बअी गअीं तब अुनके सुपुर्द जो अेक बहन और दो बालक थे अुन्हें वा मुझे संभालनेके लिअे सौंप गअी थीं।

४. श्री नंदूबहन कानूगा पुत्रके देहान्तके बाद बहुत गमगीन रहती थीं। अुन्हें आश्रममें खींचनेका प्रयत्न अुस समय वापूजी कर रहे थे।

४२

(१९२६)

चि० मणि,[1]

वाह, कुमारिया बीमार पड़ें तो मैं दुखड़ा किसके पास रोऊं? यह तो समुद्रमें आग लगनेके बराबर हुआ। सेवा करनेके लिये भी शरीर-रक्षाकी कला सीख लेनी चाहिये। मेरा तो खयाल है कि जैसे तुम सब कपड़े पहनती हो वैसे ही मच्छरदानी[2] भी रातको पहननी चाहिये। और तो मैंने बच्चोंके पत्रमें जो लिखा है सो देखना।

आशा है अिस पत्रके मिलने तक तो बीमारी चली गयी होगी।

बापूके आशीर्वाद

४३

मौनवार
(१९२६)

चि० मणि,

अिधर तो तुम्हारा अेक भी पत्र नहीं आया। अब तबीयत बिलकुल अच्छी हो गअी क्या? जैसे जैसे व्यर्थकी चिन्ता[3] घटेगी और चित्त बालककी तरह शुद्ध होगा, वैसे वैसे बीमारियां कम हो जायगी। 'शुद्ध' का अर्थ समझ लो। शुद्ध चित्तको किसीका दुःख नहीं लगता, अुसमें किसीका दोष नहीं ठहरता, वह किसीका बुरा नहीं देखता। यह भव्य स्थिति है। मैं कहूं कि मेरी तो यह स्थिति नहीं है। मैं अुस स्थितिको पहुंचना चाहता हूं। परन्तु अुससे बहुत दूर हूं। अिस स्थितिको अखंड ब्रह्मचारी और

१ ४२ से ४७ नंबरके पत्र आश्रमवासियोंके नामके पत्रोंके साथ आश्रमके व्यवस्थापकके मारफत आये थे।

२ आश्रममें मच्छर बहुत थे, परन्तु मैं मच्छरदानी अिस्तेमाल नहीं करती थी।

३ १९२५-२६ में मैं बहुत अस्वस्थ रहती थी।

ब्रह्मचारिणी जल्दी पहुंचते हैं। अैसोंको मैंने देखा है। अेण्ड्रूज[1] अिस स्थितिके नजदीक हैं। अिन्हें मूर्ख माननेवालोंको तुम मूर्ख जानना। अैसी शुद्धता तुममें आनी ही चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

४४

मौनवार
(१९२६)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। बापूसे भी सब हाल सुने। बीमारीके बारेमें अब अधिक नहीं लिखता, क्योंकि देरसे देर शनिवारको तो मिलनेकी आशा है। परन्तु तुम्हें झट अच्छी और ताजी हो जाना चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

४५

गोंदिया,
(१९२६)

चि० मणि,

तुम्हारी भावनाको मैं जानता हूं। परन्तु मेरे ही साथ जन्मभर थोड़े रहा जा सकता है? मेरे कामके साथ रहा जा सकता है। अिसलिअे अुसके वास्ते तैयार हो जाओ। वहां अेक भी मिनट बेकार न जाने देना। मुझे लिखती रहना। यथासंभव मैं भी लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

---

१. दीनबन्धुके नामसे प्रसिद्ध स्व० सी० अेफ० अेण्ड्रूज।

४६

मौनवार
(१९२६)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरे अंक अुद्गार परसे महादेवने तुम्हारी अनुमतिकी प्रतीक्षा किये बिना मुझे तुम्हारा पत्र बता दिया। मुझसे कुछ छिपानेकी महादेवसे कोअी आशा न रखे। यह बात अुनकी शक्तिके बाहर है। हम कुछ आदतें डालते हैं, फिर अुनसे अुल्टा करना शक्तिके बाहर हो जाता है। अच्छी आदतोंके लिअे यह गुण पैदा करने लायक है। अहिंसाका शुद्ध ध्यान धरनेवाला अन्तमें हिंसा करनेमें असमर्थ हो जाता है। यानी शरीरसे नहीं परन्तु विचारसे। विचार ही कार्यका मूल है। विचार गया तो कार्य गया ही समझो।

मेरा वियोग जितना तुम्हें खटकता है अुतना ही मुझे भी खटका हो तो? और अभी भी खटकता हो तो? तुमने श्रेयको पसन्द किया, मैंने भी अुसीको पसन्द किया। अिसीमें तुम्हारा, मेरा और सबका कल्याण है। श्रेयको प्रेय बनाना शिक्षाका फल होना चाहिये। अिसलिअे आश्रममें रहना श्रेयस्कर है, अैसा यदि समझती हो तो अुसे प्रिय बनाओ। अिसमें अपने मनको या मुझे धोखा न देना। जब आश्रममें रहना अच्छा न लगे तब तुम्हें अन्यत्र रखनेको मैं तैयार ही हूं, यह समझ लो। मुझे खुलकर लिखो। भले ही मैं अुसे न समझूं। भले ही अुसके अुत्तरमें भाषण दूं। बड़ोंके भाषण सहन करना सीखना चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

४७

सोमवार
(१९२६)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। काका (विट्ठलभाअी) की मौजूदगीमें[1] शहरमें जाना तय किया, यह ठीक ही किया।

मनु[2] और मणिलाल[3] धीरजसे ही ठिकाने आयेंगे।

बा फिर कह रही थी कि रविवारको निकलेगी। बुधको तो वह पहुंच ही जायगी।

यह रातको सोनेसे पहले लिख रहा हूं। अिसलिअे अधिक नहीं लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

४८

वर्धा,
मौनवार
(६–१२–'२६)

चि० मणि,

सब बहनोंका पत्र अिसके साथ है। अब तुम्हारा। अभी तक तुम्हारी अनिश्चित स्थिति देखकर मुझे दुःख हो रहा है। मैं नहीं मानता कि तुम्हारे लिअे आश्रमसे अधिक अच्छी कोअी और जगह हो सकती है। हो सकता है कि आश्रममें भी तुम्हारा जी न लगे। अिस स्थितिको दूर करनेका प्रयत्न करो। कब्ज रहता है, पर अिसका अुपाय तो तुम्हारे हाथमें ही है। अथवा तुम अहमदाबादका पानी मंगाकर पिओ। पीने जितना आसानीसे मंगाया जा सकता है। नदीका पानी अुबाल कर पिओ तो भी वही

---

१. विट्ठलभाअी विधान-सभाके अध्यक्ष चुने जानेके बाद अपने मतदाता-क्षेत्रमें अर्थात् गुजरातमें दौरा करनेके लिअे आये थे।

२. बापूजीके बड़े लड़के हरिलाल गांधीकी पुत्री।

३. आश्रमका अेक विद्यार्थी।

काम होगा। तुम्हें प्रफुल्लित रहनेका दृढ़ निश्चय करना चाहिये। १४ तारीखके बाद यहां आनेका विचार स्थिर रखना। यहां अस्पृश्यकी पढ़ाओमें तो मदद मिलेगी ही। हवा तो अनुकूल है ही। मुझे खुले दिलसे जो कुछ लिखना हो अुसके लिखनेमें संकोच न रखना।

रमणीकलालभाओसे[1] कहना कि पूजाभाओके[2] स्वास्थ्यके समाचार मुझे नहीं मिले, अिससे चिन्ता रहती है। अुनका पता क्या है? अुन्हें स्वास्थ्यके समाचार मिलते हों तो लिखें।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

४९

वर्धा,
बुधवार
(८-१२-'२९)

चि० मणि,

तुम्हारा कार्ड मिला। खुशीसे आओ। रातकी गाड़ी लेनेके बजाय सुबहकी लेना अच्छा है। फिर जैसी मरजी हो वैसा करना। मुझे अब कोअी शादी तो करनी नहीं है कि प्रतिक्षण विचार बदलूं। यह अिजारा तो कन्याओंका होता है। कुछ हद तक कुमार भी अुसे भोगते हैं।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

---

१ श्री रमणीकलाल मोदी। आश्रमकी पाठशालाके शिक्षक।

२ वे राजचन्द्रजीके भक्त थे और पू० बापूजी भारतमें आये तबसे अुनके संसर्गमें रहते थे। कुछ समय गुजरात प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके कोषाध्यक्ष रहे थे। जीवनके अन्तिम दो वर्षोंमें वे साबरमती आश्रममें आकर रहे थे।

५०

(१–१–'२७)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया। अिस पत्रके पीछेका पत्र पढ़ना[1]। अिस कामके लिअे तुम्हें भेजनेका विचार होता है। तुम या मीराबाअी ही वहां काम कर सकती हो। सिंधी लड़कियां होंगी, अिसलिअे अंग्रेजी और हिन्दीकी जरूरत होगी। मीराबाअी अभी भेजी नहीं जा सकती। अिसलिअे मैं चाहता हूं कि तुम जाओ। यदि निश्चय हो जाय तो बताना।

'तुम्हें सुख-दुःख सहकर भी आश्रममें अर्थात् मेरे साथ ही रहना है। अपना अन्तर मेरे सामने अुंड़ेल कर मुझसे 'मां' का काम लेना।

---

१. कराचीसे श्री नारायणदास आनन्दजीने कराची म्युनिसिपल कन्या पाठशालामें तकली सिखानेके लिअे अेक बहनकी बापूसे मांग की थी। यह पत्र अुसीके सिलसिलेमें है। अुनके पत्रका प्रस्तुत भाग अिस प्रकार है:

कराची,
२०–१२–'२६

परम पूज्यपाद बापूजीकी सेवामें,

म्युनिसिपल कन्या पाठशालाओंमें तकलीसे कातनेका काम शुरू करनेका प्रस्ताव पास हुआ है। और अुसके लिअे अेक सिखानेवाला छह महीनेके लिअे ५० रु० वेतन पर रखनेका निश्चय भी हुआ है। यहां अैसी महिला मिल नहीं सकती। अतः अिस कार्यमें आपकी सहायता लेना चाहता हूं। यदि अैसी किसी बहनको अहमदाबाद या दूसरी जगहसे भेज सकें—नियुक्तिकी अवधि बढ़ाअी भी जा सकती है—तो लिखियेगा। परन्तु शिक्षिकाओं और लड़कियोंको दिलचस्पी हो सके, अैसी होशियार और साथ ही मिलनसार महिलाकी बड़ी जरूरत है।

नारायणदास आनन्दजीके
वन्दन

तुम्हारी नीरसताका कारण भीतर ही भीतर मायीका अभाव तो नहीं है न? मुझे तुम्हारे एक हितैषीने आग्रहपूर्वक कहा है कि मुझे तुम्हारा विवाह कर ही देना चाहिये। यह बात एक युवकके मिलने-मिलेमें निकली। वह पाटीदार तो नहीं है, परन्तु योग्य है। मैंने कहा कि तुम्हारे बारेमें मैं तो निर्भय हूं। तुम्हारी विवाहकी इच्छा होगी, यह अभी तो मैं नहीं देखता। तब उन्होंने कहा, "आप मणिबहनको नहीं जानते।" जिस समय तो मैं मजाक नहीं कर रहा हूं, यह मेरी भाषा परसे तुम देख सकोगी। मुझे निर्भयतासे उत्तर देना। जितना तो है ही कि जिसे कुमारी रहनेकी इच्छा हो उसे वीरांगना बनना चाहिये। उसे प्रफुल्लित रहना चाहिये। नहीं तो लोग कहेंगे, "जिसकी शादी कर दो।"

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

५१

(सोदपुर,
३-१-'२७)
सोमवार

चि० मणि,

तुम्हारे पत्रोंकी मैंने आशा रखी थी, परन्तु एक भी नहीं मिला। स्वास्थ्य मानसिक और शारीरिक अच्छा होगा। मस्कृत खूब चल रही होगी। मुझे ब्यौरेवार उत्तर लिखना। ६ तारीख तक कोमीलामें रहूंगा। ९ तारीख तक काशीमें। काशीका पता गांधी-आश्रम, बनारस छावनी करना। बापूको पत्र लिखना। मालूम हुआ है कि वे तुम्हारी चिन्ता कर रहे हैं। हम सब मजेमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन,
सत्याग्रह आश्रम,
वर्धा, बी० एन० रेल्वे

५२

(काशी,
८–१–'२७)
शनिवार

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया। वालजीभाअी[1] से पढ़नेकी व्यवस्था की है सो ठीक हुआ। अुनसे वहुत सीखा जा सकेगा।

तुम्हें शिक्षणसे क्यों मुक्त किया गया है, यह मैं नहीं जानता। क्योंकि जिस पत्रमें ये समाचार थे अुससे कारण मेरी समझमें नहीं आया। तुम खुद साहसपूर्वक पूछ सकती हो। मैं तो समझता था कि तुम्हें कारण वताया गया होगा। मैं निश्चित था, क्योंकि शिक्षा देना हो या न देना हो, तुम्हें आश्रममें ही रहना है और वेतन कहो या जो कुछ भी कहो, वह चालू ही रहेगा। तुम्हारी जिम्मेदारी मुझे अुठा लेनी है। शिक्षक पर रोप भी न करना। अुन्हें सारा तंत्र चलाना पड़ता है, अिसलिअे अुन्हें जो ठीक लगता है वैसा वे करते हैं। परन्तु कारण जाननेका तो तुम्हें हक है ही। वह जान लेना।

परन्तु अव तो तुम्हें कातना सिखानेकी तैयारी करनी है। अुसके सिलसिलेमें जो सीखना जरूरी हो वह सीख लेना है, अर्थात् चरखा सुधार, रुअीकी किस्में, लोढ़ना, पींजना, कातना, फुंकारना, आंटी वनाना, तार जोड़ना वगैरा सव क्रियाअें। माल वनाना आना चाहिये। साड़ी[2] चढ़ाना

---

१. श्री वालजी गोविन्दजी देसाअी। अेक आश्रमवासी, 'यंग अिंडिया' के अेक सहायक।

२. आजकल तकुअे पर लोहेकी गरेड़ी होती है। परन्तु पहले सूतको गोंद लगा कर तकुअे पर लपेटा जाता था अुसे साड़ी कहते थे।

जाना चाहिये। और जहां जाना होगा वहां अिन क्रियाओंके साथ दूसरा जो कुछ सीखनेको मिल जाय वह सीख लेना चाहिये और अिसी सिलसिलेमें संस्कृत और हिन्दी तो पक्की हो ही जानी चाहिये। संस्कृतमें गीताजीके अर्थ व्याकरण-सहित पक्के होने चाहिये। तकली तो है ही। कराचीसे तार आया है कि तुम्हारा नाम बोर्डके सामने गया है। मैं खुश हुआ हूं।

मुझे पत्र लिखती रहना और खूब अुत्साहपूर्वक काम करना।

अब २ से ८ तारीख तक गोंदिया, नागपुर, वर्धा, अकोला, अमरावती अिस प्रकार कार्यक्रम रहेगा। निश्चित शहर नहीं जानता। वर्धा पत्र भेजनेसे ठीक रहेगा।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

५३

(तार)

गया,
१५-१-'२७

मणिबहन,
सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

तुम्हारे पत्रसे आनन्द हुआ। पींजना और लोढना जल्दी पूरा सीख लो।

बापू

(विहार,
१७–१–'२७)
मौनवार

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया[1]। तुम्हारे पत्रमें कुछ भी छिपाने जैसी बात नहीं है, जिसे कोओ न पढ़े। फिर भी महादेवके सिवा और किसीने नहीं पढ़ा।

---

१. (१९२७)

परम पूज्य बापूजी,

जबसे शादी न करनेका निश्चय किया है तबसे आजकी अिस घड़ी तक तो मुझे कभी शादी करनेका विचार आया नहीं। कितनी ही अशान्त होअूं, चित्त कितना ही व्यग्र हो, फिर भी मुझे अैसा नहीं लगा कि शादी करूं तो शान्ति मिलेगी। अुलटे यही खयाल हुआ है कि विवाह किया होता — मेरी सम्मतिसे या बापूके कहनेसे — तो अधिक दुःखी होती। जुहू बीमार होकर आअी अुससे पहले आत्महत्या करनेका विचार दो तीन बरसोंमें अनेक बार हुआ था, परन्तु निश्चित विचार कभी नहीं किया। अुस बीमारीके बाद तो अैसा विचार कभी विशेष किया नहीं। कभी बहुत ही व्यग्र हो गअी तब अेक या दोसे अधिक बार यह विचार नहीं आया। परन्तु आत्मघात नहीं करूंगी, अिसका विश्वास दिलाती हूं। और अेक बार कह देनेके बाद तो हरगिज नहीं करूंगी।

मैं तो संसारसे अूब गअी हूं। यहां वहां रहकर अनेक लोगोंके हाथ सुख-दुःख सहते हुअे पली हूं। मेरी दृष्टिसे मैंने अब तक कुछ कम कष्ट नहीं भोगा है। अिसमें से ज्यादाका तो बापूको पता भी नहीं होगा। मेरा स्वभाव ही अैसा है कि मैं शायद ही किसीसे अिस बारेमें कुछ कहती हूं। और फिर भी अिस समय अुन दुःख देनेवालोंमें से किसीके

मैं जबरन् तुम्हारी शादी हरगिज नही करूगा। और बापू भी नही

यहा कोअी बीमार हो और सेवा करने मुझे बुलावें, तो मुझे अैसा नहीं लगता कि मुझे अितना सताया था, अब मैं क्यो जाअू? अैसा विचार भी नही आता, अितना ही नही, हो सके तो मैं जरूर जाती हू। मेरी बचपनकी लगभग सभी तरगें तरगें ही रह गअी। वे सब हवाअी किले नही थे। परन्तु परिस्थितिया ही अैसी थी जिनमें स्वतत्र दीखने पर भी मैं परतत्र ही थी। पाटीदार जातिमें जन्मी हुअी अेक लडकी थी, अिसलिअे अुसके भी थोडे-बहुत फल भोगे। मेरी अुमग, मेरा अुत्साह, अिस प्रकार बचपनसे ही नष्ट होने लगा था। लगभग १९१५ से अिस प्रकारकी चित्तकी व्यग्रता अनेक बार होती रही है। अुस समय छोटी थी अिसलिअे कोअी यह नही कहता था कि अिसकी शादी कर दो। अुस समय मैंने भी कोअी निश्चय नही किया था। अुस समय भी और अुसके बाद भी कअी बार अेकातमें केवल रोकर शान्ति प्राप्त की है। और जबसे मुझे अैसा लगा — मुझे साफ दिखाअी देता है — कि कुछ लोग मानते हैं कि मैं जरा जरासी बातमें रो देती हू या मुझे रोनेकी आदत पड गअी है, तबसे मैं यथासभव किसीके देखते नही रोती, अथवा मेरे हृदयमें होनेवाला दर्द मैं जहा तक हो सके किसीसे कहती नही।

मैं मानती हू अब यह स्पष्ट हो जायगा कि मेरी नीरसताका कारण साथीकी कमी नही है। दूसरोको जो कहना हो भले ही कहें। और मान लीजिये कि पू० बापू या आप मेरी शादी कर देनेका निश्चय करे, तो भी अब मैं छोटी नही कि आप लोग मेरी शादी जबरदस्ती कर सकें। अिस बारेमें मुझे जरा भी शक नही। अधिकसे अधिक क्या होगा? झिकझिक होगी और ससारमें तीनोंकी थोडी बुराअी भी होगी। भले अैसा हो, परन्तु अिच्छाके विरुद्ध तो मैं हरगिज ब्याह नही करूगी। अिसी तरह मैं यह भी विश्वास दिलाती हू कि जब विवाह करनेकी मेरी अिच्छा होगी तब कहनेमें शरमाअूगी नही। मैं यह जरूर मानती हू कि बापूके सामने मेरी जबान

करेंगे। मेरी चले तो मैं लड़कियोंको जबरदस्ती कुमारी रखूं। विवाह करनेको तो लड़कियां मुझे मजबूर करती हैं। अिसलिअे

जरा ज्यादा खुली होती[1], तो मुझमें अितनी अधिक व्यग्रता या नीरसता न होती। परन्तु अब अिस दिशामें प्रयत्न करनेकी जरा भी अिच्छा नहीं होती। जब तक मुझे जरूरी लगा मैंने प्रयत्न करके देख लिया। शायद मुझे करना नहीं आया हो। बापूके सामने नहीं बोल सकती, अिसमें मेरा ही दोष है, अैसा कहा जाय तो अुसे भी मैं स्वीकार करनेको तैयार हूं। अब अिस सम्बन्धमें पहलेकी तरह चर्चा या बातचीत नहीं करनी है। परन्तु अब मैं कुछ भी प्रयत्न नहीं करूंगी, क्योंकि मैं स्पष्ट मानती हूं कि अिस बारेमें किसीसे कुछ नहीं हो सकता। विवाह न करने और चित्तकी अस्वस्थताके सम्बन्धमें अितने स्पष्टीकरणसे मैं विश्राम लेती हूं। फिर भी हमेशा अिस मनोदशा पर काबू पानेकी कोशिश तो मैं करती ही हूं। अकसर अुसमें सफल होती हूं। परन्तु यह सफलता अधिक समय तक नहीं टिकती।

मणिके प्रणाम

---

१. पू० बापूके साथ मैं बोलती नहीं थी, अिस बारेमें हमारे घरके रिवाजके विषयमें श्री महादेवभाअीके नाम पू० बापूने अिस प्रकार लिखा था:

तुम्हारा पत्र मिला। मणिके बारेमें तुमने लिखा सो जाना। कुछ तो मेरा दोष है ही। परन्तु मैं काममें अितना घिरा रहता हूं कि रातको देर तक कुछ न कुछ काम शहरमें होता ही है, अिसलिअे डॉक्टरके यहां खा लेता हूं। परन्तु डाह्या अहमदाबाद रहने आया तब मैं मानता था कि मणिको कुछ न कुछ शान्ति मिलेगी। मेरे साथ वह खुलकर बोल ही नहीं सकती। मैं अुसे बुलाअूं तो भी वह बहुत हिचकिचाती है। यह अुसीका दोष है सो बात नहीं। मैं खुद भी ३० वर्षका हुआ तब तक जहां बड़े हों अुस जगह अेक अक्षर भी नहीं बोलता था। घरके बड़े लोग मौजूद हों तब बोलना नहीं चाहिये, यह घरका रिवाज था। यह स्वभाव बन गया। बड़े छोटोंके साथ ज्यादा बोलते ही नहीं।

मेरी तरफसे तो तुम्हें अभयदान ही है। तुम्हें न समझनेवाले मुझे तंग करते थे। इसलिअे मैंने भी पूछ लिया। वह भी तुम्हारी व्यग्रावस्था देखनेके बाद। मैं अैसी जवान लड़कियोंको जानता जरूर हूं जो स्वयं जानती नहीं, किन्तु जिनकी चित्तकी व्यग्रताका कारण शादी न करना ही होता है। मैं मानता हूं कि तुम्हारे लिअे यह बात नहीं होगी। केवल आत्मा बाहर रहा और मैंने पालकर अुसे बड़ा किया, इसलिअे वह सबके साथ पूरी छूट लेता है।

मणि तो पहले-पहल तुम्हारे और बापूजीके साथ खुलकर बरताव करने लगी है। और पत्र लिखना भी पहले-पहल तुम्हारे ही साथ सीखी। यह देखकर मुझे भी शुरूमें तो अजीब-सा लगा था। परन्तु मेरा खयाल है कि अब अुसमें अधिक साहस आता जा रहा है। फिर भी मेरे साथ तो अुसकी हिम्मत खुलती ही नहीं। अिसके सिवा अिस सम्बन्धमें तो हम प्रत्यक्ष मिलेंगे तब बात करेंगे।'

१ यह पत्र मुझे भेजते हुअे महादेवभाअीने लिखा था·

बम्बअी, १४– –१९२१

प्रिय बहन,

* * *

जवाब बहुत ही बढ़िया है। वह पत्र ही तुम्हें भेज रहा हूं। तुम्हें हिम्मत रखनी ही चाहिये। पितासे जितनी बात की जा सकती है अुतनी दुनियामें किसीसे नहीं की जा सकती। शास्त्रवाक्य अैसा है कि पिता, गुरु और वेदके आगे तो कुछ भी छुपाकर रखा नहीं जा सकता। अुनके सामने अन्तरके द्वार खोले जा सकते हैं। तुम्हें तो बड़े सज्जन पिता मिले हैं। अुन्हें तुमसे बातें करनेकी अिच्छा होती है, फिर भी तुम अुनसे नहीं मिलती, यह तुम्हारे ही साहसकी कमी है। तुम्हारी जैसी निर्दोष बालिकाको तो दुनियामें किसीके पास जाने या बातें करनेमें संकोच होना ही नहीं चाहिये। यह पत्र मिलनेके बाद बापूसे मिलना। सब बातें करना और मुझे पत्र लिखना।

तुम्हारा महादेव

परन्तु तुम्हें सावधान करना मेरा धर्म था और यह बताना भी कि अेक बार अेक बात कहनेके बाद शादीका विचार न किया जाय अैसा कुछ नहीं है। हां, यदि व्रत ले लिया हो तो जरूर बात खतम हो जाती है। फिर तो आसमान टूट पड़े तब भी व्रतको तोड़ा नहीं जा सकता। परन्तु तुमने जब तक व्रत न लिया हो तब तक मेरे जैसा भी तुमसे पूछेगा। दूसरे तो आग्रह भी करेंगे। अिसका अर्थ यह नहीं कि मैं चाहता हूं कि तुम व्रत ले लो। वह तो जब व्रतके बिना न रहा जा सके तब अपनी अिच्छासे लेना। अब मेरे लिअे तो तुम्हारे विवाहकी बात करनी रह नहीं जाती। अितना ही नहीं, मैं औरोंको भी अुससे रोकूंगा। परन्तु तुम्हें व्यग्रावस्थासे निकल जाना चाहिये। कुमारीपनको हर तरहसे सुशोभित करना चाहिये। ब्रह्मचर्यका तुम्हें धार्मिक अर्थ करना है और अुससे धार्मिक फल पैदा करनेके लिअे वह ब्रह्मचर्य तुम्हें पालना है जिसके बारेमें मैंने अभी 'नवजीवन' में छप रही 'आत्मकथा' में लिखा है। अिसलिअे तुम्हारी प्रकृति शान्त, प्रफुल्लित, अुद्यमी और समभावी हो जानी चाहिये।

'मार्गोपदेशिका' बार बार पढ़कर अुसे पचा डालो। गीताजीके प्रत्येक शब्दको अुसके नियमोंके अनुसार समझना।

लोढ़ना-पींजना सीख लेनेके बारेमें मैंने तार दिया है। मैंने कराची भी तार दिया है। अभी तक नारणदासका जवाब नहीं आया। आये या न आये, मेरे पास अैसी मांग तो और जगहसे भी आयी है। अलग अलग जगह तुम्हें कताअी सिखानेके लिअे भेजते रहनेका विचार है। मैंने ५० रु० और सफर-खर्चकी मांग की है। अिससे अनुभव भी काफी होगा। बादमें देख लेंगे। वहां अभी किसी काममें न लगना। ३० रुपये तो लेती ही रहो। अुनमें से बचें तो भले ही बचें। मैं हिसाब मांगूंगा।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

५५

अकोला जाते हुअे,
रविवार
(६-२-'२७)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हें अक्षर सुधारनेकी जरूरत है। अक्षर बडे और साफ लिखनेकी आदत डालो। किसी खास मौके पर अच्छे लिखना ही काफी नही। जैसे महादेव (देसाअी) के अक्षर सदा अच्छे ही होते हैं वैसे लिखना चाहिये।

अभी तो हरिहरभाअीकी[1] कक्षामें मले ही जाती रहो। बोलनेका महावरा रखनेसे हिन्दी आ जायगी। अुसका शौक रहेगा तो अपने आप ज्ञान आ जायगा।

कराचीसे जवाब आने पर लिखूगा।[2]

कातने सम्बन्धी सारी क्रियाओंमें पूरी निपुणता प्राप्त कर लेना। अेक भी चीज बाकी न रहे। मैं सफरमें देखता ही रहता हू कि अैसी चरित्रवान स्त्रियोंकी बडी जरूरत है।

मणिलाल कोठारीके नामका पत्र पढनेका तुम्हें अधिकार तो नही था, परन्तु पढ लिया तो कोअी बात नही। आज जवान भारतीय स्त्रीकी ब्रह्मचर्य-पालनकी शक्तिका कोअी विश्वास करनेको तैयार नही है। तुम और आश्रमकी दूसरी कुमारिया अिस अविश्वासको झूठा साबित करे, अिसके लिअे मैं तो तरस रहा हू।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

---

१ सत्याग्रह आश्रमकी पाठशालाके अुस समयके शिक्षक।
२ पत्र न० ५० देखिये।

५६

गुरुवार
(१०–२–'२७)

चि० मणि,

तुम्हारे दो पत्र मिले हैं। हिन्दी शुरू कर दी, यह अच्छा किया। जो करो अुसमें स्वास्थ्यकी रक्षा करना। तो मैं निश्चिन्त रह सकूंगा।

अक्षरोंको बिलकुल मत बिगड़ने दो। भले ही लिखनेमें देर लगे। थोड़े समयमें सुधर जायंगे और गति बढ़ जायगी।

पूनियां तो मुझे बहुत ही अच्छी लगती हैं। मैं चाहता हूं कि रुअीकी सब क्रियाओंमें तुम्हें पहली श्रेणी मिले। तुम्हारा अच्छेसे अच्छा अुपयोग कन्या-पाठशालाओंमें कताअी सिखलानेमें होनेवाला है। और अन्तमें अीश्वर तुम्हारी तबीयत ठीक रखे तो गरीब बहनोंके कल्याणमें करना है। स्त्रियोंमें जो काम करना है अुसका कोअी अन्त नहीं है और वह पुरुषोंसे तो मर्यादित रूपमें ही हो सकता है।

भोजनालयकी आलोचना मुझे सब लिखना। और शंकर[1] को प्रेमपूर्वक बताना। अेक दो दिन खुद करके भी बताया जा सकता है। हमेशा अुसमें भाग लेनेकी जरूरत नहीं होती। तुम्हें दूसरोंके साथ रहनेकी शक्ति पैदा करनी है। जब मैं महादेव और देवदासकी तरह तुम्हें भी चाहे जहां निर्भय होकर रख सकूं तब मैं प्रसन्न होअूंगा। किसीसे तुम्हें दुःख न हो, किसीको तुम दुःख न पहुंचाओ तब मुझे सन्तोष होगा।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

---

१. आश्रमका संयुक्त भोजनालय संभालनेवाले अेक भाअी।

५७

बुधवार
नासिक जाते हुअे,
(१८-२-'२७)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया। अैसा दीखता है कि मै वहा जल्दीसे जल्दी ८ तारीखको पहुचूगा। अभी तक कराचीसे कोअी खबर नही आअी।

गगादेवी[1] क्यो बीमार होती ही रहती है? अुनका जलवायु परिवर्तन करने कही जानेका अिरादा हो तो वैसा करे। तोताराम[1] और गगादेवी दोनोंसे पूछना। खाने-पीनेमें परहेजसे रहती है क्या?

मै आकर सस्कृतकी और पीजने, कातने वगैराकी परीक्षा लूगा। तुम्हारे गुजराती अक्षर अभी और अच्छे होने चाहिये। गुजराती व्याकरणका अध्ययन खूब बढा लेना।

सयुक्त भोजनालयको सपूर्ण बनानेकी ओर आजकल मेरा मन अधिक रहता है। अब प्रयोग पूरा होना ही चाहिये। अिसमें भरसक मदद देना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

---

१ आश्रमवासी दम्पति।

५८

मौनवार
नेपाणी,
(२८-३-'२७)

चि० मणि,

मेरी बीमारी'का खयाल भी न करना। जो वर्ष बीत जाते हैं उनका हम खयाल नहीं करते। वैसे ही विकारी मनुष्योंके नसीबमें बीमारी भी वर्षोंकी तरह लिखी हुअी ही रहती है! कोअी यूं ही चले जाते हैं। फिर भी जाना तो सभीको है, फिर हर्ष-शोक क्यों?

अभी तक तुम्हारे बारेमें तार नहीं आया। अब तो आना चाहिये। तैयारी रखना। संस्कृत कितनी कर ली? पींजने-कातनेका काम अब तो ठीक हो ही गया न?

बापूके आशीर्वाद

यद्यपि अेक ही दिन लिखा गया है, फिर भी यह पत्र बहनोंके पत्रके बाद मिलेगा, क्योंकि डाकके समयके बाद लिखा है।

बापूके आशीर्वाद[2]

५९

रविवार
(१९२७)

चि० मणि,

तुम्हारे पत्रकी प्रतीक्षा कर रहा हूं। मैं जानता हूं कि तुम जान-बूझ कर मुझे पत्र नहीं लिखतीं। परन्तु अैसा करनेकी अब तो जरूरत नहीं। संस्कृतकी पढ़ाअी कितनी हुअी? अब कातने-पींजनेमें पहला नम्बर आयेगा या नहीं?

---

१. पू० बापूजीको रक्तचापका दौरा पहले-पहल हुआ।

२. ५८ से ६७ नम्बर तकके पत्र आश्रमकी डाकके साथ आश्रमके व्यवस्थापक श्री नारणदास गांधीके नाम आये थे। वे आश्रमकी डाकमें आये हुअे पत्र जिनके हों अुन्हें भेज देते थे।

कराचीकी कोअी खबर[1] नहीं। तबीयत कैसी रहती है?

मैं ठीक होता जा रहा हूं। मेरी चिन्ता करनेका कारण नहीं।

बापूके आशीर्वाद

६०

शुक्रवार,
(१९२७)

चि० मणि,

तुम्हारे पत्र मिले हैं। यदि सम्मिलित भोजनालयमें खाना खाया जा सके तब तो बहुत ही अच्छा हो। अिस बारेमें मैंने शंकरको पत्र लिखा है। अुसे पढ़ लेना। चि० चंपा[2]की सभालका भार तुमने लिया, यह बहुत अच्छा किया।

अब तबीयत कैसी रहती है?

बापूके आशीर्वाद

६१

(नंदीदुर्ग,
२५–४–'२७)
मौनवार
चैत्र वदी ९

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया। अुसका अन्तिम वाक्य अधूरा है और हस्ताक्षर तो हैं ही नहीं। और न तिथि है। यह तो बड़ी अुतावलीका सूचक है। हमारे यहां कहावत है कि धीरजका फल मीठा होता है। अुतावलीमें आम नहीं पकते — अैसी भी हमारी अेक कहावत है। अुसका अंग्रेजी अनुवाद 'Haste is waste' किया जा सकता है। तुम बापूको अपनी मांडीमें से धोती दे आओ, यह तो बहुत अच्छा किया। अिस

१. पत्र नं० ५० देखिये।

२ डॉक्टर प्राणजीवनदासकी पुत्रवधू।

नियमको जारी रखो। अुसमें डाह्याभाअी तथा यशोदा शरीक हों तो कैसा अच्छा हो!

कराचीका काम नहीं होगा, अैसा माननेका कारण नहीं। अैसा ही हो तो भी दूसरी जगहें तो तैयार ही हैं। परन्तु अिसका निश्चय हो जाय तो दूसरा विचार करेंगे।

बापूके आशीर्वाद

६२

(नन्दीदुर्ग,
२-५-'२७)
मौनवार

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला।

बापू लिखते हैं कि तुम्हारा शरीर दुबला हो गया है। अैसा क्यों? शरीर तो मजबूत और तेजस्वी होना चाहिये। आदर्श कुमारीमें तो वीरता सभी तरहसे होनी चाहिये।

यदि कराची जाना न हो तो मेरा विचार तुम्हें दिल्ली भेजनेका है, जहां चंपावतीको भेजनेकी बात थी। वहां बहुत लड़कियां हैं और बहुत काम है। दिल्लीका जलवायु तो अच्छा है ही। आजकलमें कराचीसे तार मिलना चाहिये।

बहनोंमें[1]से किसीको चोरोंका डर रहा हो करता हो तो मुझे बताना।

राधा (गांधी)को कितनी चोट आअी? क्या वह डर गअी थी? अुसे अलग पत्र लिखनेका समय अभी नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

---

१. आश्रममें रातको पहरा देनेमें बहनें भी शरीक होती थीं। अेक बार मगनलालभाअीके घरमें चोर आये तब राधा जाग गअी थी।

६३

(नदीदुर्ग,
४-५-'२७)
वैसाख सुदी ३

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। गगादेवीसे कहना कि डॉक्टर कहे वैसा जरूर करें और मूगका पानी पीना हो तो पियें। यहा बैठा हुआ मैं बहुत मार्गदर्शन तो कैसे कर सकता हू? ये नये डॉक्टर कौन हैं? और कबसे आने लगे है?

पहरेमें किन किन बहनोने नाम लिखवाये है?

मेरी तबीयत अच्छी होती जाती है। मुझे नियमपूर्वक लिखती ही रहना। तबीयत कैसी रहती है?

बापूके आशीर्वाद

वसुमतीबहनसे पत्र लिखनेको कहना।

६४

(१९२७)

चि० मणि,

जो बीमार पडते है उन्हें क्या आश्रमसे भाग जाना चाहिये? तुम कहा गओ हो यह भी मैं तो नही जानता। भागकर भी झट अच्छा हो जाना चाहिये। चैन न पडे तो मेरे पास आनेकी छूट है, यह याद रखना। सहज होने लायक वैराग्य लिया हो तो पचेगा। न पचे वह वैराग्य कैसा? कुछ न कुछ समाचारोकी तो रोज ही बाट देखता हू।

बापूके आशीर्वाद

मेरे सफरकी तारीखें तो जानती हो न?

६५

(१९२७)
गुरुवार

चि० मणि,

तुम्हें बुखार आ गया और तुम्हें कमजोरी रहती है, यह मुझे अच्छा नहीं लगता। बूतेसे बाहर मेहनत नहीं करनी चाहिये। अब तो समय है या नहीं, यह मैं नहीं जानता। परन्तु कांग्रेसमें आनेके लिअे तुम्हारा चुनाव हुआ होगा तो मुझे खुशी होगी ही।

बापूके आशीर्वाद

मेरे स्वास्थ्यके बारेमें अखबारोंमें कुछ आये तो समझ लेना कि अुसमें अतिशयोक्ति है। रक्तचापका अुतार-चढ़ाव तो अिस दौरेमें होता ही रहा है।

६६

नंदीदुर्ग,
(१९२७)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। कभी कभी अैसे समाचार देना।

हम तो न घरके हैं न बाहरके। रास्तेमें बैठे हैं। पूज्य बापूजीकी तबीयत मामूली रहती है। डॉक्टर आराम लेनेको कहते हैं। खुराकमें रोटी नहीं खाते। फल खाते हैं।

कृष्णदास[1] की तबीयत साधारण है। कमजोरी मालूम होती रहती है। बाकी सब मजेमें हैं। यहां राजगोपालाचार्यजी[2] तथा

---

१. 'Seven months with Mahatma Gandhi' के लेखक। अेक समय बापूजीके मंत्रियोंमें थे।

२. चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य। तामिलनाडके गांधीजीके मुख्य साथी। १९३७ में कांग्रेसने प्रांतोंमें मंत्रि-मंडल बनाये तब मद्रास प्रांतके मुख्यमंत्री। १९४६–४७ की अंतरिम केन्द्रीय सरकारमें अुद्योग और

गगाधरराव[1] बेलगाववाले भी अब दो-चार दिन बाद जायेंगे। चि० कान्ति[2] और रसिक[2] मानें तो अुपदेश देना। सूरजबहन क्या करती हैं? कहा हैं? अुन्हे मेरा आशीर्वाद। आश्रममें अेकोबहन, डॉक्टर महेताकी लडकी, आअी हुअी है। अुन्हें वहा अच्छा लगता है या नही?

बहनोंकी प्रार्थनामें भाग लेती हो या नही? पूज्य वल्लभभाअीकी तबीयत अच्छी होगी। यहा नन्दूबहनका पत्र आया था। अुन्हें मेरा जय श्रीकृष्ण कहना।

अिस सप्ताहमें बहनोंने खूब अुत्साह दिखाया है। अिसलिअे मैं बधाअी देती हू। वहा प्रार्थना बहुत अच्छी चल रही है, यह जानकर आनन्द होता है।

बाके आशीर्वाद

६७

नदीदुर्ग,
वैशाख सुदी १२
(१२–५–'२७)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम दोनो बहनोंने नाम लिखा दिया, सो ठीक किया।[3] मैं तो चाहता हू कि जितना शरीर सहन करे अुतना पहरा तुम्हारे द्वारा भी हो (भले ही किसीके साथ रहकर)। डर जैसा भूत अिस ससारमें दूसरा कोअी नही और वह तो महावरेसे और अीश्वरकी कृपासे ही जाता है। मुझे तो पूरा विश्वास है कि चोरोंको

रसद-मत्री। १९४७-४८ में पश्चिम बगालके गवर्नर। १९४८ में पहले भारतीय गवर्नर जनरल। जुलाअी १९५० से अक्तूबर' १९५१ तक केन्द्रीय सरकारके गृहमत्री। आजकल मद्रासमें निवृत्तिमय जीवन बिता रहे हैं।

१ श्री गगाधरराव देशपाडे। कर्णाटकके नेता।

२ गाधीजीके सबसे बडे पुत्र हरिलाल गाधीके लडके।

३ अुस अरसेमें चोरिया होनेसे आश्रममें पहरा देनेका निश्चय हुआ था। अुसमें नाम दर्ज करानेका अुल्लेख है।

जब सचमुच विश्वास हो जायगा कि हमारा चौकीदार भी अुन्हें मारनेके लिअे नहीं परन्तु मरनेके लिअे ही वहां है और पहरा देनेवाले आश्रमवासी चौकीदार जैसे वैतनिक आदमी नहीं, परन्तु गृहस्थी हैं तब चोर हमारा पिंड छोड़ देंगे। तुममें से कोअी तो किसी दिन आत्मबल दिखायेगा और अुन लोगोंको प्रेमसे वशमें करेगा। परन्तु अिसमें शक नहीं कि यह सब सांपके बिलमें हाथ डालने जैसा है। संभव है, तुममें से किसीको मार भी खानी पड़े, मरना भी पड़े। रोग देवताकी मार कौन नहीं खाता? स्त्री, पुरुष, बालक सभी अुसकी चपेटमें आ जाते हैं। राधा कितनी बार गिरी? रूखी[1] को क्या हुआ? जूहूके अस्पतालमें कितनी लड़कियां थीं? अगर यह सब हम सहन करते हैं तो चोर अित्यादिकी मार भी हम हंसकर सहन करें अिसमें आश्चर्य क्या? सिपाहियोंसे रक्षा चाहनेवालोंको तो जरूर अचंभा होगा, मगर हमें नहीं होना चाहिये।

तुम्हारी पूनियां मैं कल कात रहा था तभी मिलीं। अुनमें से कुछ तुरंत कातीं। अेक भी तार नहीं टूटा। और आज मैंने सूतका कस निकालनेका अेक निजी अुपाय ढूंढ़ा है। अुसमें तुम्हारी पूनियोंसे निकले हुअे तारकी बराबरी अेक भी तार नहीं कर सका। अिनसे अच्छी पूनियां मेरे हाथमें कभी नहीं आअीं। अिनके जैसी शायद अेक दो बार आअी हों तो भले ही आअी हों। परन्तु मैं नहीं मानता कि तुम्हारी पूनियोंसे अच्छी पूनियां कोअी बना सकता है। तुम्हारी पूनियां मिलनेके बाद दूसरी पूनियोंसे कातना मुश्किल हो सकता है। जैसी पूनियां हैं वैसे अक्षर कर लो, कातना भी वैसा ही करो, सभीमें पहला नम्बर रखो, यह मेरी अिच्छा और आशा है।

कराचीसे कल पत्र आ गया। नारणदास[2] की गैरहाजिरीसे काम अव्यवस्थित हो गया है। अिसलिअे वे अेक महीना मांगते हैं।

---

१. श्री मगनलाल गांधीकी लड़की।

२. श्री नारणदास खुशालदास गांधी। बापूजीके भतीजे। अुस समय आश्रमके व्यवस्थापक।

मैंने लिखा है कि यदि तुम्हें तुम्हारी हाजिरीकी जरूरत ही हो तो भले ही एक महीना ले। शरमके कारण अथवा तुम्हें वहा सीचनेके लिअे अर्थात् हम पर कोअी अुपकार करनेके खातिर वे प्रयत्न करते हो तो बिलकुल न करनेको मैंने लिख दिया है। और तारसे जवाब मागा है। जहा खास जरूरत हो वही जाना है। अिस बीच सोची हुअी चीजोंको पक्का करती रहो।

बापूके आशीर्वाद

६८

नदीदुर्ग,
२१-५-'२७

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला।

'कदी नही हारना भावे साडी जान जावे' यह गीत तो सुना है न? अिसलिअे भले ही हमारी जान भी चली जाय, तो भी क्या? कातने और अक्षरोंके मामलेमें क्या हार मानी जा सकती है? सावधान करनेको मैं एक चौकीदार तो बैठा ही हू। बूद बूद करके सरोवर भरता है और कण कण करके पाल बधती है। अुद्यमके आगे कुछ भी असभव नही। निराश न होना, नियमपूर्वक कातनेसे गति जरूर बढ़ेगी, और नियमपूर्वक किन्तु साफ और पूरे अक्षर लिखनेकी आदत डालनेसे अक्षर भी जरूर सुधरेंगे। मेरे पास अैसे बहुतसे अुदाहरण है कि जिनके अक्षर बहुत खराब थे वे अभ्याससे अच्छे हो गये। कोठारके कामका भार लेकर तुमने बहुत अच्छा किया। अब अुसे हरगिज न छोडना और अच्छी तरह पूरा करना। हिसाब लिखना भले ही न पडे, परन्तु हिसाबके सिद्धान्त जान लेना। और कोठारके सिलसिलेमें दो घटे कातनेका समय न मिले तो भले ही कम हो जाय, परन्तु जितना समय मिले अुतने समयमें स्वस्थ चित्तसे कातना। अधीरतासे लम्बे समय तक कातनेकी

अपेक्षा अेकाग्र चित्तसे धीरजके साथ थोड़े समय कातनेसे कस बढ़ेगा और गति बढ़ेगी और सब तरहसे अच्छा सूत निकलेगा।

गंगादेवीके बारेमें मुझे खबर देती ही रहना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

६९

१९२७
मौनवार

चि० मणि,

तुम्हारा कार्ड मिल गया था। जो पत्र तुम लिखनेवाली थीं वह नहीं मिला। मातर[1] में किस काममें लग गअी हो और कौन कौन, यह लिखना। कुछ भी सेवा करते हुअे शान्ति न खोना।

काका (विट्ठलभाअी) को मैंने लिखा था कि जब आप अपनी कुरसी पर बैठकर तकली चलायेंगे तब मणिबहन आयेगी। अुसके अुत्तरमें वे लिखते हैं कि मणिबहन तो पागल है। मैंने लिखा है कि वे पागल हैं, अिसीलिअे पागलके साथ रहती हैं।

यशोदा[2] के लड़केका नाम क्या रखा है?

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
मातर

---

१. मातरमें बाढ़-संकट-निवारणके कामके लिअे मैं गअी थी।
२. मेरे भाअी डाह्याभाअीकी पत्नी।

७०

मौनवार
(१९२७)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया। गावोंका अनुभव लिखकर रखना चाहिये जिससे भविष्यमें काम आये। कहीं भी अधीरता न रखी जाय। निराश न होना। अशान्त न होना। मुझे तो तुमसे बहुतसे प्रश्न पूछने होंगे। परन्तु वे अभी नहीं। मिलेंगे तब या काम हो जाने पर। मुझे पत्र नियमपूर्वक लिखती रहना। तबीयत हरगिज न बिगड़ने देना।

काका (विट्ठलभाओ) से मिली होगी। काका खूब काम करनेकी उम्मीदसे आये हैं।[1] वे सफल हों।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
मातर

---

१ काका (माननीय विट्ठलभाओ)। १९२७ के चौमासेमें गुजरातमें अतिवृष्टि हुओ और बहुत नुकसान हुआ। अुस समय गुजरात प्रान्तीय समितिकी तरफसे पू० बापूने बाढ़-संकट-निवारणकी व्यापक योजना बनाओ थी। विट्ठलभाओ बड़ी व्यवस्थापिका सभाके अध्यक्ष थे। गुजरातके मतदाता-मंडलकी तरफसे वे व्यवस्थापिका सभामें गये थे। अिसलिअे गुजरातकी आफतके समय यह सोचकर कि अुन्हें गुजरातकी मदद करनी चाहिये वे नडियादको मुख्य केन्द्र बनाकर वहां रहे थे और गुजरातमें सब जगह दौरा किया था। अुनके आग्रहके कारण वाअिसरॉय भी गुजरात आये थे। पू० बापूजी अुस समय मैसूरमें नंदीदुर्गमें आरामके लिअे गये हुअे थे। बाढ़-संकट-निवारणके कामके लिअे वे गुजरातमें आना चाहते थे। परन्तु पू० बापूने लिखा था यदि और किसी कारणसे नहीं, तो अिस बातकी जांच करनेके लिअे ही कि आपकी अितने वर्षों तक दी हुअी तालीमको हम हजम कर सके हैं या नहीं, आप यहां न आअिये।

७१

(साबरमती,
१५-४-'२८)
रविवार

चि० मणि,

वहां जानेके बाद पत्र तक नहीं, यह ठीक नहीं। वहांका कार्यक्रम बताना। अनुभव लिखना।

साथका पत्र पढ़कर लंका जानेको जी करे तो लिखना।[1] (राष्ट्रीय) सप्ताह[2] कैसे मनाया?

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
स्वराज्य आश्रम,
बारडोली,
सूरत होकर

७२

(सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती, २१-५-'२८)
मौनवार

चि० मणि,

चि० कांति (पारेख) के नाम लिखे गये पत्रमें शारदाबहन[3] के सम्बन्धमें तुमने जो टिप्पणी लिखी है वह मैंने पढ़ी। जरा खेद हुआ। मैं तो नित्य स्मरण करता हूं। जो कोली वहांसे आता है उसे

१. कोलम्बोके कॉलेजमें खादीका प्रचार करनेके लिअे।

२. ६ अप्रैल १९१९ का दिन रौलट कानूनके विरोधमें सत्याग्रह करनेके लिये नियत हुआ था। अुस दिनसे देशमें दमनका दौरा चला और १३ अप्रैलको जलियांवाला बागमें हत्याकांड हुआ। अुस अेक सप्ताहमें हुअी अैतिहासिक घटनाओंकी यादमें वह सप्ताह राष्ट्रीय सप्ताहके रूपमें मनाया जाता है।

३. श्री शारदाबहन कोटक, अेक आश्रमवासी।

पूछता हू। मीराबहन[1] ने तो बहुत कुछ कहा है। वह सब क्या लिखा जा सकता है? परन्तु मैं आशा छोड नही बैठा हू। यह मानकर बैठा हू कि सब ठिकाने आ जायगे। लिखनेका अुत्साह आये तब लिखना। बहादे (बारडोलीके लगान-सत्याग्रहके समयके) तुम्हारे काममे वल्लभभाअीको सतोष है, यह मैंने बम्बअीमें अुनके मुहसे समझा। अितना सतोष हुआ। मेरे लिअे अितना काफी नहीं। मुझे तो गाभीर्य, शान्ति, सतोष, विवेक, मर्यादा, निश्चय, सूक्ष्म सत्य-परायणता, तीव्रता, अध्ययन, ध्यान अित्यादि चाहिये। नही तो कुमारी और सेविकाको शोभा देनेवाला तुम्हारा जीवन नही बनेगा।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
स्वराज्य आश्रम,
बारडोली,
सूरत होकर

७३

(सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती,
२८-५-'२८)

चि० मणि,

मैंने तुझे मूर्ख माना है सो बिना बिचारे नही, यह तू सिद्ध कर रही है। मीराबहन जो कहे वह मेरे लिअे कभी वेदवाक्य नहीं हो गया। वह बहन निर्मल है। ... तू यहा होती तो तुझसे ही कहता।

१ मिस स्लेड। अुनके पिता अिंग्लैंडकी जलसेनाके बडे अधिकारी थे। पू० बापूजीकी पुस्तकें पढकर अुनसे आकर्षित होकर वे भारत आअी और अपने जीवनमें अुन्होने भारी परिवर्तन कर डाला। बापूजीने अुनका नाम मीराबहन रखा। आजकल हृषीकेशकी तरफ गोसेवाका काम कर रही हैं।

तू नहीं थी जिसलिअे लक्ष्मीदासभाअी[1]से कहा। परन्तु किसी दिन तो मूर्ख न रहकर तू सयानी वनेगी, यह आशा रखता हूं।

वापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,
स्वराज्य आश्रम,
वारडोली,
सूरत होकर

७४

स्वराज्य आश्रम,
वारडोली,
शनिवार
(४–८–'२८)

चि० मणि,

स्वामी (आनंद) तो यहां नहीं हैं। परन्तु तुम्हारा अुनके नाम लिखा हुआ पत्र पढ़ा। आनेका हठ करनेकी जरूरत नहीं। सिपाहीका धर्म अपना शरीर ठीक रखना और सरदार कहे सो आनंदित होकर मानना है। तवीयत तो जल्दी ही अच्छी हो जायगी, यदि अच्छी वनानेमें मन लगाया जाय।

वापू और महादेव तथा स्वामी पूना[2] में हैं। आज वहांसे चले होंगे। पूनासे तार आना तो चाहिये था, पर नहीं आया। समझौता

१. श्री लक्ष्मीदास आसर। अेक आश्रमवासी। मअी १९४९ में गांधी-स्मारक-निधिके मंत्री नियुक्त हुअे। दिसम्वर १९५२ में त्यागपत्र दिया। परन्तु फरवरी १९५३ में नये मंत्रीने काम संभाला तव तक अुस पद पर वने रहे। वादमें खादी ग्रामोद्योग वोर्डमें। १९५७ में निवृत्त हुअे।

२. सरकारके साथ समझौतेकी वातचीतके लिअे वम्वअीकी अुस समयकी कौंसिलके वित्तमंत्री सर सी० वी० महेताके वुलावे पर पूना गये थे।

होगा या नही, यह अभी नही कहा जा सकता। मुझे लगा करता है कि अब सरकारमें लडनेकी शक्ति नही है। लोकमत अुसके बहुत विरुद्ध है और अुससे बहुत भूले हुअी हैं। आज सरभोण हो आया। आजकल बरसात नही है। आज बहुतसे लोग तो सूरत जा रहे हैं।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल,
ठि० वल्लभभाअी बैरिस्टर,
खमासा चौकी,
अहमदाबाद

७५

आगरा,
१८-९-'२९

चि० मणि,

तेरा पत्र मिल गया। यशोदा आ गअी, यह बडा अच्छा हुआ। अुसकी तबीयतके समाचार खेदजनक है। परन्तु अब वहा है अिसलिअे ठिकाने पर है और सभव है कि देखभालसे अच्छी हो जायगी।

वल्लभभाअी वहा पहुच गये हो तो कहना कि लखनअूमें ता० २७ को अुनसे मिलनेकी आशा रखता हू।

भाअी अिन्दुलालकी पत्नीके बारेमें जाना।[1] वह बहन दु खसे छूट गअी, अैसा मैं मानता हू। . . . भाअीके बारेमें जरा आश्चर्य होता है। परन्तु आजकी हवामें तो यह चीज भरी ही है, तब आश्चर्य क्या? मेरी तबीयत अच्छी रहती है। अभी दूध, दही, फल पर हू।

बापूके आशीर्वाद

श्री० मणिबहन,
ठि० श्री वल्लभभाअी पटेल, बैरिस्टर,
अहमदाबाद,
बी० बी० सी० आअी० आर०

---

१ श्री अिन्दुलालकी पत्नीके देहान्तका अुल्लेख है।

७६

(सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती)
९–३–'३०

चि० मणि,

तेरे पत्रकी मैं तो रोज वाट देखता था। तेरी याद किये विना अेक दिन भी नहीं गया। परन्तु तुझे मैं लापरवाह लगूं, अिसे समझता हूं। अिसके लिअे मेरी दयाजनक स्थिति जिम्मेदार है। मुझे किसीके सामने देखने तकका समय नहीं मिलता। तू कहां है, क्या हो रहा है अित्यादि जानकर संतोष कर लिया करता था।

वापू तो तेरे वारेमें कुछ कह ही नहीं गये।[1] अुन्हें कहां पता था? तुझे वहीं रहना है जहां तू शांत और सुखी हो सके। जेलमें तो समय आने पर जरूर जा सकेगी। अिस बारेमें महादेवने लिखा है। आश्रममें तुझे अच्छा लगे अिसे समझता हूं। परन्तु मेरी राय है कि यह ठीक नहीं। फिर भी अिसमें निग्रह काम नहीं देता। अिसलिअे शान्त रहता हूं। मेरी यही अिच्छा है कि तू जहां रहे वहां सुखी रहे।

---

१. पू० वापूजीके दांडीकूचके मार्गके सिलसिलेमें व्यवस्था वगैराके लिअे गये थे। ७ मार्चको रासमें सभामें यह हुक्म मिला कि अमुक प्रकारका भाषण न दें। पू० वापूने कहा कि वे अिस आज्ञाका अुल्लंघन करेंगे। अिसलिअे तुरंत ही गिरफ्तारी हुअी। फिर मामला चलाकर तीन मासकी सादी कैद और पांच सौ रुपये जुर्माना अथवा तीन सप्ताहकी अधिक कैदकी सजा दी गअी। अिसलिअे कामके या किसी व्यक्तिके वारेमें कोअी सूचना देने या समझानेका अुन्हें समय ही नहीं मिला था। अुस समय मैं वीमार होनेके कारण अिलाजके लिअे वम्वअी गअी हुअी थी।

मैं मंगलवार तक गिरफ्तार होनेकी आशा रखता हूँ।
तू बहादुर बनना। अपना शरीर सुधारना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन,
ठि० डाह्याभाऊ वल्लभभाऊ पटेल,
श्रीराम निवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बई–४

७७

(१९३०)
गुरुवार

चि० मणि,

तेरे दो पत्र मिले हैं। चलती रेलमें लिख रहा हूँ। तुझसे हो सो दृढतासे कर गुजरना। तू अपने दूसरे पत्रमें लिखती है वह प्रसंग उपस्थित हो तो तू विलापारला अथवा बांद्रा पहुंच जाना। मेरे पास आ जायगी तो अधिक समझाऊंगा और तुझे शान्ति भी होगी। मंगलवार या बुधवारको आना। जिस बीच तू वहांके अधिक समाचार भी दे सकेगी। थोडी बहनोंसे भी जो हो सो करना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल
नडियाद

७८

(१९३०)

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। कल अन्तमें तेरे विषयमें पत्र लिखना रह ही गया। अब तो तू जायगी ही।[1] अिसके साथ पत्र भेज तो रहा हूं, यद्यपि अुसकी कोअी जरूरत नहीं है।

देखना, मेरी, बापूकी और अपनी लाज रखना। अपनेको शोभित करना। गीता और गुजराती पढ़ने और समझनेका प्रयत्न करना।

मुझे नियमपूर्वक पत्र लिखती रहना।

खेड़ामें नमकके गड्ढ़ोंमें जहर डालनेकी बात सुनी थी। अुसकी जांच करना और मुझे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
नड़ियाद

७९

१९-५-'३०

चि० मणि,

अीश्वर तेरी रक्षा करेगा। रोज तुझे याद करता हूं। अब तू अुदास नहीं रहती होगी।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
नड़ियाद

---

१. मैं सूरत जिलेमें शराबकी दुकानों पर पिकेटिंगका काम करती थी। अुस काममें लगी थी तब खेड़ा जिला समितिने खेड़ा जिलेमें अिस कामके लिअे मेरी मांग की थी। अिसलिअे वहां जानेके बारेमें अुल्लेख है।

८०

य० म०[1]
१४-७-'३०

चि० मणि (पटेल),

वाह! सच्चे बापू आ गये[2] तो नकली बापूको भूल गओ क्या? और अब तो व्याख्यान देनेवाली हो गओ, फिर क्या पूछना? तेरी तबीयत शारीरिक या मानसिक कैसी है? मेरे पत्र तो मिल गये न?

डाह्याभाओ कैसे हैं? यशोदाका अब क्या हाल है? बिलकुल अच्छी हो गओ क्या?

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
डॉ० कानूगाका बगला,
ओलिमब्रिज,
अहमदाबाद

---

१ यरवडा मंदिर। यरवडा जेलसे लिखे गये पत्र पू० बापूजी आश्रमके व्यवस्थापक श्री नारणदास गांधीके नाम भेजते थे। और वे सबको पत्र पहुंचाते थे।

२ पू० बापू तीन मास और तीन सप्ताहकी पूरी सजा भुगतकर ता० २६ जूनको छूटे थे।

८१

य० मं०
२८–७–'३०

चि० मणि (पटेल),

तेरी प्रसादी कओी सप्ताहमें मिली। तू काममें है, अच्छा कर रही है और तुझे वांछित कार्य मिल गया, यह तो जानता हूं। फिर भी तेरे पत्र पाना चाहता हूं।

खूब जिओ, खूब सेवा करो।

वापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,
श्रीराम मैन्शन,
सैण्डहर्स्ट रोड,
वम्बओी

८२

य० मं०
१८–८–'३०

चि० मणि (पटेल),

तेरा पत्र मिला। वापू मेरे साथ चार पांच दिन रहकर गये।[1] तेरे समाचार मिले। ओश्वर तेरा भला ही करेगा। मुझे लिखती रहना। डाह्याभाओीसे लिखनेको कहना।

वापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,
श्रीराम निवास,
पारेख स्ट्रीट,
सैण्डहर्स्ट रोड,
वम्बओी

---

१. अुस समय पू० वापूजी तथा पू० वापू दोनों यरवडा जेलमें थे। परन्तु दोनोंको अलग अलग रखा जाता था। सरकारके साथ समझौता करानेके लिअे सर तेजवहादुर सप्रू तथा श्री जयकरने वातचीत शुरू की थी। अुस सिलसिलेमें परामर्श करनेके लिअे कांग्रेस कार्यसमितिके कुछ सदस्योंको यरवडा जेलमें अेकत्र रखा गया था।

८३

य० म०
२२-८-'३०

चि० मणि (पटेल),

अपना अनुभव तूने ठीक ठीक बताया है। तू बापूसे मिल गई, यह भी जाना। बापू तो नहीं मिले। मुझे बराबर लिखती रहना। बम्बईमें हो तब पेरीनबहन[1] और लीलावती[2]से मिलना।

मुझे पत्र लिखती रहना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
श्रीराम निवास,
पारेख स्ट्रीट,
सैण्डहर्स्ट रोड,
बम्बई

---

१ स्व० दादाभाई नवरोजीकी पौत्री।

२ श्री कन्हैयालाल मुंशीकी पत्नी। आजकल राज्यसभाकी सदस्य।

य० मं०,
७–९–'३०

चि० मणि (पटेल),[1]

तेरा पत्र मिला। बापू तथा जयरामदास[2] दो दिन और साथ रहकर चले गये।[3] अितनेमें तेरा पत्र मिला। अिसलिअे बापूने भी पढ़ा। बापूके नामका मैंने पढ़ा। मां सम्बंधी वर्णन हृदयद्रावक है। अधिकतर प्राचीन माताअें अैसी ही थीं। अिसलिअे तूने जो वर्णन किया है, अुस पर आश्चर्य नहीं होता। फिर भी यह प्रेम, अुसमें मोह होने पर भी, अितना अुज्ज्वल है कि नित नया जैसा ही लगता है। पत्र लिखनेके नियमका भंग न करना। यात्रामें (जेलमें) पहुंच जाय तो दूसरी बात है।

बापूके आशीर्वाद

(आर्थर रोड जेलमें)

---

१. बापूजीको आश्रमवासियोंको पत्र लिखनेकी छूट थी। अिसलिअे ये पत्र बापूजी आश्रममें भेजते थे और वहांसे जिस जिसके पत्र होते अुन्हें भेजनेकी व्यवस्था होती थी।

२. श्री जयरामदास दौलतराम। सिंधके पू० बापूजीके मुख्य साथी। १९३० में कराचीमें अेक सभा पर पुलिसने गोली चलाअी थी, अुसमें अेक गोली अिनके पेटसे पार हो गअी थी। १९३१ से १९३४ तक कांग्रेसके मंत्री। १९४६ में अन्तरिम सरकारके समय बिहारके गवर्नर। १९४७ से १९५० तक केन्द्रीय सरकारमें खेती और खुराक विभागके मंत्री। १९५० से १९५६ तक आसामके गवर्नर। आजकल 'दि कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी' के मुख्य संपादक।

३. समझौतेकी जो बातचीत चल रही थी अुसके सिलसिलेमें फिर अिन्हें अिकट्ठा किया गया था।

८५

यरवडा मंदिर,
१४–९–'३०

चि० मणि (पटेल),

तू आशा रखती है, इसलिअे यह लिख रहा हू। तुझे कैसे मिलेगा, यह तो दैव ही जाने। तेरा पत्र बापूको पढनेके लिअे जाने दिया गया था। तुझे लिखनेकी छूट मिले तो लिखना। अब तो जबरदस्तीकी शान्ति[1] है। अुसका पूरा अुपयोग करना। अिसे भी मैं सेवा मानता हू। स्वास्थ्यको सभालना। कार्यक्रम ठीक बनाना। खाने-पीनेको क्या मिलता है, इत्यादि बातें लिखना।

बापूके आशीर्वाद

८६

य० मं०
२७–९–'३०

चि० मणि (पटेल),

तूने मुझे हर हफ्ते पत्र लिखनेको तो कहा है परन्तु वह मिलेगा कहा? तू लिख सकेगी यात ही, अिस बारेमें भी शका है। देखना शरीरको सभालना। प्रत्येक क्षणका सदुपयोग करना और हिसाब रखना।

बापूके आशीर्वाद

(आर्थर रोड जेलमें)

८७

य० म०
१४–१२–'३०

चि० मणि,

अब तू बाहर निकल गअी तो तेरे ब्यौरेवार पत्रकी आशा रखता हू। अपने अनुभव लिखना। तेरा स्वास्थ्य कैसा है?

बापूके आशीर्वाद

(सम्बअी)

१ आर्थर रोड जेलमें।

८८

य० मं०
२१–१२–'३०

चि० मणि (पटेल),

तू लिखे या न लिखे, मैं तो लिखता रहूं न? अपना वचन भूल गओ न? मुझे तू पत्र लिखती ही रहनेवाली थी। जागें वहींसे सवेरा, भूलें वहींसे फिर गिनें। अब वचनका मूल्य समझ। अपने अनुभव लिखना। तेरा स्वास्थ्य कैसा रहा? क्या खाती थी?

बापूके आशीर्वाद

(वम्बओ)

८९

य० मं०
२७–१२–'३०

चि० मणि (पटेल),

तेरा पत्र अन्तमें मिला जरूर। कहा जा सकता है कि अेक हद तक बदला मिल गया।[1] अपना शरीर तो अच्छा कर ही डालना। तेरे पास सेवा[2] अितनी पड़ी थी कि पढ़नेकी जरूरत नहीं थी। तूने

---

१. साबरमती जेलमें खुराकके सम्बन्धमें और दूसरे कैदियोंके सम्बन्धमें लिखनेकी छूट नहीं मिलती थी। अिसलिअे जेलसे छूटनेके बाद मैंने साबरमती जेलके सब हालचालका ब्यौरेवार पत्र पू० बापूजीको लिखा था।

२. साबरमती जेलमें कुछ वयोवृद्ध बहनें आतीं, कुछ बच्चोंवाली और कुछ छोटी लड़कियां जैसी भी आतीं। अुनमें गांवसे आनेवाली बहनोंकी संख्या बड़ी थी। अिन सबकी छोटी बड़ी सुविधाओंके बारेमें मुझसे हो सकती वह सेवा करनेका प्रयत्न मैं करती थी।

लड़ाओ[1] तो अच्छी लड़ी मालूम होती है। और वह उचित थी। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। अेक ही दिन दस्त बन्द होकर सख्त मरोड़ा आया था। अिसलिअे खाया हुआ निकाल दिया और दूसरे दिन केवल सागका पानी ही लिया। अिससे कब्ज मिट गया। अिस निमित्तसे दूध जो छूटा तो छूटा ही है। यहा मिलनेवाली ज्वार या बाजरेकी अेक रोटी दिनमें लेता हू। और साग तथा थोड़े बादाम। मेरी चिन्ताका जरा भी कारण नहीं।

बापूके आशीर्वाद

(साबरमती जेलमें)

९०

य० म०
३-१-'३१

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। बापूसे मिलना हो तो कहना कि मुझे अुनसे अीर्ष्या होती है, क्योंकि वे तो बाहर भी हैं और आराम-घर[2] में भी। रोज डॉक्टरके यहां जानेका आनन्द[3]। अैसा आनन्द तो केवल बाहर रहकर भी कभी नहीं पाया। परन्तु अिन सब बातोंका बदला अितना तो मिलना ही चाहिये कि हमेशाके लिअे दांत और नाककी तकलीफ मिट जाय।

१ साबरमती जेलमें चूड़िया पहनने देनेके बारेमें हमें लड़ाओ लेनी पड़ी थी।

२ जेलमें।

३ अुस समय पू० बापू आर्थर रोड जेलमें थे और दांतके अिलाजके लिअे अुन्हें डॉ० डी० अेम० देसाअीके दवाखानेमें, फोर्टमें खादी-ग्राम-अुद्योग भवन — अुस समयके अनुसार वाअिट वे लेडलाकी मंजिल — पर रोज अेक महीने तक पुलिसके पहरेमें ले जाया गया था। वहां बम्बअीके कुछ कार्यकर्ता अुनसे मिल लेते और लड़ाओके बारेमें हिदायतें ले जाते थे। मैं और डाह्याभाअी भी रोज मिलने जाते थे।

अिस बार भी मेरे ही पड़ोसी होंगे न? राजेन्द्रबाबू[1] हों तो कहना कि पत्र लिखें। अुनसे पूछना कि मेरा अुत्तर मिल गया था या नहीं।

वैसे तू सब खबरें देनेवाली है, अिसलिअे बाहर है तब तक देती रहना।

डाह्याभाअीने लिखनेकी सौगन्ध खा ली दीखती है।

बापूके आशीर्वाद

(बम्बअी)

९१

य० मं०

१०–१–'३१

चि० मणि,

तूने लिखा है वैसा ही मैंने हरिलाल[2] के बारेमें सोचा था। मेरा तो खयाल है कि जो कुछ हुआ अुसका हाल प्रकाशित होता तो अुसमें कोअी नुकसान नहीं था। हरिलाल जाग्रत होता। परन्तु जाग्रत

१. डॉ० राजेन्द्रप्रसाद। बिहारके मुख्य नेता। १९१७ में हुअे चम्पारनके नील सत्याग्रहके समयसे बापूजीके साथ हुअे। १९३४, १९३९ और १९४७ में कांग्रेसके अध्यक्ष। १९४७ में संविधान-सभाके अध्यक्ष। अिस समय भारतके राष्ट्रपति।

२. पू० बापूजीके सबसे बड़े पुत्र स्व० हरिलाल गांधीने पू० बापू आर्थर रोड जेलमें थे तब अुनसे मुलाकात मांगी थी, परन्तु हरिलाल पिये हुअे थे और सब-कुछ सरकारका रचा हुआ प्रतीत हुआ, अिसलिअे पू० बापूने मुलाकात करनेसे अिनकार कर दिया था। फिर भी अुसी दिनके 'अीवनिंग न्यूज़' में अुनकी पू० बापूके साथ हुअी मुलाकातका वर्णन छपा और अुसमें पू० बापूके मुंहमें लड़ाअीके प्रतिकूल कुछ शब्द रखे गये। अिसका पता चलने पर पू० बापूने आपत्ति की थी और दूसरे दिन अखबारमें सुधार आ गया था।

होता या न होता, हमारा मार्ग सीधा है। सब स्वजन हैं। अथवा सब परजन हैं।

तेरे अक्षर काफी सुधर रहे हैं। अब कहा बसनेका विचार है?

बापूके आशीर्वाद

(बम्बई)

९२

य० म०
१५-१-'३१

चि० मणि,

सरदार-सम्बन्धी तेरा पत्र मिला। हरिलालको तो हम जानते ही हैं। बापूको अब दातोंके लिअे कब तक ठहरना पड़ेगा? मच्छरोंका कष्ट होने पर भी दातोंका निबटारा हो जाय तो यह वाछनीय ही है। मैं मानता हू कि अुनके डॉक्टरके पास जानेकी जरूरत जब तक है तब तक तो तू वहीं रहेगी। हम दोनों[1] मजेमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

सुमित्रा[2] कैसी है? यशोदा अब चलती फिरती है? विट्ठलभाअी क्या वहीं रहेंगे?

(बम्बई)

---

१ वाका कालेलकर अुस समय पू० बापूजीके साथ यरवडा जेलमें थे।

२ स्व० डॉक्टर कानूगाकी पुत्री।

९३

य० मं०
२२–१–'३१

चि० मणि,

तेरा सुन्दर लम्बा पत्र मिल गया। अुसके जवाबमें मुझे थोड़े ही लम्बा लिखना है? मेरी यात्रा तो अहातेके अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक सीमित है। न कोअी गार्ड है और न कोअी दूसरा, जिसके साथ विवाद हो। मेरी ट्रेनकी छत आकाश है। अुसके अगणित तारोंका वर्णन करना चाहूं तो करना नहीं आता। और जो तारे मैं देखता हूं वही तू देखती है। अिसलिअे मेरे पास लिखनेको कुछ नहीं है। मैं भी समझता हूं कि तू और थोड़े दिनकी मेहमान है।[1] हम आराम-घरमें ही शोभा देते हैं।

बापूके आशीर्वाद

(अहमदाबाद)

९४

मौनवार
(१६–२–'३१)

चि० मणि,

तेरे पत्र तो मिल गये। परन्तु मुझे लिखनेका समय कहां मिलता है? अिसलिअे मेरे पत्र आयें या न आयें तू तो लिखती ही रहना। आज हम दिल्ली जा रहे हैं। डॉ० अन्सारी, दरियागंजका पता है। सरदार आज वम्बअी जा रहे हैं।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन,
ठि० डाह्याभाअी वल्लभभाअी पटेल,
राम निवास,
माधव आश्रमके पास,
वम्बअी

---

१. क्योंकि मैं फिर गिरफ्तार होनेवाली थी।

९५

२६-१०-'३१

चि० मणि,

तेरे पत्र मिलते रहते हैं। मेरे जवाब न मिलनेसे ऊब न जाना। मुझे आजकल पत्र लिखनेका समय मिलता ही नहीं। आज थोड़ासा समय चलती हुअी परिषद[1]में मिल गया, अुसका अुपयोग कर रहा हूं।

यह पढ़कर प्रसन्नता हुअी कि डाह्याभाअीका स्वास्थ्य अच्छा हो गया। अुन्हें और यशोदाको मेरा आशीर्वाद कहना।

लक्ष्मीदास (आसर) से और मजुकेशा[2]से पत्र लिखनेको कहना। मैं मानता हूं कि कमसे कम अेक डाक तो मुझे मिलेगी।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
श्रीराम मैन्शन,
सैण्डहर्स्ट रोड,
बम्बअी

९६

य० म०
२६-२-'३२

चि० मणि,

आज मुझे साथी कैदियोंको लिखनेकी छूट मिली है, अिसलिअे लिख रहा हूं। मुझे यदि लिखनेकी छूट है तो जिसे मैं लिखूं अुसे अुत्तर देनेकी छूट मिलनी चाहिये। मुझे तुरन्त अुत्तर लिखना। लीलावती,[3]

१ लंदनकी गोलमेज परिषदमें।

२ श्री किशोरलाल मशरूवालाकी भतीजी डॉ० मजुबहन। बारडोली स्वराज्य आश्रममें १९२९ से डॉक्टरके रूपमें अुस प्रदेशके गरीबोंकी सेवा-शुश्रूषा कर रही हैं।

३ स्व० लीलावतीबहन देसाअी। डॉ० हरिभाअी देसाअीकी पत्नी —नन्दूबहनकी भाभी। १९५१ से १९५६ तक बम्बअीकी राज्य-सभाकी सदस्य।

नन्दूबहन, मृदु आदि दूसरी बहनोंको आज नहीं लिखता। अुनके समाचार भी देना। और कौन हैं?

महादेव यहां आ गये हैं। हम तीनों मजेमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

(अपने हाथसे)
श्रीमती मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
प्रिजन, बेलगांव

९७

य० मं०
२२-४-'३२

चि० मणि,

जैसे लोग मौसममें बरसातकी राह देखते रहते हैं, वैसे ही हम लोग बहांके पत्रोंकी[1] राह देख रहे थे। अुनमें से अेक-दो मिले। ×××[2] छूटनेके बाद यहां होकर ही जानेका विचार रखना। सोमवार हो तो मंगलवार तक ठहरकर दोपहरको बारहसे या साढ़े ग्यारहसे अेक बजे तक मिलनेका वक्त सबसे अच्छा होता है। अुस समय आयेगी तो हम दो[3] तो मिल ही सकेंगे। ××× हम तीनोंकी[4] तबीयत अच्छी है। ×××

---

१. अुस समय मैं बेलगांव जेलमें सी क्लासमें थी। हमें तीन महीनेमें अेक पत्र लिखने और अेक मुलाकात करनेकी छूट थी। मुलाकात न करें तो अुसके बजाय पत्र लिख सकते थे। ता० १५-५-'३२ को मैं जेलसे छूटनेवाली थी।

२. तीन चौकड़ीकी निशानी जेल-अधिकारियों द्वारा पत्रके काटे हुअे भाग बतानेके लिअे लगाअी गअी है।

३. पू० बापूजी तथा पू० बापू।

४. तीसरे महादेवभाअी।

मैं देखता हू कि तूने अपने अक्षर सुधारनेका प्रयत्न अच्छी तरह किया है। यह बताता है कि प्रयत्नसे अक्षर अच्छे हो सकेंगे। और यह नियम सब बातो पर लागू होता है।

गीता कठस्थ करनेका अर्थ यह है कि अर्थके साथ आनी चाहिये और उच्चारण शुद्ध होना चाहिये। शिक्षिका कौन है? शायद यह जवाब तो तू मिलते समय ही देगी, अथवा आखिरी खत लिखने दें तो पत्र भी लिख डालना। तन्दुरस्ती अच्छी है या नहीं, यह तो हम लोग देखकर प्रमाणपत्र दें तब सही। ×××

बाबा और यशोदा अेक बार यहा आ गये। बाबा तो कुर्सी पर चढ बैठा था। और जितना ज्यादा मौजमें आ गया था कि अपने नये जूते भूल गया। अुसके सौभाग्यसे या डाह्याभाअीके सौभाग्यसे हममें से किसीने देख लिये और तुरन्त भेज दिये। यशोदाकी तबीयत बहुत अच्छी नहीं कह सकते। अुसने कुछ वर्षोंमें अच्छा स्वास्थ्य रखा ही कहा है? डाह्याभाअी हर सप्ताह आते हैं और हम दोनो अुनसे मिल सकते हैं।

जीवनराम[1]का काम अभी चलता रहता है। देवदास गोरखपुर (जेलमें) है। अुसका पत्र अभी आया है। वह अकेला है, मगर आराममें है। पठन अच्छी तरह कर रहा है। लक्ष्मीको अब बेचारी हरगिज नहीं कहा जा सकता। पापा (राजाजीकी बडी लडकी) की देखभाल जरूर करती है। परन्तु पापा अब अच्छी हो गअी कही जा सकती है। राजाजी मजेमें हैं। अुनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है। अुनके साथी भी

---

१. आचार्य जीवतराम कृपालानी। वे बिहारके मुजफ्फरपुर कॉलेजमें अध्यापक थे। और चम्पारनके मामलेमें बापूजी बिहार गये तब कॉलेज छोडकर पू० बापूजीके साथ हो गये थे। गुजरात विद्यापीठके दूसरे आचार्य। बारह साल तक काग्रेस महासमितिके मत्री रहे। अुसके बाद अध्यक्ष हुअे। अुसके बाद काग्रेससे अलग हो गये। आजकल प्रजा सोशलिस्ट दलके अध्यक्ष और लोकसभाके सदस्य है। यह पत्र लिखा गया अुस समय वे पकडे नहीं गये थे और बाहर काम कर रहे थे।

अुनके काफी साथ हैं। अिन्दु[1] मुझसे नहीं मिली। अब कहां है, यह पता नहीं। बहुत करके पूनामें ही है। कमला (नेहरू) प्रयागमें है। कमलापति (जवाहरलालजी) की प्लुरसी तो कुछ शान्त हुअी मालूम होती है। परन्तु थोड़ा बुखार रहता है।

चरखेके बारेमें अहमदाबाद लिखूंगा। परन्तु बढ़िया चरखा चाहिये तो यहांसे भी दे सकूंगा। ×××

. ××× बाकी तो पहला पत्र मैंने आज ही लिखा है। परन्तु अुसके पत्र मिलते रहते हैं। वह और दूसरी बहनें (यरवडा जेलमें) मजेमें हैं। मीठूबहन अपनी कक्षा चलाती है।

चश्मा टूट गया हो तो वहां भी बदलवाया जा सकता है। परन्तु अब निकलनेका समय नजदीक आ गया है। अिसलिअे अिस सुझावमें बहुत सार नहीं है।

तेरा पत्र आज ही यहां आया और आज ही मिला है। और यह अुत्तर भी आज ही लिखा जा रहा है। कल यहांसे निकलेगा, अैसी आशा रखता हूं। वहां कब मिलेगा यह हम सबके भाग्य पर आधार रखता है।[2]

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
प्रिजन, बेलगांव

---

१. पंडित जवाहरलाल नेहरूकी लड़की अिन्दिरा गांधी अुस समय पूनामें पढ़ती थीं।

२. यह पत्र पू० बापूजीने पू० बापूके हाथसे लिखवाया था।

९८

(तार)

मणिबहन पटेल
मेंट्रल जेल,
बेलगाव

पूना,
२-५-'३२

यशोदा कल गुजर गअी। यह मानना चाहिये कि वह जीवित मृत्युसे छूट गअी।[1]

गांधी

९९

यरवडा मंदिर,
२-७-'३२

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। मेरा सन्देश मिला होगा। तूने पूनियां भेजनेका विचार किया अिससे भेजनेका पुण्य तो पा चुकी। भेजी नहीं यह अच्छा ही किया। अब यहां खराब पूनियां रही ही नहीं हैं। जो पडी हैं वे बहुत हैं। सब महादेवकी ही बनाअी हुअी हैं। लगभग दो मासमें अिकट्ठी होती रही है। महादेव ज्यादातर छक्कडदासकी भेजी हुअी पूनियां काममें लेते हैं, क्योंकि अुनकी रुअी अुत्तम है और पूनियां बडी

१ यह तार पहले तो मुझे दिया नहीं गया था। परन्तु जेलके डॉक्टरने ३ तारीखकी सुबह मुझे खबर दी कि आपका अेक तार आया है और अुसमें किसीके गुजर जानेके समाचार हैं। अुसी दिन दोपहरको अेक बहनकी मुलाकातका प्रसंग आया और अुसमें यशोदाके गुजर जानेका मुझे पता लगा। शामको मैंने मेट्रनसे झगडा किया कि मुझे पता चला है कि मेरा तार आया है और वह तार जब तक मुझे नहीं दिया जायगा तब तक मैं कोठरीमें बन्द नहीं होअूंगी। बहुत झगडा होनेके बाद अन्तमें मुझे तार दिया गया।

सावधानीसे बनाअी हुअी हैं। मैं मगन चरखे पर महादेव जैसा बारीक सूत कभी नहीं कात सकता। यज्ञका सूत अपने लिअे हरगिज काममें नहीं लेना चाहिये, यह मेरी हमेशासे राय रही है और वह ठीक ही है। यदि यज्ञके निमित्त कातनेवाला लापरवाह रहे, तो अुसकी परीक्षा हो गअी और वह फेल हो गया। यज्ञका सूत सबसे ज्यादा सावधानीसे कातना चाहिये। जितना सूत काते अुतना देकर खुद जो भलाबुरा सूत मिले वही काममें ले तो अुत्तम है। परन्तु अैसा करनेका साहस न हो तो अन्तमें यज्ञके लिअे अेक घंटा या आध घंटा रखकर कमसे कम १६० तार तो कृष्णार्पण कर ही देना चाहिये।

तू सामूहिक प्रार्थना पसन्द करती है, यह बिलकुल समझमें आता है। क्योंकि तेरी प्रार्थना ही सामूहिकसे शुरू हुअी। परन्तु अकेले प्रार्थना जरूर करनी चाहिये। भले ही वह अेक ही मिनटके लिअे हो। अन्तमें तो हृदयमें यही रटन चलती रहनी चाहिये। और यह अकेले प्रार्थना करनेकी आदत न पड़े तो हो ही नहीं सकता। अकेले प्रार्थना तो सोते, नहाते, खाते, कोअी भी क्रिया करते हुअे हो सकती है। अिसलिअे अुसका बोझा तो होता ही नहीं। अुलटे अुससे मन हल्का हल्का हो जाता है — होना चाहिये। अैसा अनुभव न हो तो अुस प्रार्थनाको कृत्रिम समझना चाहिये।

डाह्याभाअीकी समस्या जरा कठिन है। परन्तु वे बड़े समझदार हैं। अिसलिअे अपने आप स्थिर हो जायंगे। अिसमें किसीको अुनका पथ-प्रदर्शन नहीं करना है। यदि फिर शादी करनेकी अिच्छा होगी तो अुन्हें कोअी रोकनेवाला नहीं है। और शादी नहीं करनी हो तो अुन्हें कोअी ललचानेवाला नहीं है। दूसरे लोग तो तंग करेंगे ही। अुनसे डाह्याभाअी जरूर निबट लेंगे। मेरा मिलना बन्द हो गया है, यह अैसे प्रसंग आते हैं तब खटकता है। परन्तु अिस तरह सहन करनेमें ही हमारा धर्म है। बायें हाथकी कोहनी अमुक रीतिसे काममें लेनेसे दुखती है। आजकल लगभग अेक माससे कपड़े नौकर धोता है। मेरे बरतन

जेलके ही हैं। चमकते हुअे तो नहीं रहते, पर साफ रहते हैं। तू शरीरको समालना। पत्र लिखती रहना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
ठि० डॉक्टर बलवन्तराय कानुगा
अेलिसब्रिज
अहमदाबाद

१००

य० म०
२६–८–'३२

चि० मणि,

तेरे कैद होनेके बाद किसीके नाम भी कोअी पत्र नहीं आया अिसका क्या कारण है? कैद होनेके बाद तुरन्त पत्र लिखनेका अधिकार तो है ही न? अभी तक न लिखा हो तो अब लिखना। हो सके तो अिस बार शरीर सुधार लेना। खुराक जो आवश्यक हो वह लेने या मांगनेमें संकोच न रखना। मेरी सलाह है कि अपनी पढाअीका क्रम तैयार करके बाकायदा कच्चे विषयोंको पक्का कर लेना। गुजराती व्याकरण पक्का कर ले। और भाषा पर अधिक काबू पा ले तो अच्छा। अंग्रेजी जानती ही है, अिसलिअे अुसे भी पक्का किया जा सकता है। अिसमें कमलादेवी (चट्टोपाध्याय) की मदद ली जा सकती है। संस्कृतमें लीलावतीबहन (मुन्शी) मदद कर सकेगी, साथ ही मराठी भी अधिक अच्छी कर ली जाय तो ठीक। थोड़ा स्त्रियों संबंधी खास ज्ञान भी प्राप्त कर लेनेकी आवश्यकता है ही। परन्तु यह तो मेरा सुझाव हुआ। अिसमें से तुझे कुछ पसन्द न हो तो जो पसन्द हो वह चुन लेना। अिसमें से कुछ भी पसन्द न हो तो कुछ नया चुन लेना। मेरा हेतु तो अितना ही है कि यह जो अमूल्य अवसर मिला है अुसका पूरा सदुपयोग ज्ञानवृद्धिके लिअे कर लेना। कातनेकी छूट हो तो कातना। प्रार्थना और डायरीको तो भुलाया ही नहीं जा सकता।

हम तीनों आनन्दमें हैं। बापूकी संस्कृतकी पढ़ाओ अितनी तेजीसे हो रही है कि तू देखे तो आश्चर्य करे। पुस्तक हाथसे छूटती ही नहीं। नौजवान विद्यार्थीमें भी अिससे अधिक लगन नहीं हो सकती। कातते हैं परन्तु ४० नम्बर तकका। और लिफाफे तो बनाते ही हैं। महादेवके ८० नम्बर चल ही रहे हैं। अिसके सिवा फ्रेंच और अुर्दू है। मेरी धीमी गाड़ी मगन चरखे पर चलती है। पढ़ाओ तो लूली-लंगड़ी ही है। पत्र बहुत वक्त खा जाते हैं। ×××

किसी समय मुझे पत्र लिखनेकी गुंजाअिश हो और अिच्छा हो जाय तो लिखना। हम सबकी तरफसे आशीर्वाद।

बापू[1]

मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
प्रिजन, बेलगांव

१०१

(य० मं०)
२१–९–'३२

चि० मणि,[2]

तुझे आश्वासनकी जरूरत होगी क्या? खबरदार, यदि अेक भी आंसू गिराया तो। जो सौभाग्य मुझे मिला है वह विरलोंको ही कभी कभी मिलता है। अिससे खुश हो सकते हैं, रो तो सकते ही नहीं। तेरे और तेरे जैसोंके लिअे अुपवास नहीं है। परन्तु पूर्ण तन्मयताके साथ कर्तव्य-

१. मैं ता० ११–८–'३२ को अहमदाबादसे गिरफ्तार हुअी थी। मुझे १५ मासकी सजा हुअी थी। अुसके बाद बेलगांव जेलके पते पर यह पत्र लिखा गया था।

२. पू० बापूजीने ब्रिटिश मंत्रि-मंडलके साम्प्रदायिक निर्णयके विरुद्ध ता० २०–९–'३२ से अुपवास शुरू किया था, जो ता० २६–९–'३२ को शामको छोड़ा था। अुस मौके पर लिखवाया हुआ पत्र। यह पत्र बेलगांव जेलमें मुझे ता० २४–९–'३२ को मिला।

पालन है। मुझे जब लिखना हो तब लिखनेकी छूट मैंने पा ली है। जिसलिअे मुझे लिखना। यह पत्र तुझे तुरन्त मिलना चाहिये। दूसरी बहनोंको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल,
(प्रिजनर,
सेंट्रल प्रिजन)
बेलगाव

१०२

य० म०
८-१०-'३२

चि० मणि,[1]

तेरा लम्बा पत्र मिल गया था। मेरे लिअे तो लम्बा नहीं था। अुपवास तो अब गअी बीती बात हो गअी। वह अीश्वर-दत्त वस्तु थी, जिसलिअे सुशोभित हो गअी। अब शरीर फिर बडी तेजीसे बन रहा है। शक्ति लगभग आ गअी है। दूध दो पौंड और डेरो फल ले रहा हू। फलोंमें नारंगी, मोसम्बी, अनार अथवा अंगूरका रस और दूधी अथवा टमाटरका रस। × × × काफी घूम-फिर सकता हू। कमसे कम २०० तार कातता हू। ४५ अंकके। पत्र तो काफी लिखता ही हू। जिसलिअे कोअी चिन्ताका कारण रह ही नहीं गया है। बाकी दिनमें मेरे साथ रहनेकी छूट है। देवदासको मिल जानेकी छूट है। देवदासकी तबीयत अब ठीक है।

तुझे खानेके सपने आते है, अिसमें थोडा-बहुत अपच कारण हो सकता है। अैसे सपने या तो बहुत भूखे पेट रहनेसे आते हैं या बदहजमीसे। अिन कारणोंको ढूढकर अुचित अुपाय कर और फिर निश्चिन्त रह। जीवन व्रतबद्ध हो तो ये कारण समय पाकर नष्ट

१ यह पत्र २४-१२-'३२ को दिया गया था अैसा जेलकी मुहरसे पता चलता है।

हो ही जाते हैं। दीर्घकालके आवरण अेकाअेक मन्द पड़ जायंगे अैसा माननेका कारण नहीं है। वे अपना समय लेते ही हैं। अिसलिअे घबराना नहीं चाहिये। निराश भी नहीं होना चाहिये। प्रयत्नमें शिथिल भी नहीं होना चाहिये और परिणामके बारेमें निःशंक और निश्चिन्त रहना चाहिये। यही गीताकी अनासक्ति है।

अुपवासका असर अलग अलग होता है, अिसमें आश्चर्य नहीं। अुसका आधार शरीरकी बनावट पर और मानसिक तैयारी पर है। अुपवासकी जिसे आदत ही न हो वह अेकसे भी घबरा जायगा और अुसके अस्थि-पंजर ढीले हो जायंगे। जिसे आदत है अुसके लिअे वह खेल हो जाता है। अिसी तरह जिसके शरीरमें चरबी वगैरा है ही नहीं वह बहुत लम्बा अुपवास न करे। बहुत चरबीवाला धीरज रखे तो खूब लम्बा सकता है और शारीरिक दृष्टिसे अुसका लाभ अुठा सकता है।

बापू और महादेव मौज कर रहे हैं। अितना अेकान्तवास तो हमने कभी अनुभव किया ही नहीं था। अिससे खूब लाभ हुआ है।

तेरा शरीर अच्छा होगा। लीलावती और कमलादेवी ठीक रहती होंगी। और जो बहनें हों अुन्हें आशीर्वाद। लीलावतीसे कहना कि मुंशी[1]का मुझे सुन्दर पत्र मिला था। किसी समय मुझे लिखनेकी गुंजाअिश हो और वैसी अुमंग आवे तो लिखें।

अिस पत्रके साथ नन्दूबहनका जो पत्र यहां आया है वह भेज रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
सेन्ट्रल प्रिजन,
येरवडा

---

१. श्री कन्हैयालाल मुंशी, बम्बअीके प्रसिद्ध अेडवोकेट। १९३७ से १९३९ तक बम्बअी प्रान्तके गृहमंत्री। भारतके स्वतंत्र होनेके बाद १९५० से १९५२ तक भारत सरकारके खेती और खुराक विभागके मंत्री। १९५२ से १९५७ तक अुत्तरप्रदेशके गवर्नर।

१०३

(तार)

पूना,
२८-१०-'३२

मणिबहन पटेल,
कैदी, वेलगाव जेल

आशा रखता हू कि दादीकी मृत्युसे तू विह्वल नही हुअी होगी। अैसी मृत्युकी सब अिच्छा करते हैं। बहुत समयसे तेरा पत्र क्यो नही आया? प्यार।

बापू

१०४

(तार)

पूना
३१-१०-'३२

मणिबहन पटेल,
कैदी, वेलगाव जेल

दादीने बुधवारकी दोपहरको करमसदमें चार घटेकी बीमारीके बाद शातिपूर्वक शरीर छोडा। आशा करता हू कि शुक्रवारको अुसका विवरण देते हुअे जो पत्र लिखा है वह तुझे दिया गया होगा। हम सब आनन्दमें है। प्यार।

बापू

१०५

(तार)

पूना,
१९–११–'३२

मणिबहन,
कैदी, वेलगांव जेल

डाह्याभाओीको ७ दिनसे बुखार आता है। अब मालूम हुआ है कि टाअिफाअिड है। और कोओी खरावी नहीं है। खास नर्सें देखभालके लिअे हैं। चिन्ताका कोओी कारण नहीं है। रोजके समाचार भेजनेकी कोशिश करूंगा।

बापू

१०६

यरवडा मंदिर,
२०–११–'३२

चि० मणि,

डाह्याभाओीके बारेमें दिया हुआ मेरा तार मिला होगा। तुझको हमेशा खबर देनेकी और तुझे लिखना हो वह लिखनेकी (डाह्याभाओीको या अुसके बारेमें) अिजाजत मिल गओी है। अिसलिअे तू वहांसे रोज लिख सकती है। वह पत्र मैं डाह्याभाओीको पहुंचा दूंगा। यहांसे तो रोज पत्र लिखा ही करूंगा। डॉ० मादन[1]का पत्र आया है। वह अिसके साथ भेज रहा हूं। अुसके बाद आज भी भाओी करमचन्द[2]का पत्र आ गया है। अिसलिअे कल तकका हाल अच्छा ही माना जायगा। आज १४ दिन पूरे हुअे हैं। अभी बुखार १०० से १०३ के बीच रहता है। अेक बार ९९।। तक भी गया था। छाती, फेफड़े वगैरा ठीक हैं।

१. बम्बअीके कुशल पारसी डॉक्टर
२. बम्बअीके अेक शेयर-दलाल। पूज्य बापूके भक्त शुभेच्छु।

फलोंका रस, बारलीका पानी और कभी कभी पतली छाछ जितनी चीजें ले सकता है। खास नजर रखी गयी है। सब तरहसे पूरी सावधानी रहती है, इसलिये चिन्ताका जरा भी कारण नहीं है।

हम सब आनन्दमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
सेन्ट्रल प्रिजन,
बेलगांव

१०७

य० मं०
(२२-११-'३२)

चि० मणि,

तुझे तार दिया है। पत्र लिखा है। दोनों मिले होंगे। तू रोज लिखे तो मुझे पत्र मिलेगा और वह डाह्याभाअीको पहुंचा दिया जायगा[1]। आज भी खबर अच्छी ही है। देवदास देखकर आया है। वह कहता है कि डाह्याभाअीको देखकर तो कोअी कह ही नहीं सकता कि टाअिफाअिड हुआ है। अैसी हिम्मत और शक्ति बताता है।

सब बहनोंको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
सेन्ट्रल प्रिजन,
बेलगाव

---

१. डाह्याभाअीको बम्बअीमें टाअिफाअिड हुआ था, अिसलिअे यह छूट पूज्य बापूजीने सरकारको लिखकर ले ली थी।

१०८

यरवडा मंदिर,
२५-११-'३२

चि० मणि,

तेरा लम्बा पत्र — तुझे खबर देनेके बाद पहला ही — आज मिला। तू व्यर्थकी न करने जैसी चिन्ता करती है। तुझे जानना चाहिये कि बापू और तू जेलमें हैं तब बाहर बैठे हुअे लोग जो कुछ करना चाहिये अुसे करनेसे चूक नहीं सकते। टाअिफाअिडका पता चलते ही तुरन्त वालचन्द[1]ने करमचन्दको कहा कि रात-दिनकी दो नर्सें रखो, डॉक्टरोंमें से जिसे रोज बुलाना अुचित हो अुसे बुलाओ; और सारा खर्च खुद ही देनेको कहा। रोज ३०-४० रुपये खर्च होते हैं। वे ही देते हैं। अस्पतालसे ज्यादा अच्छी देखभाल होती है। घरके लोगोंमें करमचन्द, छोटूभाअी[2] हैं (जो सारे दिन पास ही रहते हैं), और दो नर्सें हैं जो बहुत मिलनसार हैं और डाह्याभाअीके स्वभावको माफिक आ गअी हैं। अिसके सिवा वख्शी[3] और दूसरे मित्र भी हैं ही। अिस समय डाह्याभाअीके पास तू नहीं है यह तुझे खटकना स्वाभाविक है। लेकिन जो अीश्वरको अधिक चाहता है अुसकी वह ज्यादासे ज्यादा कसौटी करता है। यहां करमचन्द, छोटूभाअी वगैराके पत्र रोज आते हैं। यह तीसरा हफ्ता है। अब बुखार १०२ से अूपर नहीं जाता। कल तो नॉर्मल भी हो गया था। डॉक्टर आशा करते हैं कि अगले सोमवार तक बुखार बिलकुल नॉर्मल हो जायगा और बढ़ना घटना बन्द हो जायगा। तुझे तो डॉ० मादनका, जो देखभाल और अिलाज करते हैं, वल्लभभाअीके नाम आया हुआ पत्र भी भेजा था। अुससे भी तू समझेगी कि डॉक्टर भी

---

१. स्व० सेठ वालचन्द हीराचन्द। पूज्य बापूके अेक मित्र।

२. मेरे काकाके पुत्र।

३. स्व० जमनादास वख्शी। बम्बअीके अेक शेयर-दलाल। पूज्य बापूके अेक भक्त।

प्रेमसे देखभाल कर रहे हैं। मोसम्बीका रस, छाछ वगैरा देते हैं। साधारण तौर पर तो टाइफाइडके बीमारको दस्त या अैसा ही कुछ शुरूमे हो जाता है। डाह्याभाअीको अिनमें से कोअी व्याधि नहीं है। अिसलिअे चिन्ता करनेका कुछ भी कारण नहीं। तू अपने काममें परायण रहना और अैसी प्रार्थना करना कि डाह्याभाअी जल्दी अच्छे हो जाय। दादीके[1] लिअे शोक हो ही नही सकता। अुनके जैसी भाग्यशाली मृत्यु कितनोको मिलती है? हम अमुक स्वजनकी सेवा नहीं कर पाये और वह चला गया, यह भावना पैदा हो तब अैसा निश्चय करके निश्चिन्त हो जायें कि आगे किसीकी भी सेवा करनेका मौका हाथसे नहीं जाने देंगे।

हम तीनो आनन्दमें है। मोनेके कुछ घटे छोडकर हम तीनोंका बाकी सारा समय अस्पृश्यता-निवारणके काममें लगता है।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
सेन्ट्रल जेल,
बेलगाव

१०९

य० य०
२६-११-'३२

चि० मणि,

आज डाह्याभाअीके अधिक अच्छे समाचार हैं। बुखार १००।। से आगे गया ही नहीं और ९८।। तक अुतरा था। अिसलिअे कह सकते हैं कि अब अुतार पर है। कल अथवा परसो बिलकुल नॉर्मल होकर फिर नही चढेगा, अैसी डॉक्टर आशा रखते हैं। कमजोरी है सो तो होगी ही। परन्तु चिन्ताका जरा भी कारण नही। अिसलिअे अब तुझे

१ मेरी दादी लगभग ९० वर्षकी अुम्रमें गुजर गअी। वे अन्त तक रसोअी वगैराका काम करती रही।

तार करनेकी जरूरत नहीं रही और यहांसे तेरे पास तार भेजनेकी भी जरूरत नहीं रही।

तुझे रुपया भेजनेके लिअे तो वापूने करमचंदको कल लिख ही दिया है। हम तीनों मजेमें हैं। तेरा पत्र डाह्याभाअीको भेज दिया है। अपनी तबीयतके समाचार क्यों नहीं भेजती?

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
बी क्लास प्रिजनर,
सेंट्रल प्रिजन,
वेलगांव

११०

य० मं०
२७–११–'३२

चि० मणि,

आज कलसे भी ज्यादा अच्छी खबर है। बुखार अुतरकर ९७॥ तक गया था। १०१॥ से ज्यादा नहीं बढ़ा। नींद अच्छी आती है।

तू अपने कर्तव्यमें निमग्न रहना।

वापूके आशीर्वाद

डाह्याभाअीके खर्चका बोझा सब मित्रोंने अुठा लिया है।

श्री मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
सेंट्रल प्रिजन,
वेलगांव

१११

यरवडा मंदिर,
३०–११–'३२

चि० मणिबहन,

आज डॉ० कानूगाका पत्र आया है। वह साथमें भेज रहा हूं। अिससे तुझे पता लग जायगा कि डाह्याभाअीकी चिन्ता करनेका कारण नहीं। बुखारके जानेमें तो अभी समय लगेगा, मगर अिसमें चिन्ता करने जैसी कोअी खास बात नहीं। हम तीनों आनंदमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन,
बी क्लास प्रिजनर,
सेंट्रल प्रिजन,
बेलगाव

११२

य० म०
६–१२–'३२

चि० मणि,

डाह्याभाअीका बुखार रविवारको बिलकुल अुतर जाना चाहिये था, मगर अुतरा नहीं। नॉर्मल तो होना है। परन्तु ९९–१०० तक चढ़ता है। अिसलिअे शायद अभी अिस हफ्ते तक और चले। डॉक्टरोंको अब कोअी चिन्ता नहीं रही। वे तो शक्तिके लिअे सेनेटोजन देने लगे हैं। और डेढ़ सेर दूध भी देते हैं, जो अच्छी तरह पच जाता है। अवालाल[1], ठक्कर[2], बा वगैरा अिन अेक दो दिनोंमें डाह्याभाअीको

---

१ सेठ अवालाल साराभाअी।

२ स्व० श्री अमृतलाल वि० ठक्कर (ठक्करबापा)। १९१४ से सर्वेण्ट्स ऑफ अिंडिया सोसायटीके सदस्य। हरिजन-सेवक-संघके बरसों तक मंत्री, १९४४ से १९५१ तक कस्तूरबा स्मारक-निधिके ट्रस्टी और मंत्री, गांधी-स्मारक-निधिके अेक ट्रस्टी।

देख आये। सब कहते हैं कि डाह्याभाओी आनंदमें हैं। किसीको नहीं लगता कि चार सप्ताहसे टाअिफाअिडके बीमार हैं। तू जरा भी चिन्ता न कर।

मेरा अुपवास[1] तो अब पुराना हो गया। 'टाअिम्स' से सब जान लिया होगा। अैसे अुपवास तो मेरे जीवनमें होते ही रहेंगे। अिसलिअे अिसे स्वाभाविक समझकर कार्य-परायण रहना। तेरा स्वास्थ्य अच्छा होगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
सेंट्रल प्रिज़न,
बेलगांव

११३

य० मं०
९–१२–'३२

चि० मणि,

यह मानकर कि तुझे बम्बअीसे नियमपूर्वक खबरें पहुंचती रहती हैं, मैं रोज लिखनेकी चिन्ता नहीं रखता। डाह्याभाअीके स्वास्थ्यमें सुधार होता ही जा रहा है। अभी दिनमें दो तीन घंटे थोड़ा बुखार रहता है। फिर भी शक्ति खूब आती जा रही है। आज ही देवदास आया है। वह डाह्याभाअीसे मिलकर आया है। वह कहता है कि डाह्याभाअी घोड़े जैसे लगते हैं। डॉक्टर खुराक बढ़ाते जा रहे हैं। अब दूध वगैराके

---

१. अप्पासाहब पटवर्धनने जेलमें भंगीका काम करनेकी अनुमति मांगी थी। वह अुन्हें नहीं दी गअी, अिसलिअे अुन्होंने बहुत थोड़ी खुराक लेना शुरू कर दिया था। पू० बापूजीको अिस बातका पता लगा तो अुन्होंने भी ३–१२–'३२ को सरकारके अिस रवैयेके खिलाफ अुपवास शुरू कर दिया। ता० ४–१२–'३२ को समझौता हो गया तो अुपवास छोड़ दिया।

सिवा सागका झोल भी दिया जाता है। और खूब आनन्दमें हैं। आज नटराजन[1] का पत्र आया है। उसमें भी अैसे ही अच्छे समाचार हैं। इसलिअे तुझे अब बिलकुल चिन्तामुक्त हो जाना है। तेरे लम्बे पत्रका उत्तर जरा अवकाश मिलने पर लिखाऊंगा।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन पटेल,
'बी' प्रिजनर,
सेंट्रल प्रिजन,
बेलगाव

११४

(य० म०)
३-१-'३३

चि० मणि,

आजकल मुझे अेक मिनटका भी अवकाश नहीं रहता। मेरा खयाल है कि अब रोजका पत्रव्यवहार बन्द कर दिया जाय। डाह्याभाअी अब बिलकुल अच्छे हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
सेंट्रल प्रिजन,
बेलगाव

११५

[बेलगाव जेलकी मेरी अेक साथी बहनके नाम पू० बापूजीके पत्रसे।]

३०-३-'३३

*

मणिका सुघडपन सरदारका अुत्तराधिकार है, यह मैं ही देख पाया। मणिकी सुघडता देखकर मोतीलालजी चकित हो गये थे। आश्रममें मैंने अुनकी कोठरी मोतीलालजीको दी तो बोल अुठे, "अैसी

[1] जी० ए० नटराजन, 'इंडियन सोशियल रिफॉर्मर' के सम्पादक।

सुधड़ता तो मैंने आनंद-भवनमें भी नहीं देखी।" अिसलिअे यह तो तू अुससे अच्छी तरह सीख लेना। जिस पर अुंडेले अुस पर अपनी सेवा अुंडेलनेकी भी अुसकी शक्ति अजीब है। अुसकी निडरता तो अैसी है कि तुम लोगोंमें से कुछ वालायें अुसकी स्पर्धा कर सकती हो। अिसलिअे अिस ओर ध्यान नहीं खींच रहा हूं।

*

बापूके आशीर्वाद

११६

य० मं०
४–४–३३[1]

चि० मणि,

पत्रोंकी तेरी शिकायत समझमें नहीं आती। तुझे पत्र नियमित लिखे ही जाते है। क्यों नहीं मिलते अिसकी अब जांच हो रही है। बापू लिखते थे अिसलिअे मैं लिखे विना काम चला लेता था। परन्तु कुछ न कुछ तो नीचे लिखाता ही था। किसी समय यह भी न हुआ होगा। अिसलिअे कुछ पता नहीं चलता। हम कोअी तुझे पत्र न लिखें तो तुझे दुखी होनेका जरूर अधिकार है और गुस्सा भी आयेगा। परन्तु तुझे यह मान ही लेना चाहिये कि कुछ भी कारण हो तो भी यह नहीं हो सकता कि तुझे पत्र न लिखा जाय। कोअी आकस्मिक बात हो गअी होगी, यह सबसे सीधा अनुमान है।

यहां सब मजेमें है। बापूकी संस्कृतकी पढ़ाअी फिर शुरू हो गअी है। यह तो नहीं कहूंगा कि धड़ाकेसे चल रही है, मगर काफी अच्छी चल रही है। जितना सीखा है अुतना तो याद रखनेका सतत प्रयत्न करते हैं। डाह्याभाअी लगभग हर सप्ताह मिल जाते हैं।

मेरे हाथका तो जैसा था वैसा ही हाल है। परन्तु कोअी बाधा नहीं पड़ती है। महादेवका स्वास्थ्य अच्छा है। छगनलाल (जोशी) का भी

१. जेलमें मिला ता० ८–४–३३ को; मुझे दिया गया ता० १५–४–३३ को।

अच्छा है। तुझे अच्छी पूनिया चाहिये तो यहासे भेजी जा सकती हैं। बहुत आती रहती है। तेरे विषयमें समाचार मृदुलाकी तरफसे मिले थे। कमलादेवीकी तरफसे भी और लीलावतीकी तरफसे भी। मालूम होता है सभी पर तूने अच्छी छाप डाली है। बा और मीरा बहन मजेमें हैं। मीराबहन हर हफ्ते पत्र लिखती हैं। काकासाहब आजकल यही हैं और हरिजन-पत्रोंके काममें सहायता देते हैं। पत्रोंके गुजराती, बगाली और हिन्दी सस्करण निकल रहे हैं।

बापूके आशीर्वाद

पुनश्च मैं अगले महीनेकी ४ तारीखको अपना पुण्य[1] क्षीण होने पर मृत्युलोकमें प्रवेश कर रहा हू।

म० (महादेवभाओी)

श्रीमती मणिबहन पटेल,
बी क्लास प्रिजनर,
सेन्ट्रल प्रिजन,
बेलगाव

११७

यरवडा मदिर,
२६-४-'३३

चि० मणि,[2]

तेरा पत्र २-३ दिन पहले ही मिला। तू कितना ही लम्बा क्यों न लिखे वह हमें लम्बा नही लगेगा। अितनी ही बात है कि यहासे और अुसमें भी मेरे पाससे बहुत लम्बे पत्रोंकी आशा तू रखती हो तो अुसे मैं पूरा नहीं कर सकता। तू आशा रखे यह तो मैं पूरी तरह समझ सकता हू। हमारे पास जो विविधता, जो सुविधायें, जो वैभव विद्यमान है, वे तुझे तो मिल ही कैसे सकते है? अिन सब सुविधाओंका

१ सजा।

२ यह पत्र आधा श्री महादेवभाओीके अक्षरोंमें और बाकीका भाग पूज्य बापूके अक्षरोंमें लिखा हुआ है।

अुपयोग केवल सेवाके लिअे न करते हों अथवा अुसीके लिअे ये सुविधायें पैदा न करते हों, तो हम अयोग्य सेवक साबित होंगे और अुससे भी अधिक अयोग्य बुजुर्ग साबित होंगे। सैकड़ों बच्चोंके मां-बाप होनेका दावा करके बैठ जाना और हवामें अुड़ते रहना जरा भी शोभनीय नहीं माना जा सकता। अिसलिअे हम आरामसे अिस वैभव अित्यादिका अुपयोग कर रहे हैं अिसकी अीर्ष्या तुझे या मृदुला जिस किसीको करनी हो पेट भरकर करते रहना। मीरावहनके बारेमें तूने अुलाहना दिया भी है और फिर वापस भी ले लिया है। वापका धर्म क्या है? जिन बच्चोंको जो चाहिये वह अुन्हें दे या सब बच्चोंको अेक जैसा देकर घोर अन्याय करे? और संसारके सामने या नासमझ बालकके सामने न्यायपरायण साबित होनेके प्रयत्नमें किसीके प्राण भी ले ले? तुझे तेरी बीमारी मिटानेके लिअे बाजरेकी रोटी और मक्खन निकाली हुअी छाछ देनी पड़े तो क्या भारती (साराभाअी) जैसी लड़कीको शहद, मक्खन और गेहूंके फुल्के देनेकी जरूरत होते हुअे भी बाजरेकी रोटी और छाछ ही दी जाय? बापका धर्म प्रत्येक बालकके श्रेयके लिअे जितना आवश्यक हो अुतना देना है। अिससे आगे बढ़कर श्रेयको हानि न पहुंचे अिस हद तक अधिक देनेकी भी अुसे छूट है। परन्तु अैसा करना अुसका फर्ज नहीं है। यह सब ज्ञान क्या तुझे आज देनेकी आवश्यकता है? परन्तु मुझे तो ज्यों ज्यों कागज भर देना है, अिसलिअे अितना अनावश्यक सयानापन दिखा रहा हूं। हम पर तुझे जरा भी गुस्सा नहीं आया तो फिर जी क्यों जला रही थी? अितनी कम श्रद्धा क्यों रखी? और तूने निश्चयपूर्वक क्यों नहीं मान लिया कि हम दोनोंमें से अेकका पत्र तो जरूर गया ही होगा? मैं अवश्य मानता हूं कि लिखा जा सके तो हम दोनोंको लिखना चाहिये। परन्तु जहां पत्र मिलनेके बारेमें ही अनिश्चय हो वहां अिस तरह लिखनेकी अुमंग बहुत नहीं रहती। किसी भी तरह अेक तो पहुंचेगा ही, यह समझकर अेक तो नियमित रूपमें लिखा ही जाता है। और आगे भी लिखा जाता रहेगा, यह तुझे विश्वास रखना चाहिये। तेरे पत्रका

ब्यौरेवार अुत्तर देनेकी जिम्मेदारी तो सरदारने ही ली है। अिसलिअे तेरे सन्देशों वगैरहका जवाब वे ही पहुचायेंगे। और ब्यौरेवार अुत्तर भी वे ही देंगे। कुछका जवाब देना तो मुझे अच्छा लगता है, परन्तु अपने अिस लोभका मैं संवरण कर लेता हू।

जानकी[1]का आपरेशन तो भूतकालकी वस्तु हो गअी। वह आश्रममें कभीकी चली गअी है और मजेमें है। बीचमें अुसे सरदी और बुखार हो गया था। परन्तु यह तो क्षणिक ही था। . . मिल गये।

के हाथ सभी जैसे हो गये हैं। . . अुसे फूलकी तरह सभाल रहा है। वह पति है, मित्र है, शिक्षक है, सेवक भी है। अुससे अधिक अच्छा पति विधाता भी नही ढूढ सकता था, अैसा अभी तो लगता है। . अुसके योग्य है या नही, सो तो दैव जाने। परन्तु अुसकी त्रुटिया मैंने स्वय शादी करानेसे पहले . के सामने रख दी थी, और यह लिख दिया था कि वह सम्बन्ध करना न चाहे तो निःसकोच सगाअी तोड सकता है। परन्तु . . के मातहत तालीम पाया हुआ अेक बार किये हुअे निश्चयसे कैसे डिगे? . . विवाहके अवसर पर सबने अुसे अपने प्रेमसे नहलाया था। सबने कुछ न कुछ भेंट दी थी। लबे समय तक अुन लोगोंको साज-सामान और कपडो पर खर्च भी करनेकी जरूरत नही रहेगी। अिसमे जितना सतोष मिले अुतना ले लेना।

हमारे दारोगा अब मुझे हमारे रहनेके बाडेमें ले जानेके लिअे आकर खडे हो गये हैं। अब ग्यारह बजेंगे, अिसलिअे अब अपने पिजडेमें जा रहा हू। स्नान आदि करनेके बाद फिर १२ बजे मुझे हरिजन-गृहमें ले आयेंगे।

(पू० बापूके अक्षरोंमें)

अितना बापूने महादेवसे लिखवाकर अभी मुझे दिया। अिसलिअे बाकीका मुझे पूरा करना है। तेरे पत्रकी सूची डाह्याभाअीको भेज

१. श्री लक्ष्मीदास आसरकी लडकी।

देता हूं। अिसलिअे पुस्तकों वगैराके जो सन्देश हैं वे अुन्हें मिल जायंगे। डाह्याभाअी पिछले सप्ताह आ गये थे। आनंदमें हैं। अब स्वास्थ्य पहले जैसा हो गया माना जा सकता है। बाबा मजेमें है। परीक्षामें पास हो गया। (अुस समय छह वर्षका था।) अिसलिअे अब पहली कक्षामें बाकायदा भरती कर दिया गया है। अब कुछ कुछ पढ़नेमें अुसका ध्यान लग रहा है। आज 'टाअिम्स' में फर्स्ट अेम० बी० बी० अेस० का परिणाम पढ़ा। अुससे मालूम होता है कि जीतू[1] पास हो गया। परन्तु अभी तो अैसी और चार परीक्षाअें हर साल देनी हैं। कल श्री सरलादेवी[2] का पत्र आया था। ता० २२ का अहमदाबादसे लिखा हुआ पत्र था। अुसमें वे लिखती हैं कि कल अर्थात् ता० २३-४-'३३ को मसूरीके लिअे रवाना होंगे। सारा परिवार जायगा। साथमें बिन्दु[3] और अुसकी मां भी जायंगी। श्री निर्मूवहन[4] बादमें जायंगी। सब बड़े आनंदमें हैं। अिस बार दोनों जनें चिन्ता नहीं करते, अिसका विश्वास दिलाते हैं। . . . अुन्हें कुछ कम चिन्ता है। अंबालालभाअीकी जिनेवा जानेकी बातें अखबारोंमें आ रही हैं। परन्तु अुनके पत्रमें अिस बारेमें कोअी अुल्लेख नहीं। अगले पत्रमें कुछ न कुछ पक्की खबर आयेगी। कमलादेवी दो दिन पहले बापूसे मिलने आअी थीं। वापस बम्बअी गअीं। . . .

देवदास भटकता भटकता कल बम्बअी आया है। कल यहां मिलने आनेवाला है। मथुरादास भी कल यहां आये थे। श्री जमनालालजी दो-तीन महीने अलमोड़ा रहने गये हैं। अुनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। डॉक्टरोंने पहाड़ पर जानेकी सलाह दी। जानकीदेवी भी साथ गअी

---

१. डॉ० कानूगाके पुत्र।

२. श्री अम्बालाल साराभाअीकी पत्नी।

३. श्री अिन्दुमती चिमनलाल सेठ। १९५२-१९५७ तक बम्बअी राज्यकी अुप-शिक्षामंत्राणी।

४. स्व० निर्मलाबहन बकुभाअी।

हैं। दुल (खुरशेदबहन) और अुनकी बहनें सब पन्द्रह दिनके लिअे कल महाबलेश्वर गअी हैं। अुनकी माका बड़ा आग्रह था अिसलिअे गअी है। ताजी होकर बादमें दो बहनें तो ठिकाने (जेलमें) पहुच जायगी ही। श्री जमनाबहन टाअिफाअिडमें पड़ी हैं। यशवतप्रसादके रोज पत्र आते हैं। और अब तो अच्छी तबीयत है, अैसा लिखते हैं। नदू-बहन तो तुमसे मिल गअीं। अिसलिअे क्या लिखू? अेक आख खो बैठी।[1] परन्तु वे तो बड़ी सतोषी और धीरजवाली हैं। लिखती हैं कि तुम्हारे साथ न हो सकनेका दुःख है।

हमारे पत्र देरसे मिले तो अिसकी चिन्ता न करना। पता नहीं कितने पत्र गुम हो गये। परन्तु यहासे तो अच्छी तरह गये दीखते हैं। आअिन्दा प्रत्येक पत्र रजिस्ट्रीसे ही भेजनेका निश्चय किया है। अिसलिअे तुरत पता लग जायगा। यह पत्र भी रजिस्ट्रीसे ही भिजवाया है।

दादा साहब[2] अभी तक रत्नागिरिमें ही हैं। वहा घरकी व्यवस्था कर ली है। सारा परिवार वहा पहुच गया है। बेचारे शरीरसे जर्जर हो गये दीखते हैं। कमू[3] अब तेरह वर्षकी हो गअी। प्रोप्रायटरीमें पढने जाती है। दादाका पत्र पिछले सप्ताहमें आया था। तुम दोनोंके समाचार पूछे है। महादेवभाअीका पुण्य (सजा) अब पूरा होने आया है। अगले महीनेके बीचमें फिर मृत्युलोकमें पहुच जायगे (छूटेंगे)। कितने समयके लिअे, सो तो अुनके पाप-पुण्य पर निर्भर है!

कल नडियादसे मणिभाअीका[4] २० तारीखका लिखा हुआ पत्र मिला। हीरा मामी[5] का २० तारीखको स्वर्गवास हो गया। अेक तरहसे

---

१ खुराकमें आवश्यक तत्त्वोकी कमीसे जेलमें नदूबहनकी आख जाती रही थी।

२ स्व० दादासाहब मावलकर।

३ स्व० दादासाहब मावलकरकी पुत्री।

४ पूज्य बापूके मामाके लडके।

५. पू० बापूकी मामी।

तो वे पीड़ासे छूट गयीं, क्योंकि बीमारी ऐसी थी कि जीनेसे मरना अच्छा था। फिर भी मनुष्य चला जाता है तब सगे-संबंधियोंको वियोगका दुःख होता ही है।

जिस बार तुम्हारा मन स्वस्थ रहता है, जिससे हम बहुत प्रसन्न हुये। ऐसा ही रहना चाहिये। यह तो हमारी सामान्य स्थिति हो गयी है। और धर्मका पालन करते हुये मनको जो शान्ति रहनी चाहिये वह न रहे तो यह माना जा सकता है कि कहीं न कहीं हमारी भूल हुयी होगी। शरीर भी नियमित आहार और सुन्दर जलवायुमें यथासंभव अच्छा रहना चाहिये। जो भी शारीरिक दुःख हो उसको सुधार लेनेका पूरा अवकाश यहां मिलता है। उसका सदुपयोग कर लेना चाहिये। बाहर हम शरीर पर समय या ध्यान बिलकुल नहीं दे सकते। यहां जितना समय देना हो उतना दिया जा सकता है। जो भी तकलीफ हो वह डॉक्टरको बताना चाहिये और जिलाज करा लेना चाहिये। मामूली कसरत भी करनी चाहिये। नियमित रूपमें रोज घूमना-फिरना चाहिये। बहुत पढ़ना न हो सके तो चिन्ता नहीं, परन्तु शरीरको संभालना चाहिये। यह बात तो तुम दोनों[1] पर लागू होती है। मेरी तबीयत अच्छी है। हमारी कोई चिन्ता न करना। हम तो जरूरतकी सब चीज जुटा सकते हैं और जो सुविधा चाहिये वह प्राप्त कर सकते हैं। जिसलिये हमारे बारेमें पूछनेका क्या है?

अब अगले मासके मध्यमें फिर पत्र लिखेंगे। तुम्हारा पत्र आ गया तो ठीक, वरना हम तो लिखेंगे ही।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
पी० आर० नं० १०२४९,
बेलगांव सेंट्रल प्रिजन, हिंडलगा

---

१. मैं और मृदुलाबहन।

११८

य० म०
६–५–'३३

चि० मणि,

पिछली बारकी तरह अिस बार भी तुझे रोज लिखा जा सकेगा और तू भी रोज लिख सकेगी। मैं चाहे रोज न लिख सकूं या लिखवा सकूं, परन्तु महादेव तो लिखेंगे ही। और सभव हुआ तो मेरे हस्ताक्षर करा लेंगे। यह पत्र तेरे और मृदुला दोनोंके लिअे है। येह भी महादेव ही लिख रहे हैं।

तुम दोनों वीर लडकिया हो। मैं मानता हू कि तुम कभी नहीं घबराओगी। मेरी जरा भी चिन्ता न करना। मैं समझता हू कि मेरा शरीर पिछले अुपवासकी तुलनामें अिस समय अधिक ताजा और समर्थ है। राजाजी[1] ने बहुत झगडा किया। आज शान्त होकर वापस जा रहे हैं। थोडे दिनमें लौटेंगे। वल्लभभाअी बडी शान्तिसे सब सहन कर रहे है और महादेवसे अुन्होंने प्रतिज्ञा की है कि मुझसे जरा भी बहस न करके सपूर्ण सहयोग — भले ही मौनमे — देंगे। यह वृत्ति मुझे प्रिय है। थोडे दिन तो वे अिस मौनको जरा कडी हद तक ले गये, अुनका विनोद सूख गया। परन्तु अब फिर फूटने लगा है।

यह अुपवास[2] अनिवार्य था। अिसका मूहूर्त्त यही था, अिसमें जरा भी शक नही। गणितके सवालकी तरह मैंने अिसका हिसाब

---

१ श्री राजगोपालाचार्य।

२ अस्पृश्यता-निवारणके लिअे समाज-शुद्धि तथा आत्मशुद्धिके यज्ञके रूपमें किया गया २१ दिनका अुपवास ता० ८–५–'३३ से २९–५–'३३। यह पत्र अुपवास शुरू करनेसे पहले यरवडा जेलमें लिखा गया था। बापूजीको अुपवास शुरू करनेके दिन ही शामको जेलसे छोड दिया गया था।

मिला लिया है। यह अुपवास किसीके विरुद्ध नहीं है। मुझे पता नहीं कि किस चीजसे आघात पाकर मैंने यह प्रतिज्ञा की। बहुतसी बातोंका जाने-अनजाने जरूर असर हो रहा था। परन्तु बात यह है कि मुझमें कहीं न कहीं अपवित्रता होगी। तभी तो मेरे साथ सम्बन्ध रखनेवाले हरिजन-सेवक कुन्दन जैसे नहीं हैं? और अस्पृश्यतारूपी राक्षस रावणसे भी बुरा है। रावणके दस मस्तक थे, अिसके सैकड़ों हैं। अिन सबका नाश संघोंसे नहीं होगा, करोड़ों रुपयोंसे नहीं होगा, हरिजनोंको अधिकार दिलानेसे नहीं होगा। सवर्ण हिन्दुओं और हरिजनोंको भाअीकी तरह मिलानेके लिअे अुनके हृदय बदलने चाहिये। अैसा विशाल आध्यात्मिक कार्य हमारे पास जितनी भी आध्यात्मिक पूंजी हो अुसे खर्च कर दें तभी हो सकता है। यह मार्ग तो पुराना है। राजमार्ग है। आज तक नहीं सूझा, यही आश्चर्य है।

दोनों शान्त रहना; और समय आने पर सहयोग देना। मेरे साथ अुपवास हरगिज न करना।

तुम दोनोंको
बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
हिंडलगा सेंट्रल प्रिजन,
बेलगांव

११९

य० मं०
(८-५-'३३)

चि० मणि,

तुझे शनिवारको पत्र लिखा है। तू जवाब भी रोज लिख सकती है। अिसमें मृदुका भी भाग है। कोअी बहन दुखी न हो। परन्तु सब अपनेमें जहां जहां मैल भरा हो अुसे निकालनेका प्रयत्न करें। कोअी न

कोओ यथासभव रोज लिखा करेगा। मै खूद शान्त हू। हम सब आनद कर रहे हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
हिंडलगा सेंट्रल प्रिजन,
बेलगाव

१२०

(पर्णकुटी,
पूना)
१५-९-'३३

चि० मणि,

नासिकसे (पूज्य बापूका) पत्र तुझे नियमित मिलता ही है, अिस कारण मैंने कुछ भी नही लिखा। अब देखता हू कि मैंने लिखा होता तो तुझे मिल जाता। खैर। अगर मै बाहर रहा तो जहा होअूगा वहा तू मुझे मिलने आ ही जायगी, यह मान लेता हू। मैं जानता हूं कि तू दो दिन बेलगावमें रहेगी। फिर नासिक तो जायगी ही। तेरा स्वास्थ्य अच्छा होगा। मै मजेमें हू। आज बम्बअी जा रहा हू। २१ ता० को अहमदाबाद। २३ ता० को वर्धा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
सेन्ट्रल प्रिजन,
हिंडलगा,
बेलगाव

१२१

(वर्धा)
२९–९–'३३

चि० मणि,

तेरा कार्ड मिल गया। तुझे जब तक रहना पड़े तब तक रहकर अच्छी होकर आना। बापूका पत्र मुझे भी मिला है। उससे मालूम हुआ कि उनके साथ आजकल चन्दूभाओी[1] हैं।[2] बहुत ठीक हुआ। मुझे पत्र लिखती रहना। डाह्याभाओीसे कहना कि मैंने करमचन्दको जवाब दिये हैं। मैं अच्छा हूं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
रामनिवास, पारेख स्ट्रीट,
सैण्डहर्स्ट रोड,
बंबओी – ४

१२२

वर्धा,
७–१०–'३३

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। जहां मिलना हो वहां फुरसत लेकर आना। परन्तु अिसका यह अर्थ न करना कि अगले युगमें भी आये तो हर्ज नहीं। बाबाको जरूर साथ लाना। अुसे अच्छा लगेगा। मैं अच्छा होता जा रहा हूं, अर्थात् शक्ति आती जा रही है। मैं यहां ७ नवम्बर तक हूं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बंबओी – ४

---

१. डॉ० चन्दूलाल देसाओी।
२. पूज्य बापू नासिक जेलमें थे तबका जिक्र है।

१२३

वर्धा,
२२–१०–'३३

चि० मणि,

तेरा कार्ड मिला। तुम तीनों[1] की राह बुधवारको देखूंगा। बाबा आयेगा न? तू अच्छी होती जा रही होगी। स्वामी आज पहुंचे हैं। शेष सारी बातचीत बुधवारको होगी।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
ठि० श्री डाह्याभाओ वल्लभभाओ पटेल,
पारेख स्ट्रीट,
मैण्डहर्स्ट रोड,
बंबओ – ४

१२४

वर्धा,
४–११–'३३

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। डाह्याभाओ काफी जूझ रहे हैं।[1] जहां गंदगी अथवा कृत्रिमता पाओ जाय वहां भले ही लगातार जूझते रहें। तेरी देखभाल अच्छी तरह हो रही होगी। मुझे नियमित लिखती ही रहना। बाबा यहां आ गया यह तो बहुत अच्छा हुआ। बा तेरे जानेके बाद (जेल जानेके लिअे) निकलेगी। अुसके लिअे तैयारी तो कर रखनेकी जरूरत है ही।

बापूके आशीर्वाद

---

१ मृदुलाबहन, डाह्याभाओका ६ बरसका लड़का और मैं।

२ स्व० विट्ठलभाओका शव जहाजमें आ रहा था। अुन दिनों अिस बारेमें बंबअीमें बड़ी खटपट और चर्चा हो रही थी कि अुसका अग्नि-संस्कार कहां और किस ढंगसे किया जाय।

चि० मणि,

डाह्याभाओकी क्या हाल है यह मैं नहीं जानती। अुन्हें मेरे आशीर्वाद और वावाको भी। तू जव वल्लभभाओको पत्र लिखे तव मेरे आशीर्वाद लिख देना। मेरे वारेमें वापूजीने लिख दिया है अिसलिअे मैं नहीं लिख रही हूं। यहां सव मजेमें हैं। वहांके (समाचार) लिखना। यहां वापूजीसे मिलने वहुत लोग आते हैं। आज शंकरलाल[1] आये हैं।

वाके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
ठि० श्री डाह्याभाओ वल्लभभाओ पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट, सैण्डहर्स्ट रोड,
वम्वओ

१२५

वर्धा,
५-११-'३३

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। मैंले वातावरणको डाह्याभाओ काफी शुद्ध कर रहे हैं। मेरा वहां आना नहीं होगा। मुझे व्यौरेवार लिखती रहना। वा कदाचित् यहांसे १३ तारीखको चलेगी। मुझे नागपुरका काम पूरा करके[2] यहां लौट आना है। अितने समय यहां रह जानेका वह लोभ रखती है। अहमदावादमें रणछोड़भाओ[3]के यहां रहेगी अैसा मानता हूं, अथवा लाल वंगला तो है ही। यह तो मुझे देखना होगा।

१. श्री शंकरलाल वैंकर।

२. अुस समय मध्यप्रान्तमें पू० वापूजी हरिजन-यात्रा करनेवाले थे। अुसीका अुल्लेख है।

३. अहमदावादके श्री रणछोड़भाओ सेठ।

तू कुछ कहना चाहती है? पैरका अिलाज जितना हो सके अुतना तो करना ही। बिना सोचे-समझे अुतावली न करना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन,
ठि० श्री डाह्याभाजी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बअी – ४

१२६

नागपुर,
९–११–'३३

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। तूने मुझे सब साफ लिखा, यह समझदारी की है। अैसा ही करती रहना। तू नहीं लिखेगी तो कौन लिखेगा? डाह्याभाअीको गलतफहमी हुअी और गुस्सा आया, यह आश्चर्यकी बात है। मगर अुनका खयाल न करना। अुन्हें शायद सारी बात मालूम भी न हो। अुन्हें दुःख हो, जिसे समझ भी सकता हूं। तू ही जितना समाधान हो सके अुतना करना। तू चाहे तो मैं अुन्हें लिखूं और अुनका दुःख मिटाअूं। मुझे यह ज्यादा अच्छा लगेगा। यह पत्र भी तू अुन्हें पढ़ाना चाहे तो पढ़ा देना।

वा मंगलवारको वर्धा छोड़ेंगी। थोड़े समय अर्थात् कुछ घंटे अकोला रहेंगी। फिर अुधर आवेंगी। वा अिस समय कुछ दुविधामें है। चिन्तित भी है, फिर भी (जेल) जानेका निश्चय अुसने अपने आप ही प्रगट किया है। तू अुसे अच्छी तरह दृढ़ करना।

तू अच्छी तरह खा-पीकर शरीरको यथासंभव सुधार लेना। मुझे नियमित लिखती रहना। बिजलीका अिलाज आवश्यक हो अुतना लेना ही। अहमदाबादमें भी लिया जा सकता है। दांतोंका क्या किया?

शनिवारको जवाहरलाल वगैरा वर्धा आयेंगे।

मृदु अिलाहाबादमें क्या कर आअी? सन्तोष ले कर आअी? अुसे लिखनेको कहना। दांतोंका अुसने क्या किया? सरलादेवी (अुसकी माता) के और समाचार हों तो लिखना।

नागपुरमें बहुत अच्छी सभा हुअी थी। आरंभ तो अच्छा हो गया। वहांकी श्मशान-क्रिया[1] के समाचार लिखना।

वर्धा ही लिखना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
ठि० डाह्याभाअी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बअी – ४

१२७

चांदा,
१४–११–'३३

चि० मणि,

तेरा लम्बा पत्र मिला। तूने लिखा सो अच्छा किया। मेरे सामने तू परदा रखेगी तो तेरा दुर्भाग्य ही होगा। अवश्य ही मनुष्यके मरते समय हम अुसके दोषोंको याद न करें। हम अुसके गुणोंका ही स्मरण करें। मेरे अुपस्थित न रहनेका अुनके व्यवहारके साथ कोअी सम्बन्ध नहीं। अुनके गुण मैं नहीं पहचान सका सो बात नहीं। मैं वहां अिसलिअे नहीं आ सका कि मैं कहीं किसी दूसरे कार्यक्रममें शामिल नहीं हो सकता था। आजकल या तो मैं यरवडामें शोभा देता हूं या हरिजन-कार्यमें। हरिजन-कार्यके खातिर ही मैं बाहर हूं, यह केवल सरकार या जनताको कहनेके लिअे नहीं, परन्तु मेरे हृदयमें भी यही चीज है। दूसरे काममें मैं पड़ ही नहीं सकता। मालूम

१. श्री विट्ठलभाअीकी श्मशान-यात्रा और अग्नि-संस्कार।

होता है लोग भी यह चीज समझने लगे हैं। मुझसे सरकारके अकुश सहन न होने, मैं अपने ढगसे कुछ कर न पाता। मैं तेरा या डाह्याभाओका पथप्रदर्शन न कर सकता था। अिसलिअे मैं मन मारकर बैठा रहा। अिसके सिवा मेरे जीवनमें दूसरी बात भी है। यह भी तू जान ले। रसिक (गावी) मृत्युशय्या पर था, वह चाहता भी रहा होगा कि मैं अुसके पास पहुचू। परन्तु मैं दिल्ली नही गया, वा गअी। रसिक मर गया। मैंने आसू तक नही बहाया। मैं खा रहा था तब तार आया। खाना खतम किया और अपने काममें लग गया! मेरे जीवनमें अैसी घटनाअें बहुत हुअी हैं। मौतके बारेमें मैंने कुछ विचार बना रखे हैं, वे दृढ होते जा रहे हैं। मैं मृत्युको भयानक चीज नही समझता। विवाह भयानक हो सकता है, मृत्यु कभी नही। अिससे तेरी शकाका समाधान हो जाता है? न हो तो मुझे फिर पूछना।[1]

वहाका वर्णन तूने बढिया किया है। बडा दु खद है। लोगोंका प्रेम समझने लायक है। यह प्रेम व्यक्तिके प्रति नहीं है, परन्तु जो चीज लोगोंको चाहिये अुसे जिस व्यक्तिमें वे मानते हैं अुसीके लिअे वह प्रेम है। अिसलिअे यह बडी निर्मल वस्तु है। यह लोक-जागृतिकी सूचक वस्तु है, दुनियाकी आखें खोलनेवाली है। विट्ठलभाअी स्वतत्रताके पुजारी थे, अिस बारेमें कोअी शका कर ही नही सकता।

अब बाके बारेमें। मुझे समय होता तो मैं अुस पत्रमें अधिक समझाता। बाका दिल कमजोर हो गया है। वह मदिर (जेल) जाना चाहती भी है और नहीं भी चाहती। भीतर ही भीतर वह जेल जानेका धर्म समझती है, अिसलिअे अुसे छोड नहीं सकती, मगर मैं बाहर हू अिसलिअे अुसे अन्दर जाना अच्छा नही लगता। मैंने कोअी आग्रह नहीं किया। अुसकी मरजी पर छोड दिया है। मेरे लिखनेका आशय यह था कि तू अुसे धर्म-पालनमें दृढ बनाना और समझाना। तुझ पर अुसे

---

१ श्री विट्ठलभाअीकी श्मशान-यात्रामें भाग लेने पू० बापूजी नहीं गये। अुसीके कारण अिस पत्रमें समझाये गये हैं।

आस्था और प्रेम है। मैं कुछ भी कहूंगा तो वह हुक्मके रूपमें माना जायगा और वा दव जायगी। अिसलिअे कुछ नहीं कहता। नहीं कहता, अिसका अर्थ भी वा तो अेक ही करती हैं कि अुसे जेल जाना ही चाहिये।

तेरे दांतोंकी और पैरकी वात समझा। जैसा डॉक्टर कहते हैं वैसा ही करना। थोड़ी राह देखनी ही पड़े तो हठ करनेकी जरूरत नहीं। डाह्याभाअीको लिख रहा हूं।

पत्र वर्धा ही लिखना।

वापूके आशीर्वाद

मणिवहन पटेल,
रामनिवास,
सैण्डहर्स्ट रोड,
वम्वअी–४

१२८

(चिखलदा)
१९–११–'३३

चि० मणि,

तू अपने और कुटुम्वियोंके विचार मेरे सामने अुंड़ेल रही है, यह वड़ी समझदारीकी वात है। डाह्याभाअी या गोरधनभाअीके मनमें मेरे वारेमें जरा भी गलतफहमी हो, यह मुझे असह्य प्रतीत होता है। तू वम्वअीमें होगी तव तो गोरधनभाअीके नाम लिखा हुआ पत्र पढ़ ही लेगी। अुस परसे तुझे कुछ लिखना हो तो लिखना।

मेरा पत्र तो तुझे मिला ही होगा। अखवारोंमें कुछ लिखनेकी जरूरत नहीं मानता। अखवारवाले मुझे न समझें या जान-बूझकर गलतफहमी फैलायें, तो अुसका जवाव देनेकी मुझे हमेशा जरूरत दिखाअी नहीं देती। परन्तु तुम भाअी-वहन चाहो तो मैं जरूर दूंगा। मेरी स्थिति विलकुल साफ है। डाह्याभाअी जो कहता है अुसमें काफी तत्व है। दास वगैराके चरित्रमें दोष जरूर वताये जा सकते हैं। दोषरहित

कौन है? परन्तु मेरे न आनेके साथ विट्ठलभाईके दोषोंका कोई सबंध नहीं। जो आदर दूसरे नेताओंने पाया है वह पाने लायक विट्ठलभाई भी जरूर थे। अुनका त्याग, अुनकी लगन, अुनकी कुशलता, कांग्रेसके प्रति अुनकी वफादारी, ये सब गुण दूसरोंसे अुनमें कम हरगिज नहीं थे।

तेरी अपनी अुदारता मुझे चकित कर रही है। यह तेरी ही विशेषता नहीं है, जिसे समझ लेना। मैंने यह चीज असंख्य स्त्रियोंमें देखी है। स्त्रियां अपने प्रति हुअे दुर्व्यवहारको भूल जानेके लिअे हमेशा तैयार रहती हैं। अिस गुणसे स्त्रीजाति सुशोभित हुअी है। परन्तु स्त्रीके अिस गुणका पुरुष जातिने खूब दुरुपयोग किया है। परन्तु यह तो विषयान्तर हो गया। मेरी दृष्टिसे अब तू सुशोभित हो रही है, अिसका मैं गर्व कर सकता हूं न?

वर्धा लिखना।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल,
रामनिवास,
सैण्डहर्स्ट रोड,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बअी–४

१२९

कडखा,
२–१–'३४
सुबहके ४ बजे
प्रार्थनासे पहले

चि० मणि,

तेरे समाचार अब सीधे मिलेंगे या नहीं, यह प्रश्न है। सरदारकी ओरसे मिलते हैं। अितनेसे सन्तोष नहीं हो सकता। डाह्याभाअीसे पुछवाता हूं। तू लिख सके तो लिखना। शरीर और मन अच्छा

रखना। मेरा तो ठीक चल रहा है। वाको हर हफ्ते नियमित और लम्बे पत्र लिखता हूं। आज तो अितना ही।

पता वर्वाका लिखना।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
प्रिजनर,
हिंडलगा सेन्ट्रल प्रिज़न,
वेलगांव

१३०

(कानपुर)
२३-७-'३४

चि० मणि,

तू ठीक नियमसे लिखती रहती है। अिसी तरह लिखती रहना। मेरे पत्रकी आशा न रखना। महादेव है अिसलिअे मैं कुछ पत्र लिखनेसे वच जाता हूं। अव सरदारको भी लिखनेकी जरूरत नहीं रहती। तेरी तरह मैं भी मानता हूं कि तेरा वहां रहना ही तेरे लिअे सुन्दर औपधि है।

शायद अव तो जल्दी ही मिलेंगे।

वापूके आशीर्वाद

पुनश्च: साथका पत्र तेरे ही नाम भेज रहा हूं, अुसे वापूको तुरन्त पहुंचा देना। तूने भास्करवाली वात कहकर वापूको काफी भड़का दिया। अैसे तो मैंने कअी लोगोंके साथ वातें की थीं। परन्तु मैं अकेला कहां हूं? मेरे साथ कोअी नहीं तो वेलावहन और दो लड़कियां तो है ही। अिसलिअे हमारा सवाल विलकुल आसान नहीं है। वर्धामें सारा निश्चय होगा, अैसी आशा रखें।

१३१

(कानपुर)
२५-८-'३४

चि० मणि,

तेरी दो पंक्तियां पढ़ीं। तू आजकल नहीं लिखती, यह बिलकुल ठीक है। स्वास्थ्यकी लापरवाही न करके उसे अच्छी तरह सुधार लेना। लिखने योग्य हो तब तो अच्छी तरह लिखना ही। अब मुझ पर बहुत दया करनेकी बात नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

१३२

वर्धा,
३१-१०-'३५

चि० मणि,

तू बीमार क्यों पड़ती रहती है? पितृभक्तिका यह अर्थ तो नहीं करती कि पिता बीमार पड़े तो तू भी बीमार हो जाय? माता-पिता अपंग थे तब श्रवणने अपना शरीर वज्र जैसा बनाया और अपने कंधे पर कावर रखकर दोनोंको यात्रा कराई थी। किंग लियरकी लड़कीने खुद तंदुरुस्त रहकर पिताकी सेवा की थी। तू क्यों बुढ़िया जैसी बन कर बैठी है? अपच न हो तो बुखार और बुखार न हो तो सरदी, कुछ न कुछ तो रहता ही है। अिसका कारण ढूंढ कर वज्र जैसी काया क्यों नहीं बना डालती?

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल,
८९, वॉर्डन रोड,
बम्बअी

१३३

वर्धा,
१२-११-'३५

चि० मणि,

अिसके पीछेका भाग बापूको पढ़ा देना। अैसी खबर है कि जवाहरलालके व्यवहारसे सब बहुत खुश हो गये थे।

बापू मजेमें होंगे। वे डॉक्टरोंको हंसाते होंगे[1]। तू अपने स्वास्थ्यके विषयमें गाफिल न रहना।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल,
८९, वॉर्डन रोड,
बम्बअी

१३४

(कानपुर)
२६-८-'३७

चि० मणि,

केवलरामं[2]का पत्र तो तूने जो वापस दिये अुन्हींमें था। मुझे पता नहीं कि तारका पहला भाग नहीं था। अब दोनों अिसके साथ भेजता हूं। आज मीरावहन दिल्लीसे आनेवाली गाड़ीम ६-८ पर आ रही है। राजकुमारी कल सुबह बम्बअीसे आ रही है।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके पास,
बम्बअी

---

१. अुस समय पू० बापूकी नाकका ऑपरेशन कराया गया था।
२. स्व० केवलराम। अेक आश्रमवासी।

१३५

डेरा इस्माअीलखा,
२८-१०-'३८

चि० मणि,

कअी वर्षोंमें तुझे मेरे नाम पत्र लिखना पडा है। काफी खबरोंसे भरा है। अिसी तरह लिखती रहना। नासिककी सिपाही-शाला[1] सम्बन्धी खबरको सच मानकर मैंने टिप्पणी लिखी है। तू खेर या मुन्शीसे मिले तो बात भी करना।

वहांका अधिकारी वर्ग यदि मद्य-निषेधके काममें दिलसे सहयोग न दे, तो मन्त्रियोंको गवर्नरसे दृढताके साथ कहना चाहिये। अुनका दिल अिस काममें नहीं, यह विश्वास होना चाहिये।

जमीनोंके बाबत तो वल्लभभाअीका पत्र आया, अुसके पहले ही मैं लिख चुका था। अिस सम्बन्धमें विधान-सभामें हुअी चर्चा[2] मुझे भेजना।

अश्लील साहित्यके बारेमें कदम अुठाये ही नहीं जा सकते, यह मैंने नहीं कहा। अपनी राय जरूर दी। मुझे यह अन्देशा जरूर है कि लोगोंको गंदगी अच्छी लगती है, अिसलिअे वह अेकाअेक दूर नहीं होगी। विद्वानोंको ही घिन आये तब वह बन्द हो। मैं तो मानता हूं कि अश्लील लेख वगैरा कानूनसे बन्द हो सकते हों तो अुन्हें अुस तरह बन्द करनेका प्रयत्न होना चाहिये। परन्तु अितना याद रख कि विद्यार्थीको अैसी चीजें पढनेको मजबूर करनेमें और अखबारोंमें गंदे लेख छापनेमें बडा फर्क है।

---

१ नासिक जेलमें पुलिस ट्रेनिंग स्कूल (थानेदारोंको तालीम देनेवाली पाठशाला) है। वहां तालीम पानेवाले अुम्मीदवारोंको शामके भोजनमें शराब दी जाती है, अैसा मैंने सुना था और अुसके बारेमें पू० बापूजीको खबर दी थी।

२ सूरत और बारडोलीकी जो जमीनें सरकारने जब्त कर ली थी और दूसरोंको बेच दी थीं, अुन्हें खरीदारोंसे वापस लेकर असल मालिकोंको सौंपनेके बारेमें विधान-सभामें विधेयक पेश हुआ था, अुस पर हुअी चर्चा।

राजकोटका[1] मामला अद्‌भुत है। जो हो रहा है वह टिका रहेगा तो लोग मुंहमांगा ले सकेंगे, अिसमें सन्देह नहीं। त्रावणकोर[2]के बारेमें बापूने ठीक किया है। रामचन्द्रन्‌को बुलाकर अच्छा किया। यद्यपि बापूका पत्र आया अुससे पहले मैं अपना बयान[3] तो प्रकाशित कर चुका था। मेरा खयाल है कि मुझे बयान देना ही चाहिये था। अब तुरन्त त्रावणकोर जानेकी बात नहीं रहती।

नाकमें से पानी गलेमें टपकता रहे, यह बिलकुल अच्छा नहीं कहा जा सकता।[4] अिसे मिटाना ही चाहिये।

बड़ोदेकी बात समझा। भादरणमें[5] जो कुछ हो वह बताना।

मैं १५ तारीखके आसपास वर्धा पहुंच जानेकी आशा रखता हूं। यहांका काम ९ तारीखको पूरा होगा।

---

१. राजकोट सत्याग्रहका प्रारम्भ अिस समय हुआ था।

२. त्रावणकोर राज्यमें राज्यके विरुद्ध सत्याग्रह हो रहा था। अुस समयके दीवान सर सी० पी० रामस्वामी अैयरने पू० बापूको त्रावणकोर बुलाया था। अुन्होंने जवाब दिया था कि यदि मुझे जेलमें बन्द सत्याग्रहियोंसे मिलने दिया जाय तो मेरा वहां आना सार्थक होगा।

३. अिस बयानमें अुन्होंने त्रावणकोरके विद्यार्थियोंके अुपद्रवका अुल्लेख करके अुन्हें मन, वचन और कर्मसे अहिंसाके पालनका आदेश दिया था और लड़ाअी चलानेवालोंसे यह विचार करनेको कहा था यदि वे हिंसाकी शक्तियोंको काबूमें न रख सकें तो लड़ाअीके हितमें ही सविनय कानून-भंग स्थगित करनेमें समझदारी है या नहीं। सम्पूर्ण वक्तव्यके लिअे देखिये 'हरिजनसेवक', ता० २२–१०–'३८, पृ० २८७।

४. पूज्य बापूको तेज जुकाम होता था तब नाकका पानी गलेके भीतर अुतर जाया करता था।

५. भादरणमें बड़ोदा राज्य प्रजा-मंडलके १९३८ के अधिवेशनके पू० बापू अध्यक्ष थे।

६. अुस समय पू० बापूजी सरहद प्रान्तके प्रवासमें थे। अुसीका अुल्लेख है।

सुभाषबाबूके बारेमें जो हो रहा है वह मेरे ध्यानमें है। अिसीलिअे मैंने कार्य-समितिमें थोडीसी चर्चा तो की थी। परन्तु बापूकी राय यह रही कि जवाहरलालके आने तक राह देखें। अिसलिअे मैं चुप रहा। अिस बार अध्यक्षके चुनावमें कठिनाअी तो होगी ही। मैंने 'हरिजन' में जो सुझाव दिया है अुस पर बापू विचार करे। मेरी राय है कि जैसा हो रहा है वैसा होने देनेमें हानि है।

अब दोनों पत्रोंके अुत्तर आ गये। बापूको फुरसतमें पढ़ा देना।

मेरा स्वास्थ्य सचमुच ही अुत्तम रहता है। बापूको अिस प्रान्तमें आना चाहिये। मौलानाको साथ लेकर।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाअुसके सामने,
बम्बअी

१३६

सेगाव-वर्धा,
२८-११-'३८

चि० मणि,

तेरा पत्र मिल गया। अितने कामोंमें तू लिख सकेगी, यह आशा नहीं रखी थी। दूर बैठा बैठा तेरे पराक्रम[1] देख रहा हूं। तू पुण्यशाली है। तेरी हिम्मतके बारेमें मेरे मनमें कभी शंका नहीं थी। तू जेलमें यथासंभव न जाना। यह काम राजकोटवालोंका है।

तेरा शरीर ठीक रहता होगा।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल,
तारधरके पास,
राजकोट

---

१ राजकोट सत्याग्रहके समय पूज्य बापूने मुझे राजकोट भेजा था। यह पत्र वहांके पते पर लिखा गया है। बादमें मुझे वहां गिरफ्तार कर लिया गया था।

१३७

सेगांव-वर्धा,
५-१२-'३८

चि० मणि,

तेरा वर्णन वढ़िया है। तेरे कामका क्या पूछना? तू मेरा कहना मानकर शरीरमें तेल मलवाना[1] अथवा स्वयं मलना। जो सिपाही अपना शरीर स्वस्थ नहीं रखता वह सजाका पात्र होता है। अैसा ही होना चाहिये।

लोग अहिंसाका पाठ समझ गये हों और मारपीट वगैरा सहन कर लें, तो अुनकी हार होती ही नहीं। महादेव[2] यहीं हैं। मजेमें हैं। जानबूझ कर कम लिखते हैं। अिस वार 'हरिजन' में वहुत लिखने दिया है। अैसा वार-वार नहीं होने दूंगा। कुछ भी जिम्मेदारी न होना अच्छा है। आजकल मेरा स्वास्थ्य तो ठीक ही है।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
तारघरके पास,
राजकोट

१३८

सेगांव-वर्धा,
२२-१२-'३८

चि० मणि,

तू और मृदुला ठीक मिली हो। तेरे दोनों पत्र मिल गये। आराम अच्छी तरह लेना। तू कातती है यह वहुत अच्छा है। खुराक वगैराका हाल लिखा जा सकता हो तो लिखना। मृदुला समय किस तरह वितातो है?

---

१. सूखी हवा और ठंडमें वच्चोंके गाल फट जाते हैं और खून निकलने लगता है। राजकोटकी सूखी हवा और ठंडमें मेरे सारे शरीरकी लगभग यही हालत हो गअी थी।

२. श्री महादेवभाअीको अुस समय रक्तचाप काफी रहता था।

महादेव कलकत्तेके पासकी गोशाला देखने ४ दिनके लिअे गये हैं। २४ ता० को आ जानेकी संभावना है। मेरा स्वास्थ्य अच्छा रहता है। बाकी वहा आनेकी अिजाजत[1] तो अभी नहीं मिली। कन्या गुरुकुलके लिअे देहरादून जा रही हैं। मैं पहली जनवरीको बारडोली जा रहा हू। तुझे और मृदुलाको

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
स्टेट जेल,
राजकोट (काठियावाड)

१३९

सेगाव वर्धा,
१६-२-'३९

चि० मणि,

तेरा लम्बा पत्र और और दूसरे पत्र मिल गये। तूने जो जो कदम[2] अुठाये अुनसे मैं तो मुग्ध हो गया हू। कहीं दोष निकालने जैसी बात नहीं। मैं देखता हू कि तू सत्याग्रहका शास्त्र अच्छी तरह समझ गअी है। अिसलिअे बिलकुल निश्चिन्त हू।

१ पूज्य बापू अिजाजत देते तभी बाहरका कोअी आदमी लडाअीके लिअे राजकोट जा सकता था।

२ पूज्य बाको और मुझे पकडकर स्टेशनसे सीधे सणोसराके डाक-बगलेमें ले जाकर रखा गया था। वह मकान सूना पडा था और वहा कोअी सुविधा नहीं थी। वहा पहुचनेके बाद पूज्य बाकी तबीयत बिगड गअी। दूसरे दिन मुझे राजकोटके जेलमें हटा दिया गया। मैंने जब तक पूज्य बाके साथ मुझे या राजनीतिक कैदियोंमें से पूज्य बाकी देखभाल कर सकनेवाली किसी बहनको न रखा जाय तब तक खाना लेनेसे अिनकार कर दिया। अिस बीच पूज्य बाको सणोसरासे अम्बा हटा दिया गया था। तीसरे दिन मुझे भी अम्बा ले गये। वहा पहुचनेके बाद पूज्य बाने मुझे खाना खिलाया। मृदुलाको पकडकर अम्बा लाये तो हम तीनो साथ हो गये।

मुझे राज्यकी ओरसे रोज तार नहीं मिलता। दो तीन आये थे। यहांसे रोज पत्र गये हैं। पहले तू बताती थी अुस पते पर लिखे थे। फिर मैंने राज्यसे शिकायत की कि मेरे पत्र क्यों नहीं मिलते, तब मुझे तार दिया गया कि पत्र फर्स्ट मेम्बरके मारफत भेजे जायं। अब मैं वैसा ही करता हूं।

तुम्हारी तरफसे तो रोज मिलते ही हैं। अिसलिअे शान्ति है।

मृदुको अलग नहीं लिखता। वह चिन्ता न करे। क्या वहांका भार कम है जो वह कांग्रेसका अुठायेगी?

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन पटेल,
स्टेट प्रिजनर,
ठि० फर्स्ट मेम्बर ऑफ दि कौन्सिल,
राजकोट (काठियावाड़)

१४०

सेगांव,
१८-२-'३९

चि० मणि और मृदुला,

तुम दोनों वहां हो यह अीश्वरका अनुग्रह है। तुम तीनों सबके साथ हो यह मुझे अच्छा लगता है। परन्तु अीश्वर जैसे रखे वैसे रहना है।

सुभाषबाबू वगैराके बारेमें तुम्हें कुछ विचार करनेका नहीं है। अिसके लिअे तो तुम जेलमें ही हो। अीश्वर मुझे जैसी सूझ देगा वैसा करता रहूंगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
कैदी,
फर्स्ट मेम्बरके मारफत,
राजकोट

१४१

राजकोट,
५-३-'३९

चि० मणि,

तू क्यों परेशान होती है? ये अनुभव क्या तेरे लिअे नये हैं? अिस मामलेमें तो तू मेरी आशासे आगे बढ़ गअी है। मैं अपने आप आया हूं। धर्म समझकर आया हूं। अीश्वरकी प्रेरणासे आया हूं। जरा भी दुःखी न होना। आजकल किसीको पत्र नहीं लिखता। अेक बाको लिखा था, वह तुझे लिख रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
कैदी,
फर्स्ट मेम्बरके मारफत,
राजकोट

१४२

सेवाग्राम-वर्धा,
४-५-'४०

चि० मणि,

तेरे भेजे हुअे आकड़े अच्छे हैं। मुझे पत्र लिखनेकी अपेक्षा तू काते तो अधिक अच्छा।

बापूसे पूछना कि वे अेक हजार मैं अुन्हें भेजूं या सीधे पृथ्वी-सिंहको। बापूकी तबीयत कैसी रहती है?

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन,
मारफत सरदार पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१४३

सेवाग्राम-वर्धा,
१३–६–'४०

चि० मणि,

यहां आओ तब बलवंतसिंह[1] के लिअे अेक अलार्मवाली घड़ी लेते आना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
मारफत सरदार पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१४४

सेवाग्राम-वर्धा, सी. पी.
७–५–'४१

चि० मणि,

नंदूबहन (कानूगा) तेरी खूब शिकायत कर रही थीं। कहती थीं, हठ करके शरीरको गला रही है। अच्छी तरह खाती नहीं। मैं जिन्हें हारनेके लक्षण मानता हूं। सत्याग्रही अपना शरीर अच्छा ही रखता है। अिसलिअे मेरी खास सिफारिश है कि तू शरीरको सुधार।

सब बहनोंको आशीर्वाद। वहांके कामके समाचार मिलते ही रहते हैं।

मेरा स्वास्थ्य अुत्तम रहता है। बा दिल्लीमें है। बहुत दुबली हो गअी है।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
यरवडा सेण्ट्रल प्रिजन,
यरवडा

---

१. वहांके अेक आश्रमवासी।

१४५

सेवाग्राम-वर्धा, सी पी,
१९–५–'४१

चि० मणि,

तेरा पत्र आज मिला। आशा तो रखता हू कि यह तुझे जेलमें ही मिलेगा। अेक पत्र मैंने तेरे लिअे डाह्याभाअीको भेजा है। यह अच्छी खबर है कि तूने अपने स्वास्थ्यको सभाला है।

छूटने पर तुझे थोडे समय बम्बअी रहना हो तो वहा रहकर मेरे पास आ ही जाना। अहमदाबाद[1] के बारेमें मृदुला और गुलजारी-लाल[2] आये है। यही हैं। बातें हो रही हैं। बापूको या तुझे जेलमें बैठकर अैसी बातका विचार ही नही करना चाहिये। अधिक लिखनेकी जरूरत नही। जमनालालजीके बारेमें चिन्ताका बिलकुल कारण नही। सब ठीक हो रहा है। मनु त्रिवेदी[3] भजेमें है। वा थोडे दिनोमें दिल्लीमे आ जायगी। लीलावती (आसर) अुनके साथ है।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
यरवडा सेंट्रल प्रिजन,
यरवडा, पूना

---

१ अहमदाबादके हिन्दू-मुस्लिम दगेका अुल्लेख है।

२ श्री गुलजारीलाल नदा। अहमदाबाद मजदूर-सघके मत्री। कुछ समय बम्बअी राज्यके श्रममत्री। आजकल केन्द्रीय सरकारके राष्ट्रीय योजना मत्री और राष्ट्रीय योजना-आयोगके अुपाध्यक्ष।

३ पूनाके सेवाभावी सज्जन स्व० प्रो० जे० पी० त्रिवेदीके पुत्र।

१४६

सेवाग्राम-वर्धा, सी. पी.,
२०-५-'४१

चि० मणि,

तुझे अेक पत्र लिखा है। जेलमें मिलना चाहिये। यह तेरे पत्रके अुत्तरमें है। पत्र कल मिला और रातसे पहले नहीं पढ़ सका।

तेरी तरह मैं यह कैसे मानूं कि यदि मैं अहमदाबादमें होता तो जो दंगा हुआ वह न होता? आज किसीके लिअे अैसा कहना मुश्किल है। मैं अीश्वरके चलाये चलता हूं। अुसने मुझे यहां डाल दिया है। मैं जानता हूं कि गुजरातमें अैसे बहुतसे गांव हैं जहां मैं बस सकता था।

मनुभाअी[1] बड़ी बहादुरी दिखला रहे हैं। कल ही सारा परिवार प्रार्थनामें आया था।

वा. तो आजकल नअी दिल्लीमें (निमोनियासे) रोगशय्या पर पड़ी है। बुखार आता है। लिखती है कि चिन्ताका कोअी कारण नहीं। कल मैंने लीलावतीको वहां भेजा है। जानकीबहन[2] की तबीयत बहुत अच्छी कही जा सकती है। नंदूबहनने किस आधार पर खराब बताअी? वे पहले कभी नहीं घूमती थीं अुतना आजकल घूमती हैं। अच्छी तरह खाती हैं।

कनू[3] की सगाअीकी बात लटक रही है। अभी तो नहीं होगी, यही मानकर चलना है। लड़की भी अपने घर गअी है।

मीराबहन चोरवाड़में गरमी बिता रही हैं। दुर्गाबहन[4] की तबीयत अच्छी होती जा रही है।

---

१. प्रो० त्रिवेदीके पुत्र। त्रिवेदीके देहान्तका अुल्लेख है।
२. स्व० जमनालालजी बजाजकी पत्नी।
३. श्री नारणदास गांधीका पुत्र।
४. स्व० महादेवभाअी देसाअीकी पत्नी।

तू वहाका काम ठीक करके दो तीन दिन मेरे साथ रह जाय, यह मैं जरूर चाहता हू।

बापूके आशीर्वाद

चि० डाह्याभाऊ,

मणिबहन आये तब यह पत्र अुसे दे देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१४७

सेवाग्राम-वर्धा, सी पी,
११-८-'४१

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला था। किशोरलालभाअी[1] ने तो जवाब दिया ही। भानुमती[2] का अैसा क्यो हुआ? डॉक्टर क्या कुछ भी नही कह सकते? बेबीका जीना कठिन है। जिये तो भी शायद दुर्बलता रह ही जायगी।

बापूको मेरे पत्र पहुचे क्या? जल्दी पहुचें अिसलिअे दोहरी सावधानी तो रखी थी।

तेरे परेशान होनेका कुछ भी कारण नहीं। हर हालतमें जेल जानेका धर्म थोडे ही है। बाहर[3] बैठकर तू बापूका ही काम कर

१ आश्रमवासी स्व० किशोरलाल घ० मशरूवाला।

२ मेरी भाभी।

३ गुजरातमें बाढ-सकट आया था। अुसके लिअे चदा करनेमें मैं महादेवभाअीके साथ लगी हुअी थी।

रही है। जिस समय जेलमें जायगी तो मनको झूठा संतोष देगी। जानेका समय आने पर तुझे अेक क्षणके लिअे भी नहीं रोकूंगा। अभी तो जो गुजराती काम करें अुन्हें काम देते रहना है।

सूखे अच्छे अंजीर मुझे पांच पौंड भेजना।

वह व्याकरण मिल गया है।

महादेव आ गये होंगे। अब तक कितना चंदा हुआ? यहां ठीक चल रहा है।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल और
श्री महादेव देसाअी,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१४८

सेवाग्राम,
३१-८-'४१

चि० मणि,

तुझे तो मैं जान-बूझकर नहीं लिख रहा था। अभी तुझे जेलमें नहीं भेजना है। समय आने पर तो भेजूंगा ही। तू बाहर रहकर भी काम तो कर ही रही है। तुझे भेजनेका समय जरूर आयेगा। अभी तो निश्चिन्त होकर सेवा करना और अपना स्वास्थ्य अच्छा कर लेना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१४९

(सेवाग्राम)
३-९-'४१

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। तूने सारा ब्यौरा[1] भेजा सो ठीक किया। मैंने कल जमावाला[2] का पत्र भेजा है। उसके अनुसार तुरत अिलाज करनेका मेरा तो आग्रह है। तबीयत बहुत गिर जानेके बाद अिलाज बेकार भी जा सकता है। डॉ० नायूभाअी[3] से चर्चा कर लेनेकी मुझे तो जरूरत मालूम होती है।

मुझे बराबर समाचार देती रहना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१५०

(महाबलेश्वर)
२७-२-'४५

चि० मणि,

चि० डाह्याभाअी लिखते हैं कि तू कल छूट रही है। वे यह भी कहते हैं कि तेरा स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। आनेकी सुविधा हो तो तू यहां आ ही जाना। न आ सके तो पूरा पत्र लिखना। तुझसे मिलनेको तो मैं अुत्सुक हूं ही। बहुत समय हो गया है।

बापूके आशीर्वाद

---

१ व्यक्तिगत सविनय भंगके समय पू० बापूको स्वास्थ्यके कारण जेलसे छोड़ दिया गया था। अुनके स्वास्थ्यके ब्यौरेवार समाचार मैंने पू० बापूजीको लिखे थे।

२ बम्बअीके अेक प्राकृतिक चिकित्सक।

३ डॉ० नायूभाअी पटेल, अेम० डी०, बम्बअीके अेक प्रसिद्ध डॉक्टर।

१५१

महावलेश्वर,
२२–४–'४५

चि० मणि,

तूने पत्र ठीक लिखा। मैं जानता हूं कि दूध वगैराकी सुविधा वापू प्राप्त कर लेंगे।[1] अिसलिअे चिन्ताकी वात ही नहीं।

तेरा स्वास्थ्य विलकुल सुधर जाना चाहिये। तू अितने अधिक अेकाशन करती है, अिसके औचित्यके वारेमें मुझे शंका है। तेरे साथ मैंने चर्चा नहीं की, परन्तु मनमें यह वात वनी रही है। अिसे लिखनेका विशेष हेतु तो यह है कि अहमदावादका काम निवटाकर तुझे यहां आ जाना है, यह याद रखना।

वहां सवको आशीर्वाद। डॉ० (कानूगा) अच्छे होंगे।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन वल्लभभाअी पटेल,
मारफत डॉ० कानूगा,
अेलिसव्रिज,
अहमदावाद

१५२

महावलेश्वर,
२७–४–'४५

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। पढ़ा। पढ़ते ही फाड़ दिया। भूलसे रख लिया था, परन्तु निजी देखकर तुरन्त ही मेरे पास पहुंचा दिया।

परन्तु तूने जो लिखा अुसमें निजी क्या है? मैंने तो तेरे सम्मानके लिअे और तुझे निर्भय करनेके लिअे ही फाड़ा है और अैसा ही तेरे पास भेज दूंगा।

---

१. पू० वापू अुस समय अहमदनगरके किलेमें नजरवन्द थे। अुनके स्वास्थ्यके समाचार मेरे नामके पत्रमें आये थे। वे मैंने पू० वापूजीको लिखे थे।

अुपवास तो शायद हममें सबसे अधिक मैंने किये होंगे। दक्षिण अफ्रीकामें तो चाहे जिस बहाने कर डालता था। अेक वर्षसे अधिक समय तक अेकाशन भी किया। मेरी राय है कि अिसकी अपेक्षा अल्पाहार बहुत बड़ी चीज है। अुपवासका स्थान है, मगर मृत्युके निमित्त हरगिज नहीं। जन्मके निमित्त क्यों नहीं? मैंने यह भी किया है, परन्तु विचार करके छोड़ दिया। अिससे तू अपने अेकाशनकी बात समझ ले। शरीर जीश्वरका घर है। अुसे ज्योंका त्यों ही रखना चाहिये।

तेरा सुघड़पन क्या मैं नहीं जानता? मोतीलालजीने[1] तो तुझे पहला नम्बर दिया था। परन्तु तुझे साथियोंके प्रति अुदार रहना चाहिये। तू अैसा नहीं करती अिसलिअे तेरा पड़ोसी-धर्म भंग होता है। फिर तू अपना दोष मान लेती है। मानना या तो दोषको पकड़ रखनेके लिअे या दोषको निकालनेके लिअे होना है। क्या तू दोषको निकालना नहीं चाहती? तू अपनी सुघड़ता दूसरोंको दे और अपनीकी रक्षा तो कर ही। मेरी तरह अपने लायक साफ कर लेना। जेलमें रहकर भी यह कला नहीं सीखी? महादेवके पाससे तूने क्या लिया? अुनकी अुदारता तूने देखी थी?

अितना तो तेरे लिअे बहुत हो गया। अगर पूरा जवाब मिल गया हो तो यहां आ जा। मेरे लिअे मत आना। आये तो धर्म समझकर और मनको अुदार बनाकर या बनानेके लिअे आना। अगर तुझे दुरा लगा हो तो यहां आकर क्या लेगी? अपने दोषोंको पहाड़के समान मानें, और दूसरोंके दोष पहाड़ जैसे हो तो भी अुन्हें रजकणके समान मानें तब मेल बैठेगा।

कुछ भी खानगी न रखनेका नियम बना ले तो अिसकी नकल भेज देना। बहुतोंके समझने लायक है।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन वल्लभभाअी पटेल,
मारफत डॉ० कानूगा,
अहमदाबाद

---

१ पंडित मोतीलाल नेहरू।

महाबलेश्वर,
३-५-'४५

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। वह स्पष्ट है।

अुपवासके बारेमें तू लिखती है, अतः मैं सूचित करता हूं कि अुसे केवल शरीर-शुद्धिके लिअे ही कर। तब तुझे खुद ही अपना पता लग जायगा। और अुसका आध्यात्मिक फल मिलनेवाला होगा तो मिल जायगा और तू वहम या आडम्बरसे बच जायगी। महादेव या बाके लिअे और कुछ नहीं तो अुपवास तो करें, यह विचार बिलकुल गलत है। वे जानते हों तो अुन्हें क्लेश ही हो। प्रियजन चल बसें तब अुनके लिअे अुनका प्रिय और कठिन काम हम करें। अिसलिअे महादेव जैसे मीठे बननेकी कोशिश करें। बाके समान आस्तिक बननेका प्रयत्न करें। ये दो अुदाहरण तो जबान पर आ गये, अिसलिअे दे दिये। दूसरे और दिये जा सकते हैं। शरीर केवल अीश्वरके रहने या आत्माको पहचाननेका घर है यह जान लें, तो सब कुछ अपने आप ठिकाने आ जाय। अैसा हो जाय तो धर्मके नाम पर चल रहा ढोंग मिट जाय। तेरा जीवन सरल है अिसलिअे और बहुतसे प्रलोभनोंको तू पार कर सकी है अिसलिअे मैं अितना परिश्रम तेरे लिअे कर रहा हूं। तू सब तरहसे अूंची अुठ जाय तो मैं जानता हूं कि तू बहुत अधिक काम कर सकती है।

अिसी कारणसे तुझे यहां अथवा आश्रममें खींच लाना है। बापू स्वयं यही चाहते हैं, अिसलिअे तुझे खींचनेका मनमें अधिक अुत्साह होता है। अैसा हो तब तो तू भी नहीं चाहेगी और मैं भी नहीं चाहूंगा कि अेक घड़ी भी तू अुन्हें छोड़कर कहीं रहे। और तू मेरे आसपास होगी तो तुझमें सहनशीलता बढ़ेगी, क्योंकि यह स्थल अैसा है जहां अनेक स्वभावोंके अनुकूल बननेकी और अलिप्त रहनेकी जरूरत है। अर्थात्

हम गुणग्राही बनकर रहें। दूसरोंका अवलोकन करके हम उनके गुणोंका अनुकरण करें, और अवगुणोंको सहन करें, क्योंकि अवगुणोंको दूर करनेका सबसे अच्छा उपाय यही है। इसलिअे जल्दी आना।

नदूबहन, दीवान मास्टर,[1] कानूगा वगैराके समाचार तूने भेजे यह ठीक किया।

अब तो सवेरा हो गया और रोशनी बुझा रहा हू, इसलिअे बस।

वहा सबको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
मारफत श्री डाह्याभाअी पटेल,
मरीन लाअिन्स,
बम्बअी

१५४

महाबलेश्वर,
५-५-'४५

चि० मणि,

तूने अच्छा पत्र लिखा। जो खबर तूने दी वह और कोअी मुझे न देता। सायका पत्र कानजीभाअी[2] को दे आना। अब तो तू यहा आनेवाली है, इसलिअे अधिक नही लिख रहा हू। कल नरहरि (परीख), मणिलाल (गाधी), कमलनयन[3] और सत्यनारायण[4] आये थे।

---

१ स्व० जीवनलाल दीवान।

२ श्री कन्हैयालाल नानाभाअी देसाअी। गुजरात काग्रेस समितिके १९४६ से १९५६ तक अध्यक्ष। १९४६ से सविधान-सभाके सदस्य। अुसके बाद १९५६ तक लोकसभाके सदस्य।

३ श्री जमनालाल बजाजके पुत्र।

४ दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार समितिके मत्री।

आज मुन्नी आयेंगे। कमलनयन और मुन्नी तो जैसे आये वैसे चले जायंगे।

तुम सबको

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
मारफत श्री डाह्याभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१५५

(सेवाग्राम)
२५-७-'४५

चि० मणि,

अब तू क्यों पत्र लिखने लगी? मुझे आशा भी नहीं रखनी चाहिये।

यह तो तुझे पुष्पा[1] के बारेमें लिख रहा हूं। वह बहुत दुःख पा रही है। अुसने मुझे मिलनेको लिखा है। परन्तु तू अुससे मिलने जायगी तो ठीक है। वह अपने घर तो होगी ही। पता है: नअी हनुमान गली, शरडाकी चाल, दूसरी मंजिल, कमरा नं० १२, मणिलाल पोपटलाल दोशीके मारफत।

तेरा स्वास्थ्य ठीक होगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
मारफत श्री डाह्याभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

---

१. बम्बअीकी यह लड़की घरसे भागकर पू० बापूजीके पास चली गअी थी। अुन्होंने अुसे समझाकर घर वापस भेज दिया था। पर वह फिर आश्रममें लौट आअी। आजकल श्री भणसालीके पास आश्रममें रहती है।

१५६

पूना,
२७-११-'४५

चि० मणि,

तेरे दो पत्र मिले। कानजीभाजीके नामका पत्र तेरे पास भेज रहा हू। तू अपनी डाकके साथ भेज देना।

परवडा पैक्टके बारेमें अेक सवालका विचार कराना। पैक्टमें दस वर्षकी बात है। परन्तु वह १९३५ के कानूनमें नही है। तो अुसका अमल कानूनसे कराया जा सकेगा या नही? पकवासा[1] विचार करें। कौंसलसे मिलना हो तो मिलें। मेरी राय स्पष्ट है। कानून सहायता न भी करे। राजनीतिक रूपमें लडा जा सकता है, जिस विषयमें दो मत नही हो सकते। यह जरूर सोचना है कि अिस समय यह लडाअी छेडी जाय या नही। परन्तु अिसकी चर्चा तुम्हारे यहा आने पर कर लेंगे।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१५७

[यह पत्र पू० बापूजीने मौनमें लिखा था।]

(वाल्मीकि मंदिर,
नअी दिल्ली,
१९४५ के बाद)

नकल करनेका काम तो बनूको सौंपा है। मैंने तुझसे कहा था कि बनूसे लिखवाना। तेरी की हुअी नकल है, अिसलिअे अिसे पास करता हू। और यही दूगा। परन्तु अिसमें दोष है। हमेशा हाशिया जरूर छोडना चाहिये। रोज पत्र आते हैं। अुनका तू अवलोकन करती

१. श्री भगवानदास पकवासा बम्बअीके अेक सालीसिटर। बम्बअीकी कौंसिलके अध्यक्ष थे। आजकल मध्यप्रदेशके गवर्नर।

हो तो पता चलेगा कि तैयार किये हुअे पत्रोंमें हाशिया जरूर होता है। अब दूसरा मत लिखना। यह तो भविष्यके लिअे तुझे शिक्षा है। यह तो मैंने तुझे सिर्फ बता दिया।

१५८

सेवाग्राम,
१४–२–'४६

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। तूने अच्छे समाचार दिये हैं।

'धारासभानो मोह'[1] (विधान-सभाओंका मोह) गुजरातीमें होने पर भी सबके लिअे है।

अखबारकी कतरन लौटा रहा हूं।

तेरे सुझावों पर जितना अमल हो सकेगा करूंगा।

तू अपना स्वास्थ्य संभालना। अब तो जल्दी ही मिलना है, अिसलिअे अधिक नहीं लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

१५९

१८–३–'४६

चि० मणि,

यह पत्र देखना। सरदारको पढ़ाना हो तो पढ़ा देना। समय न मिले तो यह बात ही मत करना। जो होना है वह हो जायगा।

बापूके आशीर्वाद

अकबर[2]का पत्र लौटा देना या भेज देना।

---

१. देखिये, 'हरिजनसेवक', १०–२–'४६, पृ० ८।

२. श्री अकबरभाओ चावडा। [illegible] सेवाग्राम आश्रमनिवासी। आजकल [illegible] सदस्य।

१६०

३१-७-'४७
रेलमें ४-३० बजे

चि० मणि,

सायका पत्र[1] पढ़कर जो करना हो सो कर। तेरी अनन्य पितृभक्तिने तेरे हाथोंमें महान सेवा करनेका अवसर दिया है। उसका जो उपयोग करना हो करना।

खाकसारों[2] के बारेमें जो पत्र मैंने लिखा उसमें कुछ तथ्य है क्या? उन लोगोंने ब्यौरेवार लिखा है।

सायका पत्र राजकुमारीको देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन,
ठि० सरदार पटेल,
१ औरंगजेब रोड,
नयी दिल्ली

१६१

सोदपुर,
११-८-'४७

चि० मणि,

सायके पत्र पर तो डाह्याभाईको हस्ताक्षर करने हैं, ऐसा लगता है। तू देख लेना। मुझे तो उस विभागका पता भी नहीं। शायद आश्रमके हस्ताक्षर चाहिये। तू देख लेना और फिर जो करना हो वह लिखना।

काश्मीरके बारेमें तो मैं सरदारको लिख चुका हूं। वह मिला होगा। लम्बा बयान जो जवाहरलालको भेजा है वह सरदारके लिये भी है।

---

१ निर्वासित-सम्बन्धी पत्र।

यहां तो समस्या अुलझी हुअी है। आशा तो है कि सुलझ जायगी। मैंने कल भाषणमें जो कहा अुससे पता चलेगा कि मुझे यहां क्यों रुकना पड़ा।

प्रफुल्ल वगैरा मिलते रहते हैं।

खाकसार लाहौरमें मिले थे। अुन्हें पत्र दिया था सो मिला होगा। कामसे सांस लेनेकी भी फुरसत मिलती है या नहीं?

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
ठि० सरदार पटेल,
१ औरंगजेब रोड,
नअी दिल्ली

१६२

कलकत्ता,
१३-८-'४७

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। हस्ताक्षर करनेके कागज मैंने तुझे ज्योंके त्यों वापस भेज दिये। मैंने अैसा समझा है कि अुन पर मेरे हस्ताक्षरोंकी जरूरत नहीं है।

बरसातके बिना क्या होगा[1]? यह स्वतंत्रता महंगी पड़ती मालूम होती है।

मालूम होता है सरदारके स्वास्थ्य पर अिस कामका पूरा-पूरा बोझ पड़ेगा।

साथका पत्र पढ़कर सरदारको पढ़वा देना।

अुनका अेक भी मिनट लेना चोरी करने जैसा लगता है।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल,
नअी दिल्ली

---

१. गुजरात, काठियावाड़, कच्छमें अिस साल भारी अकाल था।

१६३

(कलकत्ता)
२६-८-'४७

चि० मणि,

तुझ पर मुझे दया आती है। परन्तु दया कैसी? तू भार उठाने योग्य है। इसलिये उठाती रहना और सरदारका भार कुछ हलका करना।

रामस्वामी[1] को बहुत चोट आयी, यह तो तुझसे सुना। एक पत्र ऐसा था जरूर, परन्तु मैंने उस पर विश्वास नहीं किया था। मैंने तो पत्र लिखा ही नहीं था। अब लिखूंगा।

साथके पत्र पहुंचा देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
नयी दिल्ली

१६४

(कलकत्ता)
३०-८-'४७

चि० मणि,

सब पत्र साथमें हैं। यथास्थान पहुंचा देना। तुझ पर हदसे ज्यादा काम तो नहीं लाद रहा हूं? जिसी तरह सब पत्र जल्दी पहुंचा सकना हूं। जवाहरलालवाला पत्र सरदारको पढ़वाकर जिस तरह जल्दी मिले उस तरह भेज देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
नयी दिल्ली

---

१ त्रावणकोरकी एक सभामें सर सी० पी० रामस्वामी पर हमला हुआ था और उन्हें गंभीर चोट आयी थी।

१६५

(कलकत्ता)
१–९–'४७

चि० मणि,

तुझे कामका भार नहीं लगता, यह अच्छा है। कोओी तो सरदारके पास पूरा हाथ बंटानेवाला चाहिये।

मेरा पत्र तू अुन्हें फुरसतमें पढ़ाना।

सुशीला[1] का अुसे भेज देना।

यहां तो कल रातको अकल्पित बात हो गयी है। जिन्हें छुरा लगा कहा जाता है अुन्हें छुरा लगा ही नहीं। दो आदमी लड़े तो जरूर थे। अुनमें वह हार गया। अधिक पता अब चलेगा। अभी नहाकर आया और यह लिखने बैठा हूं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
नओी दिल्ली

१६६

(कलकत्ता)
२–९–'४७

चि० मणि,

सब पत्रोंकी व्यवस्था कर देना। तू तो मेरे अुपवासको अिशारेमें समझ गओी होगी। राजाजीने बहुत मायापच्ची की, परन्तु जैसे जैसे वे दलील करते गये वैसे वैसे मैं मजबूत होता गया। पंद्रह दिनकी दोस्ती झूठी ही थी क्या?[2]

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
नओी दिल्ली

---

१. पू० बापूजीके मंत्री श्री प्यारेलालकी बहन डॉ० सुशीला नैयर। दिल्ली विधान-सभाकी सदस्य थीं। आजकल अध्यक्ष।

२. कलकत्तेमें थोड़े समय जो शान्ति रही थी वह।

१६७

८-९-'४७

चि० मणि,

आज वहाँके लिये रवाना हो रहा हूँ, इसलिये इतना ही। तेरा रुदन तो ठीक है, मगर उसमें सार नहीं है। इतने दबावके बाद दिल्ली तो आना ही चाहिये। वहाँ सरदार और जवाहर निश्चय करेंगे कि क्या किया जाय। मेरे रहनेकी व्यवस्था उन्हें जहाँ करनी हो वहाँ करें। बिड़ला हाउसका मैं बहिष्कार नहीं करता। परन्तु आराम मिले या न मिले मुझे भंगी-निवास अच्छा लगता है। सरदारकी आबरू भी मुझे वहीं रखनेमें है। रातको वहाँ कोई न आ सके, जिसमें हर्ज नहीं। गाड़ी दिल्ली ऐक्सप्रेस। ब्रजकृष्ण[1] से कह देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
नई दिल्ली

१६८

(बिड़ला भवन,
नई दिल्ली)
२९-९-'४७

चि० मणि,

सायमें नारणदास गांधीका पत्र है। उन्हें तार देकर मेरा जवाब मिलने तक रोक दिया है। परन्तु क्या करना चाहिये, यह सरदारसे पूछकर मुझे बताना।

१ दिल्लीके श्री ब्रजकृष्ण चांदीवाला। पू० बापूजीके एक भक्त।

दूसरी चीज पट्टणीका[1] तार है। वहां भी यही आया होगा। अुसका क्या करना है? मैंने समझा है कि गामलदास[2] जो कुछ करता है वह सरदारकी सहमतिसे करता है। अिसका अुत्तर भी पूछ कर बताना।

दोनों चीजें वापस भेज देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
मारफत सरदार पटेल,
नअी दिल्ली

१६९

न० दि०
२९-१२-'४७

चि० मणि,

पत्रवाहक सेवकराम हरिजनोंके शुद्ध सेवक हैं। सब हरिजनोंको सिंधसे लाना ही चाहिये और बम्बअी अिलाकेमें कच्छ, काठियावाड़, गुजरात, अुदयपुर, जोधपुर वगैरामें बसा ही देना चाहिये। अिसके लिअे सरदार जितना कर सकें अुतना करें।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
मारफत सरदार पटेल,
नअी दिल्ली

---

१. भावनगरके श्री अनंतराम पट्टणी।
२. स्व० गामलदास गांधी। पू० बापूजीके भतीजे।

१७०

(बिडला भवन,
नअी दिल्ली)
१३-१-'४८

चि० मणि,

आज सरदारके साथ बात हुअी। अिसलिअे अब और नहीं। मुझे बहावलपुरके[1] लोगोंसे मिलना है। फिर बुलाअूंगा। मुझे गलत-फहमी कैसे हुअी, यह समझमें नहीं आता। अुसे ठीक करूंगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
नअी दिल्ली

---

१ बहावलपुर राज्यके, जो पाकिस्तानमें चला गया है, सरकारी नौकर।

पूर्ति

डाह्याभाअी पटेल तथा अुनके पुत्रको

१

यरवडा मंदिर,
७–८–'३२

चि० डाह्याभाअी,

महादेवके चश्मेका अेक कांच टूट गया है, अिसलिअे वे परेशान होते हैं। यहां वह कांच मिल नहीं सकता। यह चश्मा पिछले साल जून-जुलाअीमें डॉ० भास्करने[1] फोर्ट-स्थित व्हिटनकी कंपनीमें बनवाया था। अुसका नम्बर व्हिटनके यहां जरूर होगा। लेकिन वहां न मिले तो डॉ० हीरालाल पटेल[2], जिन्होंने महादेवकी आंखोंकी परीक्षा की थी और नम्बर दिया था अुनके यहां यह नम्बर मिलेगा। अगर भास्करसे मिला जा सके तो अुनसे मिलकर व्हिटनकी दुकानसे यह नम्बर निकलवाना और चश्मा बनवाकर तुरन्त भेजना। अिस चश्मेके कांच और डंडीका माप भी शायद अुनके वहां होगा। परन्तु न हो तो माप साथवाले पत्र पर भेजा है। भास्कर न हो तो डॉक्टर हीरालालसे मिलना वे बनवा देंगे। भास्करको पिछले सप्ताह महादेवने अेक रजिस्टर्ड पत्र भेजा था। वह अुन्हें मिला नहीं दीखता। करमचन्दकी पत्नी अब बिलकुल अच्छी होंगी।

---

१. डॉक्टर भास्कर पटेल, जिन्होंने बम्बअीमें लड़ाअीके दौरानमें कांग्रेसका कामचलाअू अस्पताल चलाया था। अुनकी सेवाअें बोरसद प्लेग निवारण कार्यमें बहुत अुपयोगी सिद्ध हुअी थीं। १९५१ से १९५६ तक बम्बअीकी विधान-सभाके सदस्य। १९५६ से बम्बअी राज्यके मद्य-निषेध विभागके अुपमंत्री।

२. बम्बअीके आंखोंके अेक डॉक्टर।

मणिबहनका पत्र अभी जिन दिनोंमें तो नहीं आया। महादेवका काम चश्मेके बिना बन्द हो गया है। अिसलिअे जल्दी भेज देना।

बाबा मजेमें होगा। हम तीनों मजेमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

आज बापूने डॉ० अन्सारीको तुम्हारे पते पर अेक पत्र लिखा है। वह तुम्हें पहुंचा जाना। वे ११ तारीखको बम्बअीसे रवाना होनेवाले हैं, अिसलिअे वे दस तारीखको तो बम्बअीमें ही होंगे।

अुस्मान सोभानी[1]के यहां ठहरे होंगे। नहीं तो जहां ठहरे हों वहांका पता अुस्मानके यहांसे मिलेगा। तलाश करके पत्र पहुंचा जाना।

बापूके आशीर्वाद

चि० डाह्याभाअी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बअी–४

२

य० म०
२६–१०–'३२

चि० डाह्याभाअी,

मणिबहनका पत्र भी अब तो तुम्हें नियमित मिलना संभव है। अिसलिअे तुम्हारे पढ़ने या सुननेकी सामग्री बढ़ गअी। परन्तु साहित्य पढ़नेके साथ अब तुम्हारे बिस्तर छोड़नेका समय भी नजदीक आता जा रहा है न? फिर भी बिस्तर छोड़नेकी अधीरता न होनी चाहिये। यह तो जानते हो न कि बिस्तरमें भी सेवा हो सकती है?

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बअी–४

---

१ बम्बअीके अेक मिल-मालिक

३

य० मं०
१९-११-'३२

चि० डाह्याभाओ,

तुम्हारे स्वास्थ्यके समाचार रोज मिलते रहते हैं। अैसी व्याधियां भी हमारी परीक्षाके लिअे आती हैं। तुम खूब धीरजसे सहन कर रहे हो, अैसा भाअी करमचन्द लिखते हैं। तुमसे यही आशा रखी जा सकती है। मणिबहनकी चिन्ता न करना।

प्रभु तुम्हारी रक्षा करेगा ही।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बअी–४

४

य० मं०
२२-११-'३२

चि० डाह्याभाअी,

देवदास तुम्हारे कुशल-समाचार देता है और कहता है कि हमारे पत्र तुम्हें रोज मिलें तो तुम्हें प्रसन्नता होगी। हम तो जान-बूझकर तुम्हें नहीं लिखते, यद्यपि रोज आशीर्वाद तो जाते ही हैं। रोज तुम्हारा स्मरण होता है। अब पत्र भी मिलेंगे।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बअी – ४

५

यरवडा जेल,
२५–११–'३२

चि० डाह्याभाओ,

मि० नटराजन लिखते हैं

"I have every hope and pray that Dahyabhai will pull through the remaining few days without complication His age and active habits and his naturally strong constitution are most potent assets He is a favourite at our home, having been with us nearly all the time when he was living with his uncle He calls Kamakoti[1] 'Akka' like her brothers and sister and is always a welcome visitor without any ceremony[2] "

अुन्हें मैंने पत्र लिखा था। अुसके अुत्तरमें अुन्होंने जो पत्र लिखा था अुसीमें से अूपरका अुद्धरण दिया है। कल भाअी करमचन्दका पत्र देरसे मिला था। मैं अस्पृश्यताके बारेमें आये हुअे लोगोंके साथ व्यस्त था, अिसलिअे कल नहीं लिख सका। मालूम होता है तुम्हारा बुखार धीरे धीरे अुतरता जा रहा है। अच्छी तरह आराम लिया जाता हो और खाने-पीने वगैराके नियमोंमें भूल न होती हो तो टाअिफाअिड

---

१. स्व० नटराजनकी लड़की।

२ मुझे पूरी आशा है और मैं प्रार्थना करता हू कि, बाकीके थोड़े दिन डाह्याभाओ बिना किसी अुपद्रवके निकाल देंगे। अुनकी अुमर, सक्रिय जीवन तथा स्वाभाविक रूपमें मजबूत शरीर अुनके हकमें है। हमारे घर वे सबके लाडले हैं। जब वे अपने चाचाके यहा रहते थे तब अधिक समय हमारे यहीं बिताते थे। कामकोटीको अुनके भाअियो और बहनके साथ वे भी 'अक्का' कहते है। हमारे यहा वे घरके सदस्य जैसे ही हैं।

बुखारसे फायदा ही होता है, क्योंकि शरीरसे सब जहर निकल जाता है।

तुम आनन्दमें होगे।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाऊ पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बई – ४

६

य० मं०
२७–११–'३२

चि० डाह्याभाऊ,

आज तुम्हारी तबीयतके और भी अच्छे समाचार हैं।

कल मैं लिख चुका हूं कि बीमार भी सेवा कर सकता है। वह जिस प्रकार मिली हुई शान्तिका उपयोग भगवानका चिन्तन करनेमें करे, अपने क्रोधको, अपनी अधीरताको रोक कर सेवा करनेवालोंमें प्रेम फैला कर करे। पश्चिमका और अेक यहांका उदाहरण मेरे सामने है। फ्रांसकी अेक अठारह वर्षकी लड़कीने अपनी अत्यंत गंभीर बीमारीमें अपनी सुगन्ध इतनी फैलाई कि अब उसे 'सेण्ट' की पदवी मिली है। उसने तो अखण्ड निद्राका सेवन किया।

पोरबन्दरके पास बिलखाके लाधा महाराजको कोढ़ हो गया था। वे बिलखाके शिवालयमें आसनबद्ध होकर बैठ गये। नित्य रामनाम जपते। रामायण पढ़ते। अन्तमें रोगमुक्त हुअे और प्रख्यात कथाकार बने। उन्हें मैंने देखा था। उनकी कथा सुनी थी।

जो ईश्वर-भक्त है वह तो बीमारीका भी सदुपयोग कर सकता है। बीमारीसे हारना नहीं।

बापूके आशीर्वाद

चि० डाह्याभाई पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
सैण्डहर्स्ट रोड,
बम्बई – ४

७

य० म०
१७–१२–'३२

चि० डाह्याभाई,

तुम्हारा काम अभी पूरा नहीं हुआ, परन्तु तुम हिम्मत नहीं हार सकते। रोगका मिटना रोगी पर आधार रखता है, यह जानते होगे। रोगी कभी निराश होता ही नहीं और अधीर भी नहीं होता। जब तक दुःख भोगना हो तब तक भोगे, परन्तु उसके साथ जूझता रहे। सभी दवाओं और सारी खुराकोंसे रामनाममें अधिक शक्ति है, यह अनुभव न किया हो तो कर देखना। इसकी शक्ति विद्युत-शक्तिसे अधिक है। वह तुम्हें शान्ति और उत्साह देगा। तुम पत्र लिखनेका लोभ रखते दिखाई देते हो। यह लोभ छोड़ना चाहिये। तुम्हारा कर्तव्य इस समय पूरा आराम लेना है। विनोदमें दो वाक्य मित्रोंको या हमारे जैसे बुजुर्गोंको लिखाये जा सकते हैं, परन्तु दफ्तरके कामका विचार नहीं किया जा सकता। इतना मान लेना। ईश्वर तुम्हारा कल्याण ही करेगा।

यह पत्र मैंने बायें हाथसे लिखा है।

बापूके आशीर्वाद

डाह्याभाई व० पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बई – ४

८

(य० मं०)
२०–१२–'३२

चि० डाह्याभाअी,

लम्बा पत्र लिखना था, परन्तु समय नहीं रहा। अब तो जल्दी अच्छे हो जाना है। बा, वेलाबहन[1] और बाल मेरे साथ बैठे हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बअी – ४

९

(य० मं०)
२२–१२–'३२

चि० डाह्याभाअी,

तुम्हारे विषयमें अभी तो अैसे समाचार आ रहे हैं कि मेरे लिखनेकी कोअी बात रहती नहीं। फिर भी अितनासा लिखता हूं कि न तो बीमारीका विचार करना, न दफ्तरका। हो सके तो केवल अीश्वरको ही याद रखो और गर्दन अुसके हाथमें सौंप दो। वह भजन याद है? "मारी नाड तमारे हाथे हरि संभाळजो रे।"[2]

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी व० पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बअी – ४

---

१. श्री लक्ष्मीदास आसरकी पत्नी।
२. हे हरि! मेरी गर्दन तुम्हारे हाथमें है, अिसकी रक्षा करना।

१०

पर्णकुटी,
पूना,
२६-८-'३३

चि० डाह्याभाओ,

तुम्हारी ओरसे कोओ भी पत्र नहीं, यह आश्चर्यकी बात है। नासिक अन्तिम बार कब गये थे? वहांके जो समाचार हों वे देना। मणिबहनकी क्या खबर है? अुनके साथ कौन है? अुनका स्वास्थ्य कैसा रहता है? अुनसे कोओ मुलाकात करता है? तुम्हारा काम कैसा चल रहा है? बाबाका क्या हाल है? मुझमें रोज रोज शक्ति आती जा रही है। चिन्ताका बिलकुल कारण नहीं।

बापूके आशीर्वाद

११

वर्धा,
१४-११-'३३

चि० डाह्याभाओ,

तुम्हारी भावना और तुम्हारे दुःखको मैं समझता हूं[1]। मेरी भावना और मेरा मानस तुम मणिबहनके पत्रसे जान सकोगे। जहां मैं अपंग हो जाऊं वहां क्या करूं? सिपाहीके हाथसे तलवार छीन ली तो जैसे वह बेकार हो जाता है वैसे मेरे हाथसे सविनय भंग छीन लो तो मैं निकम्मा बन जाअूंगा। मेरा सारा जीवन प्रतिज्ञाबद्ध रहा है। मेरी प्रतिज्ञा तो यह है कि या तो मुझे जेलमें रहना चाहिये अथवा बाहर रहूं तो सारी शक्ति हरिजन-कार्यमें लगानी चाहिये। दूसरे कामोंमें मैं अपना मन भी नहीं लगा सकता। विट्ठलभाओके दोष तो अुनके साथ गये। अुनके गुण बहुत थे। अुनका स्मरण हम सबको सुरक्षित रखना है।

१ स्व० काका (श्री विट्ठलभाओ)की श्मशान-यात्राके अवसर पर पू० बापूजी बम्बओ नहीं गये थे। यह पत्र अुस प्रसंगको ध्यानमें रख कर लिखा गया है।

और तुम्हें शायद पता नहीं होगा कि विट्ठलभाईको मैंने पत्र भी लिखा था और अुनका मेरे पास मीठा जवाब भी आया था। मेरा निजी सम्बन्ध तो टूटा ही नहीं था। मतभेद सम्बन्धोंमें बाधक नहीं होते। मुझे तुम्हें यह समझानेकी जरूरत भी नहीं होनी चाहिये। परन्तु मणिबहन लिखती हैं कि तुम्हें और दूसरे भतीजोंको भी कुछ दुःख हुआ है। अिसलिअे अितना समझानेका प्रयत्न किया है। वल्लभभाअीके बाहर न होनेसे मुझे बड़ी कठिनाअी होती है। वे बाहर हों तो पारिवारिक गलतफहमियां दूर करनेका काम मैं अुन पर ही छोड़ दूं। अुनके जेलमें होनेसे मुझ पर गलतफहमी दूर करनेका दोहरा भार रहता है। अब भी कुछ दुःख रह जाय तो मुझे दिल खोलकर लिखनेमें जरा भी संकोच न करना।

पत्र बराबर लिखना।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी वल्लभभाअी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बअी – ४

१२

(चिखलदा)
१९–११–'३३

चि० डाह्याभाअी,

तुम्हें मैंने पत्र लिखा है। वह मिला होगा। साथमें गोरधनभाअीका पत्र[1] है। अुसे पढ़कर अुन्हें देना। तुम्हारा समाधान न हो तो मुझसे

१. भाअी गोरधनभाअी,

मणिबहन लिखती हैं कि श्मशान-क्रियाके समय मैं बम्बअी नहीं आया, अिससे तुम्हें दुःख हुआ है। अेक प्रकारसे यह मुझे अच्छा लगता है। तुम्हारा दुःख सूचित करता है कि तुम मुझे कुटुम्बियोंमें मानते हो। अैसा माननेका तुम्हें अधिकार है। परन्तु मुझे कुटुम्बी मानते

लडना तुम्हारा धर्म है, यह न भूलना। बा और मणिके पत्र अुन्हें पहुचा देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बअी – ४

हो तो जहा मेरा काम समझमें न आये वहा मुझे पूछना चाहिये। मेरे न आनेमें विट्ठलभाअीके साथ मेरे मतभेदोका जरा भी स्थान नही था। मेरे न आनेका कारण मेरी आजकी परिस्थिति ही थी, मैं केवल हरिजन-कार्यके लिअे ही जेलसे बाहर रहा हू। यह कार्यक्रम बनाया जा चुका था। सरकारी अकुश जो सहन करने योग्य न हो अुसे सहन करनेको मै तैयार नही होता। दूसरी तरह भी मुझे वहा अपना कोअी अुपयोग नही जान पडा था। मृत्यु-सम्बन्धी अुत्तर-क्रियाके बारेमें मेरे विचार भी मुझे अनुपयोगी बना देते। अिस प्रकार जिस दृष्टिसे देखें अुसी दृष्टिसे यह दिखेगा कि मेरा वहा आना जरूरी नही था। अितना ही नही, बल्कि अनुचित था। कुछ बातें जो हुअी अुन्हें मैं तो होने भी न देता। तुम्हें तो अितना ही बता देना काफी होना चाहिये कि विट्ठलभाअीके साथके मेरे (मत) भेद अिसमें जरा भी कारणभूत नही थे। तुम नही जानते होगे कि अुनकी बीमारीके समाचार आने पर मैंने अुन्हें पत्र लिखा था। और अुसका अुन्होंने लबा और मीठा अुत्तर भी भेजा था। बीमारी बहुत बढी तब तार भी दिया था। अुसका भी जवाब मिला था। और तुम्हे भी मैंने सारी बातें बताते रहनेको लिखा था। तुम्हारे तारको मिल-मालिक-सघ (अहमदाबाद)के मत्री गोरधनभाअीका समझ कर अुन्हे कृतज्ञताका पत्र मैंने लिखा। अुन्होंने समाचार दिया कि तार भेजनेवाले वे नही थे। मुझे आशा है कि अितनी सफाअी तुम्हे शान्ति देगी। न दे तो पूछ लेना।

१३

(य० मं०
नवम्बर, १९३३)

चि० डाह्याभाअी,

तुम्हारा पत्र मिला था। परन्तु कामके कारण समय पर अुत्तर नहीं दे सका। मणिबहनसे अभी तो हर बार मिल आना ही ठीक है। जाओ तब अुससे कहना कि अेक दिन भी अैसा नहीं जाता जब मैं अुसका विचार न करता होअूं। परन्तु चिन्ता तो रत्तीभर नहीं करता क्योंकि अुसकी सहन-शक्ति और दृढ़ता पर मेरा पूरा भरोसा है।

बापूके पास जाओ तब कहना कि मैंने पत्र लिखे बिना अेक भी सप्ताह नहीं छोड़ा।

काका[1]का वसीयतनामा पढ़ लिया। अुसे बम्बअीमें स्वीकार करानेमें कठिनाअी तो होगी ही। परन्तु मेरी राय यह है कि अिसके बारेमें हमें कुछ भी नहीं करना है। जो जाना हो वह भले ही सुभाष बोसके हाथमें जाय। मैं मानता हूं कि वे जो कुछ करेंगे वह सार्वजनिक अुपयोगकी दृष्टिसे ही करेंगे।

बाबाके समाचार देना। मैं ठीक हूं।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी वल्लभभाअी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बअी – ४

---

१. स्व० विट्ठलभाअी।

१४

(कालीकट)
१३-१-'३४

चि० डाह्याभाअी,

तुम्हारा पत्र मिला। तीन पत्र लगभग अेक साथ मिले, यह टेलीपैथीका नमूना कहा जा सकता है।

महादेवकी कडी परीक्षा हो रही है। समय है अुनका स्वास्थ्य कुछ गिर जाय। परन्तु और आच नहीं आयेगी। जीवणजीके नाम पत्र आया था, अुसके जवाबमें मैंने लम्बा संदेशा भेजा है। परन्तु जब तुम्हें[1] लिखनेका अवसर आये तब अिस प्रकार लिखना :

Whilst I need not receive Mahadev's letters, he must not think that I cannot have time to read them. The Gita portion was technical and I felt that there was no immediate need for me to give my opinion. And the fact is that I have so little regard for my own technical meaning of the verses Where the meaning does not fit in with my interpretation as a whole, I should naturally have to examine it, but speaking in general terms one meaning would be to me as good as any other and therefore I should readily accept Mahadev's considered interpretation in preference to my own which after all must have been an adoption of some single author's version He should, therefore, prosecute his researches and his work of translation without waiting

१ यह पत्र डाह्याभाअीको सम्बोधन करके लिखा गया है। परन्तु सरदारके लिअे था, जो अुस समय नासिक जेलमें थे। महादेवभाअी अुस समय वेलगाव जेलमें थे और अुन्हें श्री जीवणजी देसाअीके मारफत लिखा जाता था।

for my opinion. When it is all completed, of course I shall have ample time, God willing, to go through it.

I take it that Mahadev has read B. Shaw's 'Adventures of the Black Girl in her search for God'. I am sending him today 'Adventures of the White Girl in her search for God' by Cff. Maxwell. If he gets it safely, he will acknowledge it in his next letter.[1]

मैं वेलगांव पहुंचूंगा तो मणि और महादेवसे मिलनेका प्रयत्न जरूर करूंगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाभी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बई – ४

---

१. महादेवके पत्र मेरे नाम आने ही चाहिये अैसा आग्रह तो मैं नहीं करता, परन्तु अिससे अुन्हें यह नहीं लगना चाहिये कि अुनके पत्र पढ़नेका मेरे पास समय नहीं है। गीतावाला भाग शास्त्रीय था। और मुझे लगा कि अुस पर मुझे राय देनेकी तत्काल जरूरत नहीं थी। असल बात तो यह है कि श्लोकोंका मैं स्वयं जो अर्थ करूं अुनके बारेमें मुझे बहुत कम आदर है। कुल मिलाकर मेरी अपनी व्याख्याके साथ जहां किसी श्लोकके अर्थका मेल न बैठे वहां, जैसा कि स्वाभाविक है, मैं अुस अर्थकी जांच करूंगा, परन्तु आम तौर पर कहूं तो मेरे लिअे तो अुसका अेक अर्थ दूसरे अर्थके बराबर ही स्वीकार्य होगा। अिसलिअे मैं तो अपने अर्थकी अपेक्षा महादेवके बहुत अध्ययनपूर्ण अर्थको तुरन्त स्वीकार कर लूंगा। कारण, मेरा अर्थ तो मेरा स्वीकार किया हुआ किसी अेक ही भाष्यकारका अर्थ होगा। अिसलिअे महादेवको मेरी रायकी प्रतीक्षा किये बिना अपना संशोधन और अनुवादका काम जारी रखना चाहिये। वह पूरा हो जायगा तब अीश्वरेच्छा होगी तो यह सब पढ़ लेनेका मुझे काफी अवकाश मिलेगा।

१५

(कराची)
११–७–'३४

चि० डाह्याभाअी,

वल्लभभाअीकी तबीयतके[1] ब्यौरेवार समाचार मुझे लौटती डाकसे भेजो।

मणिबहनसे कहना कि मुझे ब्यौरेवार पत्र लिखे। अपने स्वास्थ्यके[2] पूरे समाचार दे। महादेव[3] तो खबर लायेंगे ही।

तुम्हारा काम ठीक चल रहा होगा।

बापूके आशीर्वाद

डाह्याभाअी वल्लभभाअी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बअी – ४

१६

सेवाग्राम-वर्धा, सी पी.
९–३–'४१

चि० डाह्याभाअी,

सायका पत्र यदि सरदारको मिल सकता हो तो खुले तौर पर भेज देना या दे देना।

तुम्हारी गृहस्थी अुत्तम चल रही होगी और बाबा मजा करता होगा।

मैं मान लेता हू कि महादेवने बी० शॉ की 'अीश्वरको शोधमें काली कन्याके साहस' नामक पुस्तक पढी होगी। आज मैं अुन्हें मैक्सवेलकी 'अीश्वरकी शोधमें गोरी कन्याके साहस' पुस्तक भेज रहा हू। यह अुन्हें सही-सलामत मिल जाय तो अपने दूसरे पत्रमें वे अिसकी पहुच लिखें।

१ ता० १४–७–'३४ के दिन पू० बापूको नासिक जेलसे स्वास्थ्यके कारण छोड दिया था।

२ मैं भी ता० ८–७–'३४ को छूटी थी।

३ महादेवभाअी भी ता० ९–७–'३४ को छूटे थे।

यह याद रखना कि तुम्हें और शान्तिकुमारको २० लाख अिकट्ठे करने ही होंगे[1]। मैं आशा रखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहनसे मिलो तो कहना कि तबीयत खूब सुधारे।

बापू

श्री डाह्याभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१७

सेवाग्राम-वर्धा, सी. पी.
७-५-'४१

चि० डाह्याभाअी,

साथके पत्र यथास्थान भेज सको तो भेज देना।

महादेवका पत्र या तो ज्योंका त्यों भेज देना या अुसकी नकल भेज देना।

तुम्हारा गृहस्थी ठीक चल रही होगी। बाबाको दो पंक्तियां लिखनेको प्रेरित करना।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१८

सेवाग्राम,
१५-८-'४४

चि० डाह्याभाअी,

मुझे तुम्हारे घर रहनेके लिअे बहुत आग्रह किया गया, परन्तु मैं पसीजा नहीं। किसीकी नाराजगी होगी, महज अिसलिअे बिड़ला-भवन

१. डाह्याभाअी और शान्तिकुमार वर्धा गये थे तब खादीके अुत्पादनके लिअे बीस लाख रुपये जमा करनेकी बात हुअी थी। अिसीका जिक्र है।

मै छोड नहीं सकता। तुम्हारे यहां रहना तो मुझे पसन्द ही होगा। मैंने तुम्हारा घर कभी देखा ही नहीं। परन्तु मुझे तो जो कर्तव्य लगे असीका पालन करना चाहिये।

मैं शनिवारको वहां पहुंचनेकी आशा रखता हूं। संभव है रविवारको वापस जा सकूं।

सबको आशिष।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१९

सेवाग्राम,
१९-१०-'४४

चि० डाह्याभाअी,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरा खयाल है कि हम तलाशी[1]की शर्त हरगिज नहीं मान सकते। तलाशीकी शर्त पर ही जाना हो तो जानेका लोभ छोड दिया जाय। मेरा खयाल है कि अुन लोगोंने यह शर्त न रखी हो तो हो आना और तलाशी लेना चाहें तो अिनकार कर देना।

मणिबहनको अीश्वर संभालनेवाला है।

यह बडी जल्दीमें लिख रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाअी पटेल,
६८, मरीन ड्राअिव,
बम्बअी

१ बेलगाव जेलमें अधिकारी राजनीतिक कैदियोंसे मिलने आनेवालोंकी पहले तलाशी लेना चाहते थे। अुसीका अुल्लेख है।

डाह्याभाऊ पटेलके पुत्रको

१

वर्धा,
७–१०–'३३

चि० बाबा,

तेरा पत्र मिला। अक्षर मोतीके दाने जैसे लिखना सीखना। बुआके[1] साथ जरूर आना। मुझे अच्छा लगेगा। खेलनेको भी मिलेगा। तेरे जैसे और बालक भी यहां हैं। दादा[2]को पत्र लिखता है क्या?

बापूके आशीर्वाद

२

बोरसद,
३१–५–'३५

चि० बाबा,

आज तो तेरी वर्षगांठ है, ऐसा मणिबहन कहती हैं। अिस दिन तू क्या करेगा? कुछ न कुछ सेवाका काम नहीं करेगा? करना हो तो तू मणिबहनसे पूछना। तू बड़ा तो होगा ही। वैसा ही समझदार भी बनना।

बापूके आशीर्वाद

३

सेगांव-वर्धा,
३–६–'३८

चि० बाबा,

तेरा पत्र आज ही मिला। तेरी कौनसी वर्षगांठ है? यह लिखना कैसे भूल गया? और जो आशीर्वाद मांगता है वह क्या कुछ देता नहीं? तू क्या देता है? नये सालमें क्या नया काम करेगा?

बापूके आशीर्वाद

---

१. मैं।

२. पूज्य बापू।

गांधीजीकी कुछ नयी पुस्तकें

ईसा – मेरी नजरमें

लेखक गांधीजी; सम्पा० आर० के० प्रभु०

ईसाकी धर्मसे तथा बाइबिलसे गांधीजीका पहला परिचय कब हुआ, बाइबिलके कौनसे भागोंका उनके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा, उनकी दृष्टिमें ईसाके जीवन-कार्य और सन्देशका मूल्य, धर्म-परिवर्तनकी प्रवृत्ति पर उनके विचार, पश्चिमके वर्तमान ईसाकी धर्मके बारेमें उनका मत आदि विषयोंका समावेश इस संग्रहमें किया गया है। अन्तमें 'गिरि-प्रवचन' का सार भी दिया गया है।

कीमत ० ३५ डाकखर्च ०.१३

गांवोंकी मददमें

लेखक. गांधीजी; अनु० सोमेश्वर पुरोहित

इस पुस्तिकामें दी गयी गांधीजीकी सूचनाओं पर अगर भारतके गांव और उनके सेवक पूरा ध्यान दें तथा इन सूचनाओंको अमलमें उतारें, तो सारे गांव साफ-सुथरे, स्वस्थ, प्रसन्न और सुखी बन सकते हैं। सबसे बड़ा जोर गांधीजीने इस बात पर दिया है कि अगर गांवके लोग आलस छोड़कर आपसी सहयोगसे परिश्रम करें, तो वे अपने गांवोंको किसी बाहरी मददके बिना भी सुख और आनन्दके धाम बना सकते हैं।

कीमत ० ४० डाकखर्च ० १३

गीताका संदेश

लेखक गांधीजी; सम्पा० आर० के० प्रभु

इस पुस्तिकामें गीता और अहिंसा, गीता और यज्ञकी भावना, हिन्दू धर्ममें गीताका स्थान, गीताके कृष्ण, हिन्दू विद्यार्थी और गीताका शिक्षण तथा गीताकी केन्द्रीय शिक्षा जैसे विषयोंकी संक्षेपमें स्पष्ट चर्चा की गयी है। इसमें गीताके अमर सन्देशका सार आ जाता है।

कीमत ० ३० डाकखर्च ० १३

मंगल-प्रभात

लेखक : गांधीजी; अनु० अमृतलाल नाणावटी

सन् १९३० में गांधीजी यरवडा जेलमें थे। वहांसे वे प्रत्येक मंगलवारको आश्रमके व्रतों पर विवेचन लिखकर साबरमती आश्रमके सदस्योंको भेजा करते थे। अिसमें सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह आदि आश्रम-व्रतोंका गांधीजी द्वारा किया हुआ सरल और सुबोध विवेचन पाठकोंको मिलेगा। अिस हिन्दी अनुवादमें सिर्फ उर्दू जाननेवालोंकी सुविधाके लिअे आसान उर्दू शब्द भी दिये गये हैं।

कीमत ०.३७ डाकखर्च ०.१३

मेरा समाजवाद

लेखक : गांधीजी; संग्रा० आर० के० प्रभु

गांधीजी समाजवादका अर्थ सर्वोदय करते थे। अुनका कहना था कि भारतका समाजवाद 'सर्व भूमि गोपालकी' और 'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः' अिन मंत्रोंमें समा जाता है। प्रेम, शांति और समताका ध्येय रखनेवाले समाजवादकी स्थापना करनेमें अहिंसक साधन ही सफल हो सकते हैं। अिसी विचारकी चर्चा अिस पुस्तिकामें की गअी है।

कीमत ०.४० डाकखर्च ०.१३

मेरे सपनोंका भारत

लेखक : गांधीजी; संग्रा० आर० के० प्रभु

अिस संग्रहमें भारतके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि सारे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर गांधीजीके विचार पेश किये गये हैं। अिनसे पता चलता है कि राष्ट्रपिता स्वतंत्र भारतसे क्या क्या आशायें रखते थे और अुसका कैसा निर्माण करना चाहते थे। राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद अपनी प्रस्तावनामें लिखते हैं: "श्री आर० के० प्रभुने गांधीजीके अत्यन्त प्रभावशाली और अर्थपूर्ण अुद्धरणोंका संग्रह अिस पुस्तकमें किया है। मेरा विश्वास है कि यह पुस्तक गांधीजीकी शिक्षाके बुनियादी अुसूलोंको प्रस्तुत करनेवाले साहित्यमें अेक कीमती वृद्धि करेगी।"

कीमत २.५० डाकखर्च १.००

विश्वशांतिका अहिंसक मार्ग

लेखक गांधीजी; सपा० आर० के० प्रभु

आज विश्वमें शांतिकी स्थापना करनेके लिअे दुनियाके समस्त राष्ट्र और अुनके नेता प्रयत्न कर रहे हैं। अिस ध्येयकी सिद्धिका गांधीजीने अेकमात्र सच्चा और अहिंसक मार्ग यह बताया है: दुनियाके सारे राष्ट्र अेक-दूसरेका शोषण करनेवाली साम्राज्यवादी नीतिको छोड़ें, परस्पर प्रेम और सहिष्णुताकी भावना बढ़ायें और युद्धके संहारक शस्त्रोंका त्याग करें, तो ही स्थायी शांति कायम हो सकती है। यही अिस पुस्तकका केन्द्रीय विचार है।

कीमत ०.४० डाकखर्च ०.१३

शरीर-श्रम

लेखक: गांधीजी; सपा० रवीन्द्र केळेकर

हमारे समाजमें शरीरकी मेहनतको और मेहनत करके रोटी कमानेवालोंको हलकी नजरसे देखा जाता है। गांधीजीने श्रमकी प्रतिष्ठाको बढ़ानेका प्रयत्न किया। यहां अिस विषयमें गांधीजीके जो विचार पेश किये गये हैं अुनसे शरीर-श्रमकी व्याख्या और अुसके महत्त्वका, अुसकी आवश्यकताका और समाजको अुससे होनेवाले लाभोंका पता चलता है।

कीमत ०.२५ डाकखर्च ०.१३

सन्तति-नियमन

सही मार्ग और गलत मार्ग

लेखक: गांधीजी; सपा० आर० के० प्रभु

अिस पुस्तिकामें सन्तति-नियमनके सही अुपायों और गलत अुपायोंका विचार किया गया है। गांधीजी कृत्रिम साधनोंकी मददसे सन्तति-नियमन करनेके सख्त विरोधी थे। अिसका अुत्तम मार्ग वे आत्म-संयमको ही मानते थे, जो मानव-जातिको अूंचा अुठानेवाला और अुसका कल्याण करनेवाला है।

कीमत ०.४५ डाकखर्च ०.१३

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद–१४

BHUPAL COL LIBRARY